श्री

# पंचमेरु-नन्दीश्वर पूजन विधान

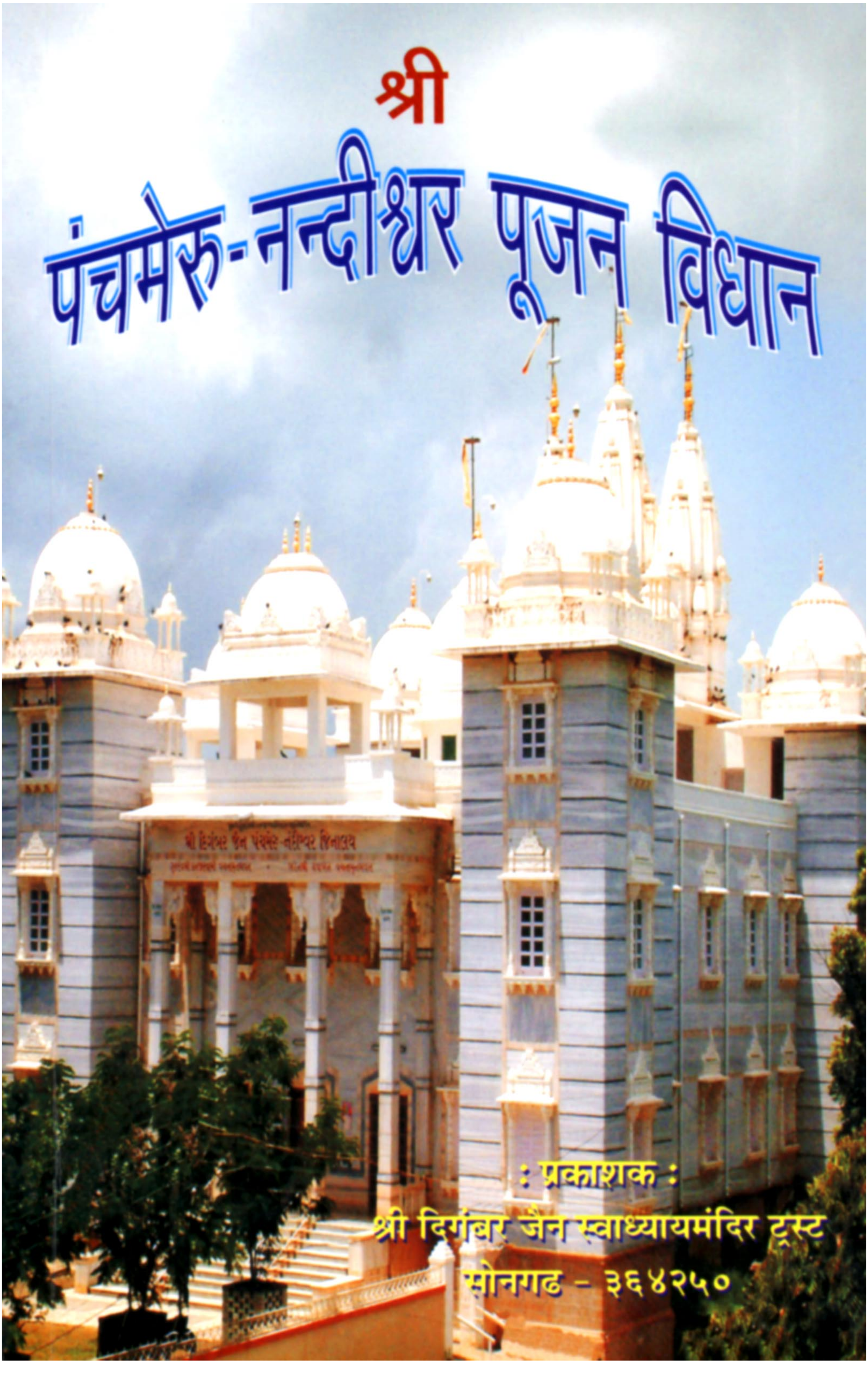

: प्रकाशक :

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ - ३६४२५०

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प—३०

नमः सिद्धेभ्यः

कविवर पं० श्री टेकचन्दजी कृत—

# पंचमेरु-नन्दीश्वर पूजन विधान

# एवं

# त्रैलोक्य, कुण्डलादि जिनालय, वर्द्धमान निर्वाण तथा २४ जिन निर्वाण पूजा

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ़—३६४२५०

अेकसे छह आवृत्ति कुल प्रत : ८७००

सप्तमावृत्ति ३००० वीर सं. २५३४ वि. सं. २०६४

यह शास्त्रका लागत मूल्य रु. 20=00 है। श्री कुंदकुंद-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट हस्ते स्व. शांतिलाल रतिलाल शाहकी ओरसे ५०% आर्थिक सहयोग प्राप्त होनेसे यह शास्त्रका विक्रय-मूल्य रु. 10=00 रखा गया है।

मूल्य : रू. 10=00

: मुद्रक :

कहान मुद्रणालय

जैन विद्यार्थी गृह कम्पाउन्ड, सोनगढ-३६४२५०

✆ : (02846) 244081

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

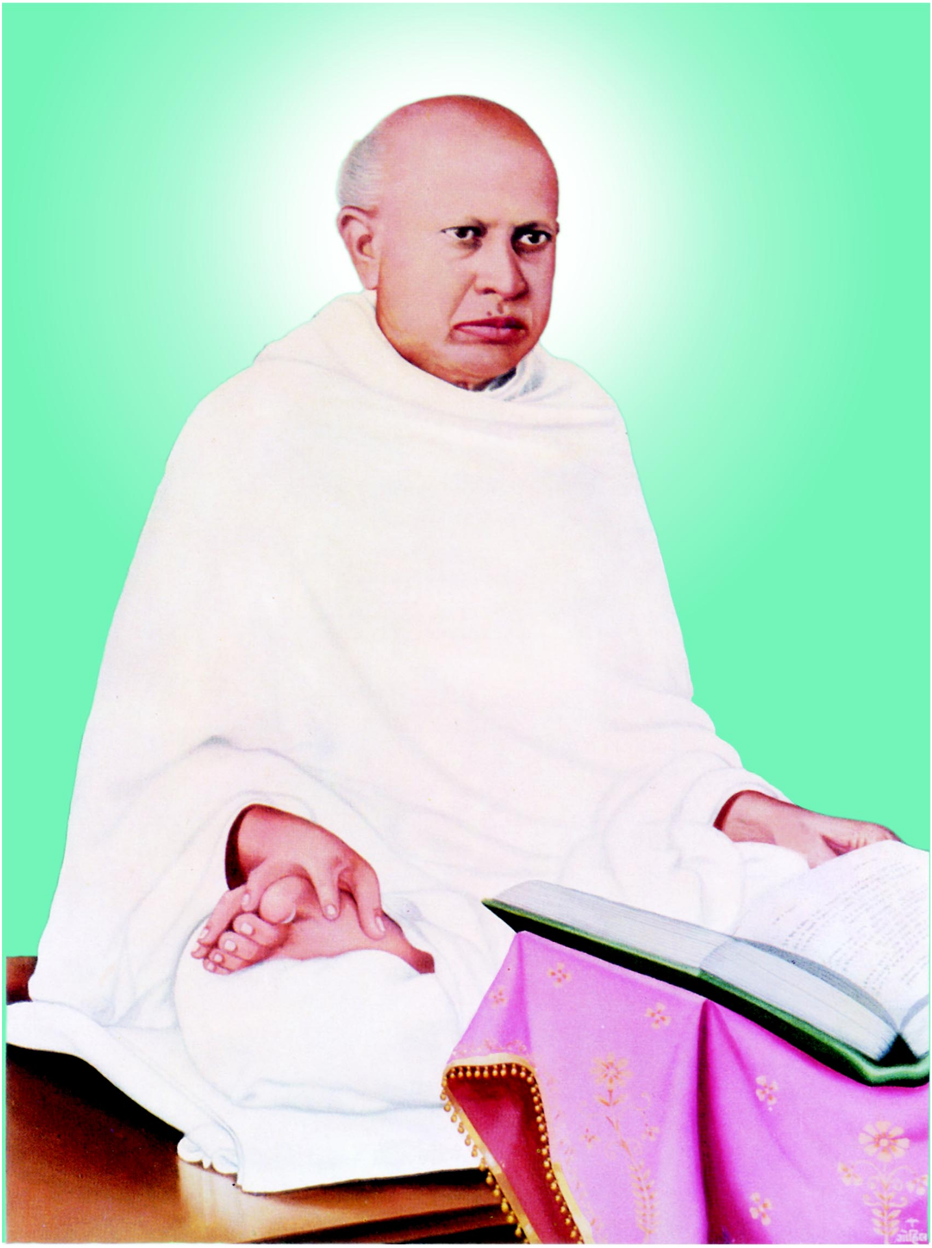

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

# ❀ प्रकाशकीय निवेदन ❀

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवन्तों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैनधर्म ही सनातन सत्य है' ऐसा युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस काल सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वके रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान देकर भी मुमुक्षु समाजके उपर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी साभिरुचि (सोल्लास) प्रवृत्ति नियमित चल रही है। स्वयं भी नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनीत प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर जिनमंदिरों एवं वीतराग जिनबिम्बोंसे भर गया।

परम पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीके अनन्य भक्त प्रशममूर्ति धन्यावतार पूज्य बहिनश्रीके स्वानुभूतियुक्त सातिशय जातिस्मरणरूप ज्ञानवैभवके फलस्वरूप सुवर्णपुरीके भक्तोंको सुवर्णपुरीमें पंचमेरु नंदीश्वर जिनालयके प्रत्यक्ष दर्शन-पूजनका लाभ मिला। प्रतिवर्ष तीनबार मनाए जानेवाले अष्टाह्निका पर्वमें यह पंचमेरु-नंदीश्वर विधान पूजन सुवर्णपुरीमें अवश्य होता आ रहा है। अतः यह पुस्तककी सातवीं आवृत्ति प्रकाशित की जा रही है।

कविवर टेकचंदजी रचित यह रचना दिगम्बर समाजमें वर्षोंसे प्रचलित और प्रिय है। अतः पूज्य गुरुदेवश्री और पूज्य बहिनश्रीकी छत्रछायामें हरेक अष्टाह्निका पर्वमें यह विधान पूजा करनेकी परंपरा चली आ रही है। आगे भी यह परंपरा बनी रहे इस हेतुसे यह नूतन संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

पूज्य बहिनश्रीका ७६वाँ
सम्यक्त्वजयंती महोत्सव
वि. सं. २०६४

साहित्यप्रकाशन-समिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ

# * विषयानुक्रमणिका *


अथ व्रतमाहात्म्य वर्णन ---------- १
अथ समुच्चय पूजा ---------- ३
प्रथम सुदर्शनमेरु की पूजा ---------- ५
अथ द्वितीय विजयमेरु पूजा ---------- १०
अथ तृतीय अचलमेरु पूजा ---------- १७
अथ चतुर्थ मन्दिरमेरु सम्बन्धि जिनालय पूजा ---------- २३
अथ पंचम विन्द्युमालीमेरु पूजा ---------- ३१
समुच्चय जयमाला ---------- ३६
अथ मानुषोत्तर पर्वत के चार जिनालयों की पूजा ---------- ३९
अथ नन्दीश्वर दीप पूजन विधान ---------- ४४
प्रथम पूर्वदिशा पूजा ---------- ४७
अथ दक्षिणदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा ---------- ५४
अथ पश्चिम दिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा ---------- ६१
अथ नन्दीश्वरद्वीप की उत्तरदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा ---------- ६७
अथ समुच्चय आरती ---------- ७३
श्री त्रैलोक्य जिनालय पूजा ---------- ७७
अथ कुण्डलद्वीप के बीच कुण्डलगिरि के चारों दिश
चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा ---------- ९४
अथ रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरिके चारों दिशा चार
सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा ---------- ९९
श्री वर्द्धमान निर्वाण पूजा ---------- १०२
पीठकादि पूजा ---------- १०७
वर्तमान चतुर्विंशति जिन-निर्वाणभूमि पूजा ---------- ११३
प्रत्येक निर्वाण पूजा ---------- १२१
अतिशयक्षेत्र पूजा ---------- १३१
पाँच प्रकार के केवलियों की अर्चना ---------- १३४
निर्वाणकांड भाषा ---------- १४२


❁

नमः सिद्धेभ्यः।

कविवर टेकचन्दजी कृत

# पञ्चमेरु और नन्दीश्वर पूजन विधान

## अथ व्रतमाहात्म्य वर्णन

(सर्वदीर्घ वेसरी छन्द)

वानी पूजों देवा केरी। तातैं टूटे मोहा जेरी॥
साधा ध्याऊँ साँचा भाऊं। या भौ माहीं नाहीं आऊँ॥१॥

(सर्वदीर्घ जोगीरास की चाल)

देवा सेवो सो या भौ में आवा जावो हारै।
आपा तार्यो औरै तारै ज्यों नावा औतारै।
जाका ध्याना जोगी आना पापा हाना काजै।
ऐसो नाथो द्यो मो साथो भौ भौ साता साजै॥२॥

साधा साधो जो या भौ में जाकै रागा नाहीं।
आपा साधै प्रानी नावा ध्याना ध्येना माहीं।
तापा आपै जापा जापै मोकों राखै सोही।
मेरो सीसा याके पावें नाखो दीना होही॥३॥

ऐसे देवा याकी वानी साधा तीनों सोही।
मो को ज्ञानो ऐसो दीजौ मो पै राजी होही।
तातैं नांदी दीपा पांचों मेरा पूजा सारी।
पूरी हो जावै सो कीजौ ऐसी वाँछा म्हारी॥४॥

(वेसरी छन्द)

या पूजा श्रीपाले कीनी। काया रोगा की खय लीनी।
या पूजा सो लोका देवैं। जो जीवा नीका है सेवैं॥५॥

(सर्वलघु दोहा)

वरत यह सुखकरन लख समचित कर सिव सहल।
पहल करम सब नस भजय कर यह वरत जु टहल॥६॥

(चौपाई)

यो व्रत मयणासुन्दर करौ। सुभट सातसै को दुख हरौ।
ताकर जगमें महिमा पाय। इम लख भव पूजौ मनलाय॥७॥

(अडिल्ल छन्द)

बरस एक में बार तीन यह व्रत करै।
कातिक फागुन सुदी अषाढ़ विषैं धरै।
करै वर्स लग आठ तथा वृष तीन जी।
सक्त बड़ी का धार करै परवीन जी॥८॥

(सोरठा)

शक्त बड़ी धर सोय, करै बहुत दिन भी सही।
उद्यापन फिर होय, नाहीं व्रत दूनों करै॥९॥

(गीता छन्द)

पीछै जु शक्ति प्रमाण अपनी द्रव्य तैं पूजा करै।
उपकरण सुन्दर छत्र चामर लायकें मन्दिर धरै॥
पुस्तक लिखावै दान करुणा देय दीन बुलाय जी।
इस रीति धर्म उद्योत ठानै जीव सो शिव पाय जी॥१०॥

(पद्धरी छन्द)

या विध अनेक महिमा निधान। यह वरत कहो धुनि में प्रमाण॥
कवि कबलौं गुण भाषै अपार। बहु कहिये कहाँ जगमांहि सार॥

॥ इति व्रतमहिमा समाप्त॥

# अथ समुच्चय पूजा

स्थापना (चाल जोगीरासे की)

**पांचौ मेर महान कनक के तिन पै जिन के थानौं।**
**गिनत असी तिन मांहि बिम्ब हैं रतनमई पुन खानों।**
**देव खगा तौ जाय जजैं वहाँ हम यहाँ भावना भावें।**
**तातें मेरन के जिनबिम्ब सु थापन थाप जजावें॥**

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(चाल जोगीरासे की)

**निर्मल मन सोही जल उज्वल भाजन भाव करायो।**
**आर्ज्य भाव रस सोही जीवा ता बिना पय धर लायो।**
**बीसी चार सबै जिन मन्दिर पांच मेर के जानौं।**
**सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानों॥१॥**

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

**शीतल भाव कियौ शुभ चन्दन भक्त गंध को धारी।**
**मंद मोह झारी करता मैं भर लायौ सुखकारी। बीसी० ॥२॥**

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं०

**भाव अखण्डित उज्वल सोही अक्षत सुभग बनाए।**
**नाना भक्त उपाय उक्त तैं पुन्यबंध को आये। बीसी० ॥३॥**

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

भाव प्रफुल्लित फूल बनाये बहुविध भक्ति सुरंगा।
विनयवान तामें गंध नीकी पुष्पन लायौ चंगा।
बीसी चार सबै जिन मन्दिर पांच मेर के जानौं।
सो मैं मन वच काय जजत हों करन पापको हानों।।४।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं०

परणत परम मनोज्ञ तने मैं शुभ नैवेद्य बनायौ।
नाना रस नय द्वार घनी यह भक्त भाव कर आयौ। बीसी० ।।५।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

सम्यक्ज्ञान प्रकाश सकल तत्त्वन को दीप बनाई।
हरष सो पातर कीनो ता धर नीकी आरति छाई। बीसी० ।।६।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०

अष्ट करम शुभ चंदन पीस्यौ ताकी धूप बनाई।
धर्म ध्यान बहु तेज अगनि में जारी प्रीति बढ़ाई। बीसी० ।।७।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं०

पाप रहित परिणाम किए फल समता थाल भराये।
आनंद होत सुलेय हाथ में बहुविध जिन गुन गाये। बीसी० ।।८।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

ऐसे आठों द्रव्य मनोहर ताको अरघ बनाई।
निर्मल भाव बनाय रकेबी ता धर शीश नवाई। बीसी० ।।९।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं० निर्व०

(चौपाई)

पांचों मेर असी जिन धाम। है विन कीये ध्रुव तिस ठाम।
तिन मध बिम्ब देव जिनराय। सो मैं पूजों अर्घ चढ़ाय।।१०।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्ध्यशीतिजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक मेरु पूजा

# प्रथम सुदर्शनमेरु की पूजा

(अडिल्ल छन्द)

मेर सुदरशन जान बड़े विस्तार जी।
मानूं स्वर्ग थंभन कूं थंभा सार जी।।
जापै षोडश धाम जिनेसुर के सही।
सो हम थापन थाप जजैं इसही मही।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

સહજાનંદ.

## अथाष्टक

(चौपाई)

निरमल नीर गंग को लाय। झारी मणिमय माहिं धराय।
मेरु सुदरशन जिनके धाम। षोडश पूजों तीरथ ठाम।।१।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

बावन चंदन नीर घसाय। लायौ प्रभु पातर में जाय। मेरु० ।।२।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं०

अक्षत मुक्ताफल से लाय। उज्ज्वल खंड बिना सुखदाय। मेरु० ।।३।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्०

फूल कल्पद्रुम के सुखरूप। लायो माला गूँथ अनूप। मेरु० ।।४।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

नाना रस नैवेद बनाय। मोदक आदि भले सुखदाय।
मेरु सुदरशन जिनके धाम। षोडश पूजों तीरथ ठाम॥५॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं०

दीपक रतनमई तम हार। लायौ धर पातर में सार। मेरु० ॥६॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं०

सार धूप दशगंध बनाय। खेऊँ जिन चरनन सुखदाय। मेरु० ॥७॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं०

श्रीफल खारक अनि फल और। लायो भक्त हिये धर जोर। मेरु० ॥८॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं०

जल चंदन अक्षत पुह लेय। चरु दीपक फल धूप सु खेय। मेरु० ॥९॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं०

## प्रत्येक अर्घ

(पद्धरी छन्द)

वन भद्रसाल जिन थान चार। बिन कीने शाश्वत पुन्यकार॥
ते पूजों वसु द्रव्य अर्घ लाय। सम्बन्ध सुदर्शन मेरु पाय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुभद्रशालसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नंदनवन चव जिन थान जान। सो तीर्थ पापहारी सु मान॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुनंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

चव जिन थल सोहें सौमनस थान। सब रतनखंड उपमा निधान॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसौमनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

जिन थल चव पांडुक वन मँझार। सुर खग पूजें तहाँ भक्ति धार॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

સહજ ચિદાનંદ.

चव गजदंतो चव जिन सुगेह। महा सुन्दर देखें होय नेह।
ते पूजों वसु द्रव अर्घ लाय। सम्बन्ध सुदर्शन मेरु पाय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुश्चतुर्गजदंतसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

जम्बू वृक्षै जिन थान सोय। रचना मणिमय तहाँ बिम्ब जोय॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुजम्बूवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

जिन थान शालमलि वृक्ष ठांहि। मुख महिमा कहते पार नाहिं॥ ते०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

सुदरशनमेरु दक्षिण दिसाय। जिन थान कुलाचल पै जो पाय।
तिनमें जिनबिम्ब मनोज्ञ सोय। जिनके पद पूजों दीन होय॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिक्कुलाचलस्थजिनालयायअर्घं निर्वपामीति० ॥८॥

उत्तरदिश याही मेर जान। जिनभवन कुलाचल पै सुथान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिउत्तरदिशात्रयकुलाचलस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥९॥

सुदरशनमेरु पूरब दिशाय। जिन थान वक्षारन सीस पाय॥ तीन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपूर्वदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरस्थजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥१०॥

पच्छिम दिश येही मेरु सार। वक्षारन पै जिन भवन धार॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुपच्छिमदिशासम्बन्ध्यष्टवक्षारगिरिजिनालयेभ्यो अर्घं निर्व० ॥११॥

इस मेर सुदरशन पूर्व जाय। विजयारध पै जिन भवन पाय॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनसम्बन्धिपूर्वदिशायाषोडशविजयार्धपर्वतस्थषोडशजिनालयेभ्यो अर्घं० ।१२।

पच्छिम सुदरशन मेरु ठांहि। वैताडन पै जिनभवन पाहि॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशिविजयार्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यो अर्घं० ॥१३॥

इस मेर सुदरशन दछन जानि। रूपाचल पै इक जिन सुथानि॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुदक्षिणदिशिरूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥१४॥

उत्तर दिश इसही मेर जान। विजयारध पै जिनभवन मान॥ तिन०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरोत्तरदिशि रूपाचलस्थैकजिनालयाय अर्घं निर्व० ॥१५॥

(अडिल्ल छन्द)

तीस चार वैताढ सोल वक्षार जी।
दोय विरछ षट कुलाचला लख सार जी।
षोडश वन के थान चार गजदन्त हैं।
ह्यॉं इक इक जिनभवन जजा ते सन्त हैं।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्ध्यष्टसप्ततिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

## अथ जयमाला

(दोहा)

मेरु सुभग थानक भलौ, तीरथ पातक नास।
जजौं थान इस संग के, मन वच तन है दास॥१॥

(चाल–ते गुरु की)

मेरु सुदरशन सोहनौ, तीरथ पद सुखदाय। टेक।

ऊँचो जोजन लाख है, सब कनक स्वरूप।
नीचै को मणि तेज है, बहु घेर अनूप। मेरु० ॥२॥

भद्रसाल वन मेरु की, जड़ भौम मँझार।
ता ऊपर फिर जाइये, वन नन्दन सार। मेरु० ॥३॥

ता ऊपर वन सोम हैं, तीजौ वन सोय।
ऊपर पांडुक वन कहो, चौथो अवलोय। मेरु० ॥४॥

इक वन वन, चव जानियो, श्री जिनवर ठाम।
कनक रतन जड़ियो सही, सब करौ प्रणाम। मेरु० ॥५॥

ठाम ठाम सर वावड़ी, शुभ महल अनूप।
देव तहाँ क्रीडा करैं, वापक गुन रूप। मेरु० ॥६॥

कै चारन मुनि जाय हैं, जिन वंदन काज।
ध्यान धरें शुभ थान में, पावैं शिवराज। मेरु० ॥७॥

पांडुक वन में जानिये, मध चूलक ठाम।
वैडूरक मणिमय सही, रंग हरत सुधाम। मेरु० ॥८॥

जोजन तुंग चालीस है, तिस ऊपर जोय।
केस अंतरै स्वर्ग है, सौधर्म जुग सोय। मेरु० ॥९॥

इत्यादिक महिमा घनी, कबलों वरनाय।
सहस जीभतैं कीजिये, तौहु पार न पाय। मेरु० ॥१०॥

सब गिरि में परधान है, यह मेर महान।
याके अन परवार हैं, तहाँ जिनके थान। मेरु० ॥११॥

तीस चार वैताढ हैं, षोडस वक्षार।
और कुलाचल षट सही, गजदन्त वृक्ष सार। मेरु० ॥१२॥

एक एक जिन थान है, मैं पूजों सार।
मेरु सुदरशन है सही, कंचन वरन अपार। मेरु० ॥१३॥

(दोहा)

मेरु माहिं मन राखिये, तहाँ अकीर्तम थान।
जिनके मुनि चारण तहाँ, तातैं नमि पुनि आनि॥१४॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति सुदर्शनमेरु पूजा सम्पूर्ण)

# अथ द्वितीय विजयमेरु पूजा

(गीता छन्द)

खंड धातकी पूर्व दिश कौ विजयमेरु सुथान है।
तिस ऊपरे जिन धाम षोडश अकीर्तम पुन धाम है।
इन आदि और कुलाचलादिक मेरु सम्बन्धी सही।
जिन थान कूं यहाँ थापि पूजूं भक्ति तें पुन की मही।।१।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(अडिल्ल छन्द)

नीर निरमलको गंग धार को लाइये।
सुन्दर झारी घालि हरष बहु पाइये।
जनम मरन दुख हरन महा थुति गाय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।१।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दन बावन अगर गंध ले सार जी।
निरमल नीर घसाय आप कर धार जी।
भौ तपरोग मिटावन कौ गुन गाय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।२।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

अक्षत उज्वल खंड बिना ही लाइयौ।
प्राशुक जलतें धोय शुद्ध करवाइयौ।

थान अखय का लोभ धार मैं आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥३॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

फूल कनक चांदी के प्राशुक लेय जी।
तिनको हार बनाय शोभजुत जेय जी।
कामदहन के काज भक्त धर आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥४॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस नैवेद्य आदि मोदक सही।
कीनें शुभ आचार सहित अब इस मही।
भूखरोग खय काज आज हम आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥५॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणिमय दीपक लेय जोत परकाश जी।
कंचन पातर धार होय प्रभु दास जी।
मेटन मिथ्या ध्वांत पूजने आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥६॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

धूप मनोज्ञ बनाय गंध दश डार जी।
खेवन आयौ अगिन माहि थुति धार जी।
कर्म दाह फल चाह और नहीं आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥७॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सार जी।
खारक आदि अनेक और फल धार जी।

कारण शिवफल लोभ आप पै आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥८॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीर गंध तंदुल पुह चरु ले दीप जी।
धूप फला विध आठ अरघ शुभ टीप जी।
नाना सुख के काज, पाप खयदाय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥९॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०

## प्रत्येक अर्घ

(जिनजंपि की चाल)

विजयमेरु की भौम में बन भद्रसाल सुखदाई जी।
चार जिनालय मणिमई ते पूजों अर्घ बनाई जी॥
मन वच भक्ति लगाय कैं॥१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

नन्दन वन या ऊपरै तिस महिमा अधिक विचारो जी।
विजयमेरु शुभ स्थान है यह तीरथ निरमल जानो जी। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरौ:नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

इस ऊपर वन सोम है तहाँ देव विद्याधर जावें जी।
चारि जिनालय हैं तहाँ ते पूजों मैं अघ ढावें जी।
विजयमेरु तीरथ सही तहाँ जिन थल मुनि शिव पावें जी। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरौ:सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

पांडुक वन सब ऊपरे जहाँ रतनमई जिन गेहा जी।
चार जिनालय जिन कहे ते पूजों अरघ समेहा जी।

विजयमेरु तीरथ सही तहाँ जिन थल मुनि शिव पावें जी।
मन वच भक्ति लगाय कैं॥४॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुपांडुकवनसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

विजयमेरु दक्षिण दिशा जम्बू वृक्ष बहु विस्तारो जी।
तापै इक जिन गेह है सो पूजों अरघ संबारौं जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग नित सारो जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशस्यजम्बूवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

उत्तर दिश इस मेर की सालमली वृक्ष जानौ जी।
तापै जिन मन्दिर सही ते पूजों अरघ चढ़ानौं जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोत्तरदिशाया: शाल्मलिवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्व०॥६॥

विजयमेरु गजदन्त पै जिन थानक हैं पुन्य दाई जी।
सो चारों थल वंदिये ले अरघ मगा हरषाई जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुश्चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

विजयमेरु दक्षिण दिसा गिरि तीन कुलाचल सारो जी।
तिन पै जिन थानक सही ते पूजों हरष अपारो जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशाया: त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्व०॥८॥

उत्तर दिस इस मेरु की गिर कहे कुलाचल तीनों जी।
तिन पै जिनमन्दिर सही ते पूजों भक्ति नवीनों जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्ध्युत्तरदिशाया:त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि०॥९॥

दक्षिण दिस वेताढ है गिर विजयमेरु तें जानों जी।
तिन पै जिन थल विन किये ते पूजौं हरष बढ़ानो जी।

विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।
मन वच भक्ति लगाय कैं॥१०॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिश्येकविजयार्धोपरि जिनचैत्यालयार्घं निर्व० ॥१०॥

विजय महा गिरि मेरु की विजयारध पश्चम सोला जी।
तिन पै इक इक जिन भवन ते पूजैं अघ होय खोला जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिन-चैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

विजयमेरु की उत्तरै विजयारध एक सुथानौं जी।
तापै इक जिन थान है सो पूजौं कर सन्मानौं जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनचैत्यालयायाऽर्घं निर्व० ॥१२॥

पूरब दिस इस मेर की विजयारध महा गिरिंदा जी।
तिनपै षोडश जिन भवन पूजैं मिटहै अघ फंदा जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषुषोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥१३॥

पूरब दिस इस मेर की वसु परवत सार वक्ष्यारो जी।
तिनपै जिन थल आठ हैं ते पूजौं मन वच धारो जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥ मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ॥१४॥

पच्छम विजय सुमेर की आठ वक्ष्यार सुजानौ जी।
आठ तिनौं पै जिन भवन ते पूजौं अरघ सुआनौ जी॥
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी॥

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिष्यष्टवक्ष्यारगिरिष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

(अडिल्ल छन्द)

विजयमेरु संग इस प्रकार वन चार जी।
गजदन्ता वृक्ष दोय कुलाचल सार जी।।
विजयारध चौंतीस वक्ष्यार सुजानिए।
इनपै जे जिन थान जजौं अर्घ आनिए।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

## अथ जयमाला

(दोहा)

विजयमेरु दूजो सही, जान अकिरतम थान।
या सम्बन्ध जे जिन भवन, पूजैं सुर खग आन।।१।।

(मुणयणाणंद की चाल)

मेरु विजया विषैं थान जिनके सही।
बिम्ब तिनमें जिसे देव जिन छवि कही।।
दृष्टि नासा दिये ध्यान पदमासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।२।।

शान्ति मुद्रा बिना राग सुखदाय जी।
मानु अब दिव्यधुनि खिरैगी आय जी।।
इन्द्र से दीन होय करैं अरदासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।३।।

ध्यान में मुनि जिनबिम्ब जे ध्याय हैं।
आपनौ रूप ऐसो कियौ चाय हैं।।
जोय जिन ध्यान नहीं होय जग आसना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।४।।

भक्त मन मोहनी देह जिनराय की।
देखते बढ़ै उर राग सुखदाय जी।।

मोक्ष तिय नित चहै रूप तिन भासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।५।।
देखते मूर्ति जिनराय सुध आय है।
सोभ अति सोहनी काय जिनराय है।।
लखै शुभ ध्यान दूर ध्यान की वासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।६।।
आदि इनको घनी ऊपमा दाय जी।
अकिरतम देव जिनबिम्ब में पाय जी।।
तीर्थ मंगल करा और समता सना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।७।।
बिम्ब सब रतनमय तजे बहु धार जी।
जोति तिनकी कनै दबै शशि सार जी।।
कनकमय गेह जिन धरें परकासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।८।।
बड़े बिस्तार जिन थान को जानिए।
कोटि त्रय वेष्टि रचना घनी मानिये।।
बाग बन महल वापी सुदुख नाशना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।६।।
दूसरे मेरु विजय तनी विधि कही।
वरनतै सोभ पुन्य रास भव्यनि लही।।
तीर्थ सिद्धक्षेत्र मुनि करै कर्म नाशना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।१०।।
विजय यह मेरु बहु घेर में जानिए।
देव खग गमन तहँ सदा तिस थानिए।।
जजैं ते जाय हम करैं यहँ उपासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।११।।

(दोहा)

**विजय मेरु गुनमाल को, जपै जाय भव कोय।**
**ताको तीरथ लाभ है, दिये भाव फल होय॥१२॥**

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

*इति विजयमेरु पूजा समाप्त*

# अथ तृतीय अचलमेरु पूजा

(वेसरी छन्द)

**मेर अचल सनबन्धि जिनाला। सो पूजै सुर खग गुनमाला।**
**हम तो सकतहीन हैं भाई। तातैं यहां थापि भावन भाई॥१॥**

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(अडिल्ल छन्द)

**नीर निरमलो कनक पात्र धर लाय जी।**
**उज्ज्वल सार सुगंध मनोहर आय जी।**
**अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।**
**पूजौं भक्ति बढ़ाय फलै भव हानि जी॥१॥**

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दन चारु सुगंध अगर मिलवाय जी।
प्राशुक पानी लाय घस्यो थुति गाय जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
पूजौं ता फल भव आताप मिटाव जी॥२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि०

अक्षत अखंड अनूप गंध धारी सही।
धवल रंग मुक्ताफल से पुन की मही॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
पूजों ता फल अक्षय पद कों पाय जी॥३॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

फूल कल्पवृक्ष सार गंध दायक सही।
कंचन चांदी फूल आपने कर मही॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं पद मदन तनों खय जानि जी॥४॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस सुभ लाय कियौ नैवेद जी।
मोदक आदि बनाय लिए निरवेद जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल भूख तनी होय हानि जी॥५॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक मणिमय सार जोति तम नासना।
कनक पात्र धर लाय करौं थुति भासना॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल होय मिथ्यातम नास जी॥६॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर चन्दन आदि जो दशधा धूप जी।
अगनि मध्य खेऊँ निज हौन अरूप जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल कर्म दहै शिव जाय जी॥७॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सार जी।
आदि इने अनि आनि फला सुखकार जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल मोक्ष हौनकौ जानि जी॥८॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

जल चंदन क्षत पुष्प चरू दीपक सही।
धूप और फल आठ लेय अरघे टही॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल अमल हौन हित आनि जी॥६॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

अचलमेरु की भौम मँझार। भद्रसाल जानौं बनसार।
ताके मध चव जिनवर थान। ते हों पूजों शक्त प्रमान॥१॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः भद्रसालवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दन नाम महा बन सोय। अचलमेरु के ऊपर जोय।
ताके मांहिं चार जिनथान। तेऊ पूजों शक्त प्रमान॥२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के ऊपर सोय। सोमनस नाम वन अदभुत जोय।
तामैं चार जिनालय जान। ते हों पूजों शक्त प्रमान॥३॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुक वन सब ऊपर जोय। अचल मेरु सनबंधी सोय।
ता विच चार जिनालय जान। ते हू पूजों शक्त प्रमान॥४॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु की दक्खिन दिशा। जम्बू वृच्छ ऊपरे लसा।
एक जिनेसुर जी का थान। सो ही पूजों शक्त प्रमान॥५॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिशस्थजम्बूवृक्षस्यैकजिनचैत्यालयाय अर्घं निर्व०

अचलमेरु की उत्तर सोय। सालमली वृछ मणमय जोय।
तापै एक जिनसुर थान। सोहू पूजों शक्त प्रमान॥६॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिशायाः शाल्मलिवृक्षोपर्य्येकजिनचैत्यालयायार्घं नि०

अचलमेरु के चार बखान। गजदन्ता परवत हित दान।
तिन पै चार जिनालय जान। ते हू पूजों शक्त प्रमान॥७॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोश्चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु की दक्षिन सोय। तीन कुलाचल गिरि सुभ जोय।
तिन पै तीन जिनालय जान। ते हू पूजौं शक्त प्रमान॥८॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

अचलमेरु उत्तर दिस जाय। तीन कुलाचल परवत पाय।
तिन पै तीन जिनालय जान। ते हू पूजों शक्त प्रमान॥९॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के पूरब जाय। आठ वक्ष्यार महागिर पाय।
तिन इक इक पैं हैं जिन थान। ते हौं पूजों शक्त प्रमान॥१०॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पूर्वदिश्यष्टवक्ष्यारगिरिष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्छम अचल मेरु को जोय। आठ वक्ष्यार बड़े गिर सोय।
तिन पै आठों ही जिन थान। ते हू पूजों शक्त प्रमान॥११॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पश्चिमदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु की पूरब जोय। हैं विजयारध षोडश सोय।
तिन पै षोडश ही जिनथान। सो हों पूजों शक्त प्रमान॥१२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

अचल मेरु की दक्षिण भौम। विजयारध गिर है एक सोम।
ता ऊपर इक जिन को थान। सो हू पूजों शक्त प्रमान॥१३॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु अचल की पश्चिम जेइ। षोडश विजयारध गिर लेइ।
तिन सब पै इक इक जिनथान। सो हो पूजों शक्त प्रमान॥१४॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पश्चिमदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि०

अचल मेरु की उत्तर धरा। एक खगाचल पर्वत परा।
तापै एक जिनालय जान। सो हौं पूजों शक्त प्रमान॥१५॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धस्यैकजिनालयायार्घं नि०

खंड धातकी दक्षिण जाय। इष्वाकार एक गिर पाय।
ता पै एक जिनालय मान। सो हौं पूजों शक्त प्रमान॥१६॥

ॐ ह्रीं धातकीखंडदक्षिणदिक्ष्यक्ष्वाकारपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

उत्तर दिश खंड धातकि माहि। इष्वाकार मध्य में पाहि।
ता पै एक जिनालय मान। सो मैं पूजौं शक्त प्रमान॥१७॥

ॐ ह्रीं धातकीखंडस्योत्तरदिश्यक्ष्वाकारपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

ऐसे अचल मेरु विध जोय। सो सो धरा जिनालय सोय।
ते हौं अरघ लाय हरषाय। पूजों सब जिन थल थुति गाय॥१८॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाल

(दोहा)

अचल मेरु पै जिन न्हवन, होय मुनी शिव जाय।
तातैं तीरथ निरमलौ, मैं पूजौं गुन गाय॥१॥

(वेसरी छन्द)

अचल मेरु सन्बन्धि जानौं। हैं जिन थान सु कहौ बखानौं।
अरु पर्वत गिर याकी लारा। सुनतें जीव लहैं पुन सारा॥२॥

जहाँ जहाँ जिनमन्दिर होई। सो सो थान कहौं सुनि सोई।
चव्वन षोडश जिन थल धारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥३॥

चार कहे गजदन्ता भाई। इन पै चव जिन गेह बताई।
सो भी रतनमई शुभकारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥४॥

जम्बू सालमली वृछ जानौं। इन जुग पै जुग जिन थाल मानौ।
तहँ भी सुर खग का पैसारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥५॥

षोडश गिर वक्ष्यार हैं भाई। तिनपै षोडश जिन गृह पाई।
तहाँ जाय पूजौं शुभ धारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥६॥

विजयारध चौंतीसा जानौ। ते सब चांदीमय तन थानौ।
तिन पै चौंतिस जिन थल भारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥७॥

इक्ष्वाकार दोय गिर जानौ। इनपै दोय जिनालय मानौ।
तहँ सुर खग पूजें हितकारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥८॥

इत्यादिक जिनमन्दिर भाई। सबै थान जिय को सुखदाई।
ये सब तीरथ थान अपारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥९॥

जो पूजै परतछ तहँ जाई। ताके उदय पुन्य होय भाई।
हम परोक्ष गुन गावें प्यारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥१०॥

हम यहाँ पूज्य भावना भावैं। ताही कर भव सफल करावैं।
गावैं राग धार गुन भारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥११॥

(दोहा)

खंड धातकी पछम दिस, अचल मेरु शुभ धाम।
ता संबंध तीरथ सबै, जजौं जिनेश्वर ठाम॥१२॥

ॐ ह्रीं धातकीपश्चिमदिश्यचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं नि०

*(इति अचलमेरु पूजा समाप्त)*

# अथ चतुर्थ मन्दिरमेरु सम्बन्धि जिनालय पूजा

(मुणयणाणंद की चाल)

अर्घ यह कर धरा पूर्व दिसा जानिए।
मेर चौथा भला मंदर सुख मानिए।
ता सम्बन्धी जिते जिन थानका हैं सही।
सो सकल थापि इहाँ जजौं पुन्य की मही।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

( भुजंगप्रयात छन्द )

लयौ नीर प्राशुक भले पात्र माहीं।
धरी भक्त उर में लिए हाथ ठाहीं।
करूँ वीनती गुनन की गाय माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला ॥१॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भला अगर चन्दन घसा नीर माहीं।
धरे गंध बहु भवर गुंजार लाहीं।
लया पात्र माहीं कही भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला ॥२॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति०

भले खंडबिन तंदुला सोध लाया।
घने उज्वला सोभदाई सुहाया।
धरें पात्र माहीं पढ़ी भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला ॥३॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्वपामीति०

लए फूल शुभ वृक्ष के गंध दाई।
करी माल नीकी भली जुक्त लाई।
धरी आपने हाथ कह भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला ॥४।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति०

नैवेद नाना भरे स्वाद लाया।
घने मेलि रस मोदकादिक बनाया।
धरे पात्र कर ले पढ़ी भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला ॥५॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति०

लए दीप मणमय महाँ जोति धारी।
गया अन्ध तिनतें जगे छोड़ि सारी।
लए आरती गाय मुख भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।६।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति०

करी धूप दशधा लगी गंध आनी।
घसी नीरतें जोर बारीक ठानी।
धरी अगनि पै हरष कह भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।७।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लए श्रीफला लौंग बादाम भारी।
भले खारका और जानौं सुपारी।
चले पात्र में धार पढ़ भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।८।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

धरैं नीर चन्दन अक्षत पहुप भारी।
नईवेद दीपक भला धूप थारी।
धरी अर्घ कर ले भली भक्त माला।
जजौं मेरु मन्दिर सम्बन्धि जिनाला।।९।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ

(मुणयणाणंद की चाल)

मेरु मन्दिर तनी भौम में जानिए।
महा बन भद्रसाला सुखद मानिए।।

तास मध्य चार जिन थान पुन्य की मही।
सो जजौं अर्घतें वीनती मुख कही।।१।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः भद्रसालवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपरैं मेर मन्दिर तनों जानिए।
नंदन बन सोभिये महा सुख मानिए।।
ता विषैं चार जिनराज मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ सों वीनती मुख कही।।२।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मन्दिर तने ऊपरें सार जी।
सौमवन है सही सकल सुखकार जी।।
ता विषैं चार जिनदेव मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ सों वीनती मुख कही।।३।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊपरैं मेरु मन्दिर तने जानिए।
पांडुवन सोहनो तीर्थ सो मानिए।।
चार जिन थान विन किए तहाँ हैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।४।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु मन्दिर दक्षिण दिसा जोय जी।
वृक्ष जम्बू कहौ रतनमय सोय जी।।
तास ऊपर कहौ थान जिनको सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही।।५।।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः दक्षिणदिशि जम्बूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं निर्वपामीति०

मेरु मन्दिर तनी दिसा उत्तर गिनौ।
सालमल वृक्ष सो मण मई धुनि भनौं।।

एक जिन गेह बिन कियो तहाँ है सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥६॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोरुत्तरदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं नि०

मेरु मन्दिर तनें चार गजदंत जी।
तिन विषैं चार जिन थान अघ तंत जी॥
देव खग जाय जिन सेव करहैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥७॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोश्चतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

मेरु मन्दिर तनें दक्षिन दिश भौम जी।
तीन गिर कुलाचल जान अति सोम जी॥
तिन विषैं तीन जिन थान शुभ की मही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥८॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः दक्षिणदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यः जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

उत्तर दिश मेरु मन्दिर तनी जानिए।
तीन परवत भले कुलाचल मानिए॥
तिन विषैं तीन ही थान जिनके सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥९॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोरुत्तरदिशि त्रिषु कुलाचलेषु त्रिभ्यःजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

मेरु पूरब दिसा मन्दिर की जानिए।
आठ वक्ष्यार गिर बड़े शुभ मानिए॥
तिन विषैं आठ ही जिन भवन हैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥१०॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः पूर्वदिशासंबंध्यष्टवक्षारगिरिष्वष्टाभ्यः जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

पच्छिम दिस मेरु मन्दिर तनी जोइए।
आठ वक्षार गिर कनकमय सोइए॥

तिन विषैं आठ जिन थान शुभ की मही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥११॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः पश्चिमदिशासम्बध्यष्टवक्षारगिरिष्वष्टाभ्यः जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

पूरब दिश मेरु मन्दिर तनी सार जी।
जान विजयारधा षोडशा भार जी॥
ऊपरै जिन भवन सबन के हैं सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥१२॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः पूर्वदिशासम्बन्धिषोडशविजयार्धेषु षोडषजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

दच्छन दिश मेरु मन्दिर तनी जाय जी।
एक रूपाचल खगन को थाय जी॥
ता विषै एक जिनराज मन्दिर सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥१३॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः दक्षिणदिशासंबंध्येकविजयार्धगिरावेकजिनालयायार्घं नि०

मेरु मन्दिर तनी पछिम दिशा भाय है।
षोडशा खगाचल रूपमय पाय है॥
तिन धरै देव भवन षोडश सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥१४॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोः पश्चिमदिशासम्बन्धिषोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

मन्दिर शुभ मेरु की उत्तर दिशा जाय जी।
खगाचल एक गिर रूपमय थाय जी॥
ता विषैं एक जिनराज थल है सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥१५॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरोरुत्तरदिशासंबंध्येकविजयार्धोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

आदि इन मेर मन्दिर तनी लार जी।
थान बहु सुभग सब अकिरतम सार जी॥

तिन विषैं अकिरतम ठाम जिन जे सही।
सो जजौं अर्घ तें वीनती मुख कही॥१६॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

मन्दिर मेरु सु सोहनो, चवथो अचल अनादि।
ता सम्बन्धि जिन थान को, नमौं करों अघ वादि॥१॥

(परमादी की चाल)

पौहकर अर्घ मँझार पूरब मेरु कहा जी।
मन्दिर ताका नाम जिन धुनि माहि चया जी॥२॥

जाके शीश मँझार पांडुक बन नीका।
रचना धरैं अपार सुखदायक सब जीका॥३॥

ता बन चार अनूप शिला कही जी।
अर्धचन्द्र आकार बहु विस्तार लही जी॥४॥

मोटी जोजन आठ लंबी सौ लक्ष भाई।
चौड़ी है जो पचास जोजन अति सुखदाई॥५॥

ता ऊपर सिंघपीठ तीन कहे अति भारी।
ता मध कलश हजार आठ रहे शुभकारी॥६॥

मंगल द्रव वसु जान धूप घटादिक सारे।
रचना और अनेक जानि अनादि अपारे॥७॥

ऐसी शिला अनूप ता ऊपर जिन आवैं।
बैठी सिंहासन ठाम प्रभु असनान करावैं॥८॥

इस खंड जे जिन होंय तिनकों इन्द्र सु लावैं।
ह्याँ धर सुर सब आय क्षीरोदधि जल भावैं॥९॥

कलश सहस वसु आनि सागर से विस्तारा।
वसु जोजन त्वंग जानि एते मध्य विचारा॥१०॥

इक जोजन मुख सार ऐसे कलश सु लावैं।
हाथों हाथ सु देव हरि के हाथ धरावैं॥११॥

इन्द्र तबै कर लेय जय जय शब्द करावैं।
जिन शिर एकै साथ धारा कलश ढरावैं॥१२॥

कर हरि नृत्य थुति गान जिनकों घर पहुंचावैं।
तातैं ए गिरराज जग में तीरथ गावैं॥१३॥

तहँ मुनि चारण जाय ध्यान धरैं सुध लाईं।
कर्म काटि शिव लेंय तातैं तीरथ थाई॥१४॥

इम बहु उपमा धार मन्दिर जानों मेरा।
कनकमई सब पीठ त्वंग बड़ा बहु फेरा॥१५॥

(दोहा)

चौथा मन्दिर मेरु जो, सुर खग को आधार।
हम ह्यां तैं पूजन तनी भावन भावैं सार॥१६॥

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

॥ *इति मन्दिरमेरु पूजा समाप्त* ॥

# अथ पंचम विद्युमालीमेरु पूजा

(गीता छन्द)

विद्युन्माली मेरु पंचम पच्छम पुष्कर दीप जी।
गजदन्त वृक्ष कुलाचला वैताढि पै शुभ टीप जी॥
इन आदि सकल वक्ष्यार थानक ऊपरैं जिन थान जी।
ते जजौं थापन थापि मैं ह्याँ भावना शुभ आन जी॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि जिनालयसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि जिनालयसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धि जिनालयसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

## अथाष्टक

(त्रिभंगी छन्द)

जल प्राशुक लाया अति हरषाया निरमल पाया सुखकारी।
धर कंचन झारी भक्त उचारी नय शिव धारी गुन भारी॥
यह विद्युन्माली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही।
इनके सम्बन्धि जिन थल संधी मैं सब वंदौ पुन्य मही॥१॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

हम चंदन आनी गंध जु थानी घसि शुचि पानी त्यार किया।
धर रतनन झारी निज कर धारी भक्त उचारी हर्ष लिया। यह० ॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

शुभ अक्षत जानौं खंड न मानौ धवल अघानौ वास धरा।
तिनकों शुभ धोये पुंज संजोये भाव मिलोए पुण्य करा॥ यह० ॥३॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् नि०

अब फूल सु लाये गंध धराये सब मन भाये शोभ दई।
कलवृक्षानि के हाथ लये हैं गूँथ दये हैं माल ठई।।
यह विद्युन्माली मेरु विशाली सब अघ टाली थान सही।
इनके सम्बन्धि जिन थल संधी मैं सब बन्दौ पुन्य मही।।४।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नैवेद्य सु प्यारा बहु रस धारा स्वाद अपारा तुरत किए।
धर कंचन थाली भक्त विशाली कह गुन माली हरष हिए।। यह० ।।५।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणि दीपक आन्या सब तम भान्या ज्ञान उगान्या हम लाए।
धर पातर माही उर हरषाही भक्त बड़ाई गुन गाए।। यह० ।।६।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

हम धूप बनाए शुभ गंध लाए दश विध भाए मेलि लई।
अब भक्त बड़ाई मुख थुति गाई अगनि धराई खेय दई।। यह० ।।७।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मन्धनदहनाय धूपं नि०

फल लौंग सुपारी श्रीफल भारी खारिक सारी हम लाए।
फिर जान बदामा और सुकामा लेकर ठामा शुभ दाए।। यह० ।।८।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल चंदन आन्या अक्षत मिलाना पहुप सुजाना गंध धरा।
चरु दीप सु धूपा फल जु अनूपा अर्घ सरूपा हाथ करा।। यह० ।।९।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं नि०

## अथ प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

पहुकर अर्ध पछम दिस मेर। विद्युन्माली नाम अति घेर।
ताके भद्रसाल जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन।।१।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

याही विद्युन्माली मेर। ता ऊपरि नंदन वन हेर।
ता वन में चव जिनके थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥२॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिनंदनवनस्य चतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

इसही मेरु सोमवन सोय। ताकी महिमा अद्भुत होय।
ता वन विषैं चार जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥३॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

मेरु सुविद्युन्माली देख। तिस पै पांडुक वन है एक।
ताके मध चव जिनके थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपांडुकवनस्य चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

विद्युन्माली मेर सुभाय। ताके चव गजदन्ते पाय।
तिन इक इक पै है जिनथान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिचतुर्गजदंतेषु चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

यही मेर दक्षिण दिस जोय। जम्बू नाम वृक्ष इक होय।
ताके मध्य एक जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥६॥

ॐ ह्रींविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिशिजम्बूवृक्षोपर्येकजिनचैत्यालयायाऽर्घंनि०

इसही मेर उत्तर दिस जोय। सालमली वृछ जानो सोय।
ता ऊपर जिनको इक थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥७॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बध्युत्तरदिशि शाल्मलिवृक्षोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

याही मेर दक्षिण दिस जाय। तीन कुलाचल गिर सुभ पाय।
तिनपै तीन थान जिनराय। सो हौं जजौं अरघ थुति गाय॥८॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिदक्षिणदिशायां त्रिषु कुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं०

उत्तर दिस इस मेरु सु जेय। तीन कुलाचल परवत तेय।
तिनपै तीन देव जिनथान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥९॥

ॐ ह्रीं उत्तरदिशि विद्युन्मालिमेरोः त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

यही मेर पूरब दिश सोय। आठ वछार नाम गिर होय।
तिन सबपै इक इक जिन थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥१०॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशायामष्टवक्षारपर्वतेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं०

यही मेर की पश्चिम सोय। आठ वछार नाम गिर होय।
तिनपै आठ जिनेश्वर थान। सो हौं जजौं अरघ थुति आन॥११॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपश्चिमदिशायामष्टवक्ष्यारेष्वष्टचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

पूरब इस ही मेर बताय। षोडश रूपाचल मन लाय।
तिन इक इक पै है जिनथान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१२॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं०

इसही मेर दच्छिन दिस जोय। विजयारध इक पर्वत सोय।
ता ऊपर है इक जिनथान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१३॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः दक्षिणदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येकजिनालयायाऽर्घं नि०

यही मेर पच्छिम दिश धरा। षोडश गिर वेताढ सु परा।
तिन सबपै जिनजी के थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडश-जिनालयेभ्योऽर्घं नि०

उत्तर इसही मेर सुजाय। एक रूप गिर परवत पाय।
जाके शीश एक जिनथान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१५॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोत्तरदिश्येकविजयार्धपर्वतोपर्येकजिनालयायाऽर्घं नि०

अर्ध दीप पहुकर के माहिं। दच्छिन इक्ष्वाकार कहाहिं।
ता ऊपर इक जिनवर थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१६॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरोः पुष्करार्द्धदक्षिणदिश्येकेक्ष्वाकारोपर्येकजिनचैत्यालयायार्घं०

याही दीप उत्तर दिश जाय। इक्ष्वाकार महा गिर पाय।
तापै इक है जिनको थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन॥१७॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपोत्तरदिश्येकइक्ष्वाकारपर्वतसम्बन्धिजिनचैत्यालयायार्घं नि०

विद्युन्माली मेर सुलार। एते थान जान सुखकार।
जो तीरथ हैं जिनके थान। सो हौं जजौं अर्घ थुति आन।।१८।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

पच्छिम पहुकर द्वीप में विद्युन्माली मेर।
कनकमई अति सोहनौ तीरथ निरमल घेर।।१।।

(वेसरी छन्द)

विद्युन्माली मेर सुथाना। तहाँ जिन गेह पापमल हाना।
तिनकी उपमा को मुख गावै। सहस जीभ तें पार न पावे।।२।।

रतनबिम्ब कंचन जिन गेहा। देखत जन मन उपजे नेहा।
उदै पुन्य ताके तहाँ जावै। तुछ पुन धारी दरश न पावे।।३।।

जाय देव खग इन्द्र धनिंदा। तिननें पूरब भव जिन बंदा।
हमसे हीनसक्त नहीं जावें। तातें हम यहाँ भावन भावें।।४।।

शची सहित हरि देव मिलाई। जाय मेर पूजै जिन पाई।
गावें गान भक्त मुख सेती। नटै नाच नाना गति जेती।।५।।

शची नचै हर ताल बजावै। कभू नचैं हर शची नचावै।
हाव भाव सब लीला ठानै। चंचल पग कर तन द्रिग तानै।।६।।

नचै अकाश भुमक भू जाई। कभूं दीखे कभूं अदृश थाई।
दीरघ तन कबहूँ लघु होई। बजै ताल बैना धुन सोई।।७।।

बजें तार तंदूरे भाई। बजें मृदंग नफीरी आई।
सारंगी संहतार अपारा। बाजे बजें इत्यादिक सारा।।८।।

सबका सुर इकताल बजावें, मीठे सुर बहु देवा गावें।
हाथन की अंगुरी पै आवें। अपसर बहुती निरत करावें।।९।।

ऐसे देव हरी तब जावैं। ऐसे भक्ति करैं पुन्य लावैं।
जैजै शब्द करैं मुख सोई। ताकरि पाप मैल निज धोई॥१०॥

ऐसे तौर हर सुर तहाँ जावैं। वा खगराज भक्त वश आवैं।
सोभी बहुविध सेवा ठानै। भाव समान महा पुन्य आनैं॥११॥

या विध सुर खग कर नित सेवा। ऐसा मेर थान शुभ देवा।
विद्युन्माली मेर सुथाना। कबलों करों गुनन का गाना॥१२॥

तातैं जो भव पुन्य को चाहौ। तौ या मन्दिर को शिर नाहौ।
यह तीरथ शिव साधन ठामा। पुन्य बन्धन को है भव दामा॥१३॥

(दोहा)

विद्युन्माली सेवतें पाप नसे भय खाय।
जे भाव पूजे सों ते निहचै शिव जाय॥१४॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

*॥ इति विद्युन्मालिमेरु पूजा समाप्त॥*

સહજ ચિદાનંદ

## समुच्चय जयमाला

(दोहा)

मेरु सुदरशन जानिए, विजय अचल शुभ ठाम।
मन्दिर विद्युन्मालिया, पांचों यह शुभ धाम॥१॥

(मुणयणाणंद की चाल)

दीप जम्बू विषै मेरु सुदरशना।
लाख जोजन कहा त्वंग नभ फरसना॥
दूसरा धातकी खंड पूरब दिसा।
मेर विजय महा शोभ जुत अति लसा॥२॥

धातुकि खंड पश्चिम दिसा जानिए।
तीसरा मेरु शुभ अचल सुख मानिए॥
अर्घ पहुकर विषैं पूर्व दिस सार जी।
मेर मंदर कहा चतुरथा धार जी॥३॥

दिसा पच्छम तनी अर्ध पुहकर सही।
पांचमा मेर विद्युन्माली कही॥
चार यह मेर त्वंग सहस चौरासिया।
कनक के सकल यह तीर्थ अघनासिया॥४॥

एक इक मेर पै चार बन हैं सही।
एक बन मांहि जिन थान चवा धुन कही॥
चार बन तनै मिलि भए षोडश थला।
पांच मेरन तने चार बीसी फला॥५॥

मेर इक शैल गजदन्त चव जान जी।
पंच मेरन तनै बीस सुख थान जी॥
पंच ही मेर के वृक्ष दश थाय हैं।
सालिमल जम्बू वृक्ष नाम शुभदाय हैं॥६॥

मेर इक एक पट कुलाचल सार जी।
पंच के तीस बहु धरें विस्तार जी॥
जान बैताढ चौंतीस इक मेर के।
एक सत सतर पंच मेर शुभ घेर कैं॥७॥

जानि वक्ष्यार इक मेर के षोडसा।
पंच मेरन तने असी गिन मोडसा॥
इक्ष्वाकार दोइ धातकी खंड जी।
दोइ गिन अर्ध पहुकर धरा मंड जी॥८॥

सकल यह अकीरतम थान जानौं सही।
इन विषैं सबन पै थान जिन शुभ मही॥

पंच मेरन के सम्बन्ध सब गाइए।
तीन सत और चोरानवे पाइए॥६॥

जानेकों तौ सक्त हीन हम हैं सही।
भक्त वस भावना करत हैं इस मही॥
आठही द्रव्य शुध लेय थुत गाय जी।
जजतहों सकल जिनगेह हरषाय जी॥१०॥

प्रोष पूजा करी राग हिरदें धरी।
तासतें पुन्य की पोट उर में भरी॥
तास फल भाव अति निरमले हो गए।
करो तब पाठ यह सुफल मानों भए॥११॥

और सब जगत भ्रमजाल कवि जानियो।
एक जिन चरन को सरन सत मानियो॥
और नहीं आस यह चाहि जानों सही।
हाथ तें जजें यह थान फिर शिवमही॥१२॥

(दोहा)

पंच मेर की आरती, और अकिरतम थान।
तिन पद टेक नमो सदा, जो चाहो सुध ज्ञान॥१३॥

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

*(इति पंचमेरु विधान समाप्त)*

# अथ मानुषोत्तर पर्वत के चार जिनालयों की पूजा

(अडिल्ल छन्द)

पहुकर दीप सुमध्य भाग भू में सही।
मानषोतर गिरि बलाकार कंचन मही॥
तापै चवदिस चार अकीरतम जिन थला।
सो पूजों इस थान थाप उर निरमला॥१॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिचत्वारिजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिचत्वारिजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिचतुर्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(चौपाई)

जीव रहित निरमल जल लाय। कनक पियाले धर गुन गाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। जनम मरन मेंटे फल एह॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदन अगर घस्यो जल डार। आछे पातर करलै धार।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। भौ दुख ताप मिटे फल एह॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

तंदुल उज्ज्वल अखंड अनूप। कीनै शुद्ध धोय अनुरूप।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। ता फल सिद्धलोक फल लेय॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं नि०

चांदी कनक कल्पद्रुम जान। तिनके फूल गूंथ हम आन।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। मदन रोग नाशै फल एह॥५॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस नैवेद बनाय। मोदक आदि किए कर लाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। वाँछा रोग मिटै फल एह॥६॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक रतनमई मन लाय। पातर धर अति भावन भाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। मिथ्या मोह मिटे फल एह॥७॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

चंदन अगर धूप कर सार। खेऊँ अगनि माहिं थुति धार।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। कर्म जरौ ताको फल एह॥८॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल और बदाम धुवाय। निरमल पातर धर गुन गाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। मरन मिटै शिव ले फल एह॥९॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीर गंध अक्षत पुष्प चरु सार। दीप धूप फल कर इक ठार।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। चव गति भवन मिटै फल एह॥१०॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ प्रत्येक अर्घ

(सोरठा)

मानुषोत्र गिर जान, ताकी पूरब दिस सही।
है जिन थान सुमानि, सो पूजों वसु द्रव्य तें॥१॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण धरा मँझार, याही गिर ऊपर सही।
तीरथ जिन थल सार, ते पूजों वसु द्रव्य तें॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्र के शीश, पच्छम दिश जानौं सही।
जिन थल सब जग ईश, सो पूजौं वसु द्रव्य तें॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्र पै सोय, उत्तर दिश को जो कही।
जिनवर थान सु जाए, सो हौं पूजौं भावतैं॥४॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतोत्तरदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पहुकर अर्घ सुदीप, मानुषोत्र के पार कौं।
तहाँ उतपति क्षय कीय, सो सिध पूजों भावतैं॥५॥

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमानुषोत्तरपर्वतादग्रे उत्पत्तिक्षयकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

याही पहुकर दीप का, सागर है सुखदाय।
ताकी उतपति छेद सो, मैं पूजौं थुति गाय॥६॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपवेष्ठितसमुद्रस्योत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप वारुनी नीर निध, वामें रचना जोर।
सो या भू उतपति तजी, ते पूजों मद तोर॥७॥

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वारित भू वेढ कें, जो सागर जलरास।
जाकी उतपति तिन तजी, ते पूजों थुति भास॥८॥

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपवेष्ठितसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप क्षीर वर है सही, भोग भोम सुभ थान।
ताकी उतपति तिन तजी, सो पूजौं धर ध्यान॥९॥

ॐ ह्रीं क्षीरवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर महासागर सही, गुन को जान निधान।
तामें उतपति तिन तजी, सो पूजौं सिव थान॥१०॥

ॐ ह्रीं क्षीरवरसमुद्रस्योत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप घिर्तवर शुभ धरा, बहु जीवन को वास।
तामें उतपति तिन तजी, ते पूजों होय दास॥११॥

ॐ ह्रीं घृतवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वेढ़ि घिरत वर दीप कों, जो सागर शुभ नाम।
तामें उतपति तिन तजी, तेहु जजौं शुभ थान॥१२॥

ॐ ह्रीं घृतवरसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षूवर है दीप सो, त्रस थावर को ठाम।
ताकी गति छेदी तिने, सोहु जजौं शुभ धाम॥१३॥

ॐ ह्रीं इक्षुवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वेढि परो इस दीपकों, इक्षूवर दधि सोय।
मरन जनम यामें तजें, अर्घ सु पूजों जोय॥१४॥

ॐ ह्रीं इक्षुवरसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम द्वीप नन्दीश्वरा, ताको बहु विस्तार।
ताकी उतपति तिन तजी, सो पूजों भव पार॥१५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पहुकर दीपादि दधि, सकल जीव के धाम।
तिनमें उतपति तजि गए, सो पूजौं शिव ठाम॥१६॥

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपादारभ्य नन्दीश्वरद्वीपपर्यंतमुत्पत्तिछेदकायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

पहुकर आधे दीप मध, मानुषोत्र गिर सोय।
कंचन वरनौ सैल पै, जिन थल बंदौ जोय॥१॥

(वेसरी छन्द)

तीजे दीप विषैं मध भागा। मानुषोत्र परवत शुभ जागा।
वलयाकार त्वंग अति जानौ। मनुषलोक की हद्द प्रमानौ॥२॥

याके पार मनुख नहिं जावैं। देव जाय नाना सुख पावैं।
इसतैं परे कर्म भू होई। या गिर पार भोग भुमि जोई॥३॥

यह गिर मानुषोत्र गिर राजा। कनकमई सबही सुख काजा।
तिसपै चार दिसा में जानों। कूट कहे सुन्दर अधिकानौं॥४॥

तिन कूटन में सुर के बासा। महल बाग वन अति सुख रासा।
तिनमें एक एक सिध कूटा। चौ दिस चार जानि अघ छूटा॥५॥

चौ दिश सिद्धकूट पै जानौं, एक एक जिनवर का थानौं।
सो थानक है अनादि अनंता। बिना किए जानो सब संता॥६॥

कनकमई सब गेह जिनन्दा। रतन बिम्ब तिनमें सुखकन्दा।
पूजें देव खगा थुति गाई। भूमगोचरी पहुँच न पाई॥७॥

बंदे तें पातक खय जावैं। पुन्यहीन नहिं दरशन पावैं।
सो हम अलप पुन्य के धारी। तातैं हमको दरशन भारी॥८॥

ऐसी जान पुन्य के काजें। तिन जिनमन्दिर पूजा साजें।
पहुंचन की तौ सकती नाहीं। करैं भावना अति हरषाहीं॥९॥

(दोहा)

मानुषोत्र पै जिन भवन, चव दिस चार बखान।
तिनकौं हम यहाँ जजत हैं, अरघ आठ द्रव्य आन॥१०॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ *इति मानुषोत्तरसम्बन्धिजिनचैत्यालयपूजा समाप्त* ❀

# अथ नन्दीश्वर दीप पूजन विधान

(अडिल्ल छन्द)

अष्टमदीप नन्दीश्वर बहु विस्तार है।
ताके चव दिस बावन गिर मनि धार हैं।।
तिन सबपै जिनथान कहे बावन सही।
सो इहाँ थापन थाप जजौं पुन्य की मही।।१।।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

शुभ नीर निरमल त्रस सु जियबिन गंगधारा को सही।
धर पात्र सुन्दर हाथ अपनै वचन करि मुख थुति कही।।
तहाँ इन्द्र सुर ही जाय पूजें मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनै जिनथान जल जजहों इहाँ।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

लै बावनौं गंध खानि चंदन नीरतैं घसि लाइयौ।
कर कनक पातर धार लीनो महा उर हरषाइयौ।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजें मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान चंदन जज इहां।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

बिन खंड अक्षत धवल उज्ज्वल बीन नव शुभ लाय जी।
कर सुभग जलतें धोय नीके बिनती मुख गाय जी।।

तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान अक्षत जज इहाँ।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सुखदाय पहुप सुगंध–राशी वरन नाना जानिए।
बहु घाटि धारी लाय करतैं माल कर हित मानिए।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान पहुप सुजज इहाँ।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नैवेद षट्रस तुरत लाकै सुभग मोदक हम लए।
धर थाल कंचन धार करमें भाव को निरमल ठए।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान चरु जजहों इहाँ।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मण दीपिका तम नाश करता जोतके धारक सही।
लै आरती गुन गाय जिनके भावना इम उर लही।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान दीपक जज इहाँ।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

कर धूप दश विध गंध लेकै महा परमल दाय जी।
लै आपने कर माहिं थुति कर अगनि में धरवाय जी।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान धूप जजौं इहाँ।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल बदाम अनार खारक और पुंगीफल भले।
इन आदि निरमल लाय फल हों देव जिन पूजन चले।।

तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान फल जजहों इहाँ।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

लै नीर चंदन तंदुला पुष्प और चरु दीपक कहे।
धर धूप फल कर अर्घ करलै भावना भावत भए।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान अर्घ जजौं इहाँ।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(सोरठा)

नन्दीश्वर शुभ थान, अष्टम ताकी चौदिशा।
बावन जिन थल मान, सो पूजौं कर आरती।।१।।

(वेसरी छन्द)

याही अष्टम दीप मँझारा। जिन पूजन आवैं सुर सारा।
इम उत्कृष्टी प्रतिमा जानौं। धनुष पांच सौ त्वंग बखानौं।।२।।

रूप महा कौलों कवि गावैं। जिन तन से सब लच्छन पावैं।
मुद्रा शांति घ्राण दिठ देखैं। पदमासन कायोत्सर्ग पेखैं।।३।।

पूरब दिशा वा उत्तर भाई। श्रीजिनबिम्ब तनैं मुख पाई।
सो सब बिम्ब रतनमय होई। दीखै इम परतक्ष जिन जोई।।४।।

बहु विस्तार धरें जिन गेहा। ताके लखत होय बहु नेहा।
कटक बाग बन शोभा धारी। लगे शिखर नभ मिलन पधारी।।५।।

धुजा कलपवृछ तोरण धारैं। रतन तूप मंगल द्रव्य सारे।
प्रातहार्य वसु शोभ अपारा। मणि मंडल नभ माहिं सिधारा।।६।।

नाटशाल तहाँ भक्त करावैं। देव तहाँ नटि सुरधर गावैं।
सुर मन्दरि पंकति सुखकारा। तहाँ अमर धर्म की उतसारा।।७।।

महिमा तिनकी कबलौं गावैं। जिन जानैं कै जिन धुनि पावैं।
वा सुर इन्द्र जाय सो जानैं। बाकी तौ सामान्य बखानैं॥८॥

जे जिन मन्दिर सुमरत भाई। पाप कटें पुन्य बंध कराई।
तौ दरशन की महिमा सारी। कहै कौन फल की विधि भारी॥९॥

(दोहा)

तातैं नन्दीश्वर विषैं, जे हैं जिनके थान।
सो भव सुमरो थुति करो, पूजो शुभ फल धाम॥१०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## प्रत्येक दिशासम्बन्धि पूजा

# प्रथम पूर्व दिशा पूजा

(गीता छन्द)

जाय नन्दीश्वर सु अष्टम दीप की पूरब दिसा।
लक्ष एक अंजन चार दधि गिरि आठ रतिकर गिर लसा॥
तिन ऊपरें जिन थान इक इक थाप तो इहा भाय जी।
हौं जजौं मन वच काय भावन गात सकत न थाय जी॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(अडिल्ल छन्द)

निरमल जल हम लेय कनकपातर धरौ।
अपनौं तन जल धोय सपरकैं सुध करौ॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो हों जलतें जजौं महा थुति आन हैं॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

चंदन आनि सुगंध भ्रमर मन मोहनौ।
करके भाव विशुद्ध पात्र लै सोहनौ॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो हों चंदन लाय जजौं थुति आन हैं॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं०

अक्षत उज्ज्वल खंड बिना लाए सही।
धार मनोहर पातर अपने कर लही॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो अक्षत तें जजौं भक्त विध ठान हैं॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तायाऽक्षतं नि०

देवद्रुम के पुष्प महा गंध धार जी।
तिनकी गूंथी माल आप कर प्यार जी॥
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो पूजौं पुष्प लाय घनै तजि मान हैं॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं०

नाना रस नैवेद भेद बहू लाइयौ।
मोदक आदि अनूप कंठ गुण गाइयौ॥

नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो पूजौं नैवेद आप तजि मान हैं।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक मणिमय सार तासतैं तम नसै।
सो भर कंचन थाल हाथ में सो लसै।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो दीपक तैं जजौं भक्ति उर आन हैं।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं०

चन्दन अगर मिलाय धूप कीनी सही।
सो लै अपनै हाथ अगनि माहीं दही।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो पूजौं लै धूप हियै धर ध्यान हैं।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल लोंग बदाम और खारक सही।
इत्यादिक फल त्याय घालि पातरमही।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो हौं फलतें जजौं महा थुतिगान हैं।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

जल चंदन अक्षत पुह चरु दीपक सही।
धूप फला यह आठ अरघ इनकी लही।।
नन्दीश्वर पूरब दिश जे जिन थान हैं।
सो मैं पूजों अरघ थकी थुति आन हैं।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

नन्दीश्वर पूरब दिश अन्जनगिरि सही।
ता ऊपर जिनथान अकीर्तम पुन मही।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघ हरैं।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिशायामञ्जनगिरिसम्बन्धिजिनालयायाऽर्घं नि०

याही अंजनगिर के पूरब दिस सही।
दधिगिर एक महान जहाँ जिन थलमही।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघ हरैं।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशादधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं नि०

अंजनगिर पूरब दिस वापिक मुख कहो।
रतिकर गिर ता शीश थान जिनवर रहो।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनैं अघ हरैं।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशावापीसम्बन्धिप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं०

याही वापी के मुख रतिकर दूसरा।
ता ऊपर जिन भवन तीर्थ अघ मलहरा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्यतें पूज आपनै अघ हरैं।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वाञ्जनगिरेः पूर्वदिशावापीसम्बन्धिद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

पूरब दिश अंजनगिर की दक्षिण दिशा।
वापिक में दधगिरा तहाँ जिनथल लसा।।

जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः दक्षिणदिशासम्बन्धिवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं नि०

पूरब अंजन दक्षिण वापी मुख सही।
रतिकर प्रथम बखान तहाँ जिनग्रह मही।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं०

याहि वापिका के मुख दुतिया रतिकरा।
ता ऊपर जिन थान महा पातिक हरा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

नन्दीश्वर पूरब अंजन पच्छिम दिसा।
वापिक मध दधिगिरा तहाँ जिनथल बसा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः पश्चिमवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धि जिनालयायार्घं नि०

याही वापिक के मुख प्रथम सु रतिकरा।
तापै जिनका भवन महा तीरथ धरा।।
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरस्य जि० अर्घं०

दूजो रतिकर याही वापिक मुख कहौ।
ता ऊपर जिन भवन अकीरतम बन रहौ॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं॥१०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

नन्दीश्वर पूरब अंजन उत्तर सही।
वापिक मध दधि गिरा तहाँ जिनथल कही॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः उत्तरदिशासम्बन्धिवापिकामध्ये दधिगिरिसम्बन्धि जि०

याही वापिक के मुख प्रथम सु रतिकरौ।
ताके ऊपर जिनकौ थानक अवतरौ॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः उत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि जि० अर्घं०

याही वापिक मुख पर रतिकर दूसरा।
ता ऊपर जिन गेह सकल पातिक हरा॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरेः उत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरस्य जि० अर्घं०

ऐसे नन्दीश्वर पूरब दिस गिर सही।
तिन त्रयोदश पै इक इक जिन थल धुनि कही॥
जानैं कों बल नाहिं भावना यहाँ करैं।
अष्ट द्रव्य तें पूज आपनै अघ हरैं॥१४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिश्येकांजनगिरिचतुर्दधिगिर्यष्टरतिकरे तित्रयोदश-जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

नन्दीश्वर पूरब दिशा, अष्टम दीप मँझार।
त्रयोदश जिनके थान हैं, सो पूजों थुति धार॥१॥

(वेसरी छन्द)

पूरब दिस नन्दीश्वर माहीं। एक महा गिर अंजन पाहीं।
ढोलाकार लोग आकारा। श्याम रतन का है पिंड सारा॥२॥

जोजन सहस चौरासी सारो। धरती तैं नभ माहिं उचारो।
इतनें जोजन ही सुन भाई। है तिस व्यास भौम चौड़ाई॥३॥

जेता त्वंग व्यास जे ताई। नीचै ऊपर इक सा पाई।
जाकी जोति सबै भू व्यापी। नास किया तम धर परतापी॥४॥

महा मनोज्ञ शिखर यह होनों। इसतें लख जोजन चवकोनों।
अन्तर एता जाय सुभाई। चव दिस चार वापिका पाई॥५॥

सो वापिक भी भिन भिन गाई। लाख लाख जोजन बतलाई।
ए लंबा विस्तार बताया। एता ही तिन व्यास सु गाया॥६॥

चौखूटी वापिक अकारा। कंचन पाल महा दृढ़ धारा।
मुख लौं जल भरया अति सोहै। चलें तरंग लखत मन मोहै॥७॥

तिन चारित में बिच बिच जानों। एक एक दधिगिरि सुखदानौ।
श्वेत वरण मणि फटिक समाना। लंबे चौड़े इक से जाना॥८॥

ए भी ढोलाकार बताए। दश दश सहस जोजना गाए।
इनही इक इक वापी जानो। मुख पै दो दो रतिकर मानौं॥९॥

ऐसे एक दिसा के भाई। त्रयोदस गिर गाए सुखदाई।
इन सब इकपै इक जिन थाना। सो हों जजौं छांड़ि सब माना॥१०॥

(दोहा)

यह जिनमन्दिर माल शुभ, जो भव कंठ धराय।
सो ता कीरत और कों, सुर हरषै जस गाय॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायाः त्रयोदशजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं नि०

*इति पूर्वदिशा पूजा समाप्त*

# अथ दक्षिणदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(चौपाई)

नन्दीश्वर दक्षिण दिस जाय, त्रयोदस जिनके थान सुठाय।
ऐसी शक्ति तो दीसे नाहिं, तातैं जजौं थाप इह ठाहिं॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(गीता छन्द)

नीर नीकौ क्षीर दधि सो जीव बिन प्राशुक इसौ।
धर कनक झारी माहिं कर ले कहौ गुन मुख बुधि जिसौ॥

जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुध तें लाय जल सुखदाय हैं॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एक अंजनगिरि चत्वारि दधिगिर्यष्ट-रतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घसि नीर चन्दन बावना शुभ गन्ध की धारा सही।
लै सुभग पातर विनय सेती जानके तीरथ मही॥
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय चन्दन लायके थुति गाय हैं॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एक अंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्ट-रतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत सु उज्ज्वल खण्ड नाहीं शुद्ध नख सिख जानिए।
फिर धोय निरमल धार पातर आपनै कर आनिए॥
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय शुद्ध कर अखत तें हित लाय हैं॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल प्रासुक कनक चांदी तथा सुरतरु के सही।
लै माल तिनकी करी चित दे आपने करमें लही॥
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय फूल सु लाय अति सुख पाय हैं॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सुन्दर सुभग रसना लाइया हित कारने।
ले आपने कर धार पातर भूख को मद मारने॥
जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।
सो जजौं मन वच काय सुधि नैवेद्य शुभ गुन गाय हैं॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**दीप मणिमय अन्ध नाशक महाजोत धरा सही।**
**धर भले पातर आरती शुभ आपनै कर में लही।।**
**जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।**
**सो जजौं मन वच काय सुध कर दीप तें जस गाय हैं।।६।।**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

**कर धूप दस विध गन्ध लैके पीस सकल मिलाय जी।**
**हों आपने घर हरष धरके अगनि खेवन आय जी।।**
**जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।**
**सो जजौं मन वच काय सुधतें धूप सूं जिन पाय हैं।।७।।**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

**श्रीफल बदाम सु ले सुपारी खारका सुख–दायना।**
**इन आदि और अनेक फल ले सुभग सब मन भायना।।**
**जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।**
**सो जजौं मन वच काय शुभ आयकर फल लाय हैं।।८।।**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

**जल गंध अक्षत पुष्प चरु ले दीप धूप फला सही।**
**कर अरघ सब द्रव्य एकठे करि आपनै कर में लही।।**
**जिन थान दक्षिण दिस नन्दीश्वर तहाँ बिम्ब जिनराय हैं।**
**सो जजौं मन वच काय शुभकर अरघतें थुति गाय हैं।।९।।**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशाया: एकअंजनगिरिचत्वारिदधिगिर्यष्टरतिकरेति त्रयोदशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

# अथ प्रत्येक अर्घ

(गीता छन्द)

नन्दीश्वर दक्षिण दिसा को जान अंजनगिर सही।
तिस ऊपरै इक थान जिन है पाप हरने की मही।।
तहाँ देव ही तो जाय पूजैं और को मौसर कहाँ।
हम जानि पुन्य के लोभ काजै भाव अरघ जजैं इहाँ।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशांजनगिरिसम्बन्धिजिनालयाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप दक्षिण दिस नन्दीश्वर अंजन गिरपूरब मही।
लखि वापिका मध शिखर दधिगिर तास पै जिन थल सही।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही जु वापिक तनै मुख पै जानि रतिकर आदि जी।
ता ऊपरे जिन थान है शुभ जजें सब अघ वादि जी।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

याही जु वापिक तना रतिकर दूसरा गिर जानिए।
ता ऊपरै जिन थान तीरथ अकिरतम ध्रुव थानिए।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन सु गिर दक्षिण दिसा का तास की दक्षिण मही।
है वापिका मध शिखर दधिगिर तास पै जिनग्रह सही।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

याही जु वापिक मुख सु ऊपरि कही पहिला रतकरा।
ता ऊपरै जिन भवन दीरघ किए पापन का हरा।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पूर्ववापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिका इस तनै मुख पै कहा रतिकर दूसरा।
तिस शीश थानक जिनेसुर का देखतैं पातक हरा।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिणदिस अंजनगिरि की पच्छिम दधिगिर वापिका।
तहाँ थान देव जिनेन्द्र जू का करो भव्य तिन जापिका।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वापिका के मुखै रतकर नाम प्रथम सुगिर सही।
तिस ऊपरे जिन भवन अघहर सकल मंगल की मही।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण अंजन पच्छिम वापिका मुख करै रतकर हुजा।
ताके सु ऊपर भवन जिनको एक ही धर्म की ध्वजा।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप नन्दी दक्षिण अंजन तास उत्तर बावरी।
ता मध्य दधिगिर शीश जिन थल भव्य संग मंगल करी।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरि-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या बावरी मुख जान रतिकर प्रथम ही सुखदाय जी।
ताके सु ऊपर जोय मन्दिर देव जिनका पाय जी॥१२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही जु वापिक नोक ऊपर जान रतिकर दूसरा।
तिस जाय मस्तक भला राजै देव जिनमन्दिर धरा॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकर-सम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

दक्षिण अंजन दधिगिरि चव तसु रतकरा।
इन पै इक इक थान देव जिनका खरा॥
तहाँ देव ही जजैं जाय गुन गाय हैं।
हम इहाँ पूजें अर्घ भावना भाय हैं॥१४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य दक्षिणदिशायाः एकअंजनगिरिचत्वारिदधिमुखाष्ट-रतिकरेतित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

नन्दीश्वर दक्षिण दिसा, कहे सु जे जिनगेह।
हम पूजें भावैं यहाँ सुर जजहैं कर नेह॥१॥

(वेसरी छन्द)

नन्दीश्वर तौ दीप अपारा। ताकी दक्षिण दिस सुखकारा।
अंजनगिरि तौ एक बताया। ता ऊपर चव वापिक भाया॥२॥

तिन वापिक के मध्य अनूपा। एक एक दधिगिरि शुभ रूपा।
तिन वापिन की नोंकन ठाहीं। दोय दोय रतिकर गिर पांहीं॥३॥

तुंग व्यास रचना है तैसी। पूरब दिसा कही थी जैसी।
यहाँ वहाँ फेर रंच नहिं जानों। दिसा विशेष और नहिं मानों॥४॥

यह सब थान तीर्थ हैं सोई। देखत दरस पाप क्षय होई।
नाम लियैं जिय मंगल पावै। सो पूजन महिमा किम गावै॥५॥

या पूजा फलतें सुन भाई। शोक दोष उपजै न कदाई।
सकल व्याधि तिनकी मिट जावै। जो जिय यह पूजा मन भावै॥६॥

याहि पूजा के परभावा। सिरीपाल तन कुष्ठ गमावा।
सो आतम सुरके सुख पावै। जो जिय यह पूजा मन भावै॥७॥

होय फेर चक्री बलभद्दा। कामदेव आदिक सुखहद्दा।
कै शिव वा अहमिंदर जावै। तै जिय यह पूजा मन भावै॥८॥

फेर चवै मोटे पद पावै। राज्य भोग फिर तप मति लावै।
काम कर्म शिवरूप कहावै। ते जिय यह पूजा मन भावै॥९॥

और कहाँ फल अधिक सु भाई। तातैं नन्दीश्वर चल जाई।
जो जग फेर न आवै जावै। ते जिय यह पूजा मन भावै॥१०॥

(दोहा)

तेरह गिर पै जिन भवन, तेरह ही मन लाय।
नन्दीसुर दच्छिन तरफ, सो हम भाव जजाय॥११॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिशासम्बन्धित्रयोदशजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति दक्षिण दिशा पूजा समाप्त*

# अथ पश्चिम दिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(चौपाई)

**नन्दीश्वर पच्छिम दिस जोय। त्रयोदश जिन मन्दिर हैं सोय।**
**तहाँ जान तौ समरथ नाहिं। यहाँ थापन कर जजौं सुठाहिं॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(चौपाई)

**नीको नीर निरमलो सार। निरमल पातर करमें धार।**
**नन्दीश्वर पच्छिम दिस जान। पूजों जिन मन्दिर जल आन॥१॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन चारु अगर घसि और। कनक पियाले धर कर जोर।**
**नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं जजौं गंध शुभ आन॥२॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत मुक्ताफल से सार। उज्ज्वल खण्ड रहित कर धार।**
**नन्दीश्वर पच्छिम दिस जान। जिन थल पूजौं अक्षत आन॥३॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०

फूल कलपतरु से गन्ध धार। नाना वरन आदि कर सार।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। पूजौं फूल थकी हित आन॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस नैवेद बनाय। तुरत किए लायो थुति गाय।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो पूजौं नैवेद सुआन॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रतन मई तम हरा। सो हमने शुभ पातर धरा।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं जजौं दीप शुभ आन॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप कपूर अगर मिलवाय। कीनी भली गन्ध जुत लाय।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं पूजों धूप शुभ आन॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सार बदाम अनूप। खारक पुंगीफल लै भूप।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं पूजों शुभ फल आन॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुह जेय। चरु दीपक फल धूप सुलेय।
नन्दीश्वर पच्छिम जिन थान। सो मैं जजौं अरघ पुन्य दान॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

# अथ प्रत्येक अर्घ

(चाल जोगीरासे की)

नन्दीश्वर पच्छिम दिस जानों अंजन गिर शुभ थानों।
ताके शीश ऊपर विराजित श्रीजिन मन्दिर जानों।।
जानै को नहीं शक्ति हमारी अरु पूजन मन भाई।
तातैं मन वच काय शुद्ध तें अरघ जजौं शिवदाई।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

याही अंजन गिर की पूरब दिसा वापिका जानौं।
ता मध दधिगिरि ऊपर जिनथल तीरथ अघको हानों।।२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्छिम अंजन गिरि की पूरब वापिक के मुख भाई।
है रतिकर गिरि जिनथल तापै पूजें देवा आई।।३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखप्रथरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख ऊपर है रतिकर सुख दानौं।
ताके शीश कहो जिनमन्दिर पाप हरन को थानौं।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम अंजन गिर की दक्षिन वापिका के मध्य जोई।
है दधिगिर तिस नाम सीस पै जिनको थानक सोई।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा

याही वापिक के मुख जानों रतिकर पहिला होई।
तापै जिनजी का है मन्दिर पूजन जोग्य सो सोई।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घंनिर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख ऊपर रतिकर दूजा जानों।
ता ऊपर है श्रीजिनमन्दिर पूजत जे धन मानों।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिदक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

नन्दीश्वर पच्छिम अंजन गिर ता पच्छिम को वापी।
ता मध दधिगिर ऊपर जिन थल पूजैं हरि सुर थापी।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख जानौं पहला रतिकर भाषा।
ताके ऊपर है जिन थानक सुरही पूजें जाखा।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या वापिक के ही मुख जानौं दूजा रतिकर नीका।
ता ही के शिर है जिन थानक पाप हरत है नीका।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरिपश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर पश्चिम दिश अंजन ताकी उत्तर जानौं।
है वापिक मध्य दधिगिर परवत ऊपर जिनथल मानौं।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख आगे रतिकर परवत पावै।
ता ऊपर जिन थान कहो है सो पूजै सुख दावै।।१२।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिक इसही के मुख आगे रतिकर गिर सुख थानों।
याके ऊपर है जिनजी को मन्दिर अति सुख दानों।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपपश्चिमांजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर पच्छिम दिस त्रयोदश हैं परवत मणि जैसे।
तिन सबपै जिन मन्दिर जानों पापहरण थल ऐसे।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पश्चिमांजनगिरिसम्बन्धित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

नन्दीश्वर पच्छिम दिसा, हैं त्रयोदश जिनगेह।
कनक रतनमय सोहनों, जजें देव कर नेह।।१।।

(वेसरी छन्द)

पच्छिम अंजन गिर को भाई। आदिक हैं तेरह गिर ठाहीं।
तिनपे हैं जे जिनके गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।२।।

या पूजा फल दुःखको खोवै। या पूजा फल अघ मल धोवै।
और पुरुष की कथा सुकेहा। तिनपद नमें आनि सुर नेहा।।३।।

पूजा करै हरै भव सोई। पूजाफल चउ गति नहिं होई।
इस पूजन फल सुर द्रुम जेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।४।।

जे भव नन्दीश्वर को जावें। पच्छिम दिसको प्रीत बढ़ावें।
तहाँ कहे त्रयोदश जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।५।।

या पूजा जग में न भमावे। या पूजा फल ज्ञान बढ़ावें।
पच्छिम नन्दीश्वर जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।६।।

इत जिन थान पूज ते ठानैं। तिनकौ तीन भवन बढ़ जानैं।
भावत हैं हम तो जिन गेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।७।।

ए जिन भवन देखते भाई। लहै पुन्य अघ तुरत नसाई।
पूजे जो भव धरे न देहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।८।।

हम भी पूजन को फल चाहैं। अरु पूजन की भावन भावैं।
हम तहाँ जजैं सु औसर है यहाँ। जिन पद नमें आनि सुर नेहा।।६।।

यह नन्दीश्वर पच्छिम थाना। जिन पद नमें तिनै पुन्यवाना।
हीन शक्ति धर लखै न जेहा। जिन पद नमें आन सुर नेहा।।१०।।

सुर जो पूजे बारम्बारा। जो जो अवसर आवै सारा।
मनुष विचारो पहुँचे केहा। जिन पद नमें आन सुर नेहा।।११।।

कब नन्दीश्वर अवसर आवै। जब इस थल हम भावन भावै।
जाकर ही पुन्य पावै जेहा। तिन पद नमें आनि सुर नेहा।।१२।।

(सोरठा)

जो वहाँ के जिन थान, पूजों पद वसु द्रव्यतें।
सो लह अविचल ज्ञान, लोकालोक प्रकाशका।।१३।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिशि त्रयोदशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति पश्चिमदिशा पूजा समाप्त*

સહજ ચિદાનંદ.

# अथ नन्दीश्वरद्वीप की उत्तरदिशा सम्बन्धि जिनालय पूजा

(पद्धरी छन्द)

**नन्दीश्वर उत्तर दिश्य जान, त्र्योदश जिन थानक शुभ बखान।**
**सो जजों थाप इस ठाम सोय, नहिं वहाँ जानकी शक्ति मोय॥१॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

## अथाष्टक

(वीर जिनन्दकी चाल)

**जल लै गंगा धारको जी निरमल तरसन पाय।**
**सुभग पात्र धर लाइयौ जी पूजन को जिन पाय॥**
**उत्तर दिश जिन थान जी॥१॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

**चन्दन बावन नीरतें जी घसि कर पातर धार।**
**लई अरघ कर आपनै जी पूजन जिन भव वारि॥ उ० ॥२॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

**अक्षत सार सुहावना जी मुकता फल से जोय।**
**खण्ड विना शुभ वीनके जी पूजौं जिनपद सोय॥ उ० ॥३॥**

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल मनोहर गंध का जी वरन भले सुखकार।
कलपवेल से लाइया जी पूजन जिनपद सार॥
उत्तर दिश जिन थान जी॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रस नैवेद ले जी मोदकादि बनवाय।
पातर शुभ में घालिके जी जिनके पूजों पाय॥ उ०॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक मणिमय सोहना जी भली जाति के धार।
तिनकी कर शुभ आरती जी पूजों जिनपद सार॥ उ०॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप करी शोभा मई जी अगर चन्दना लाय।
सकल पीस इकठी करी जी पूजन को जिन पाय॥ उ०॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग बदाम ले जी खारिक पिस्ता लाय।
पुंगीफल आदिक फलों तें पूजों जिनके पाय॥ उ०॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत सही जी पहुप भले नैवेद।
दीप धूप फल अर्घ ले जी पूजों जिन निरखेद॥ उ०॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

# अथ प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

नन्दीश्वर उत्तरदिश गिर अंजन सही।
ताके ऊपर है जिन थानक पुन्यमही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या अंजनगिर पूरब वापी है सही।
ता मध दधिगिर शीश थान जिन शुभ मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिशांजनगिरेः पूर्ववापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख रतकर जानिए।
तापै है जिन भवन महा पुन थानिए॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पूर्वदिशवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वापिक के ही मुख जानों रतकरा।
ता ऊपर जिन थान सकल पातक हरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पूर्ववापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर नन्दीश्वर अंजन दक्षिण सही।
वापिक मध दधिगिर ऊपर जिनथल मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥५॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः दक्षिणवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या वापिक के मुख ही रतकर गिर सही।
ता ऊपर जिन थान अकीर्तम शुभ मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥६॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या ही वापिक के मुख रतकर दूसरा।
तापै जिनका थान महा शुभ तें भरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥७॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्तरदिश्यंजनगिरेर्दक्षिणवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर अंजनगिर की पच्छम जानिए।
वापिक मध दधिगिरपै जिनथल मानिए॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥८॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पश्चिमवापिकामध्यदधिगिरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

या ही वापिक के मुख ऊपर रतकरो।
तापै जिनथानक है सो हम अघहरो॥

सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥९॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इसही वापिक के मुख जानो रतकरा।
तापै जिनको थान भविन को अघहरा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१०॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेः पश्चिमवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर उत्तर अंजन उत्तर सही।
मध्य वापिका दधिगिर पै जिनथल मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥११॥

ॐ ह्रींनन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामध्यदधिगिरिसम्बन्धिजिनालयायार्घं०

इसही वापिक के मुख ऊपर है सही।
रतिकर के सिर ऊपर जिनथल की मही॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१२॥

ॐ ह्रींनन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामुखप्रथमरतिकरसम्बन्धिजिना०

याही वापिक मुख ऊपर रतकर कहा।
तापै जिनथल जान हरष मनमें लहा॥
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ॥१३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरेरुत्तरवापिकामुखद्वितीयरतिकरसम्बन्धि-जिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर उत्तर दिसको इम जानिए।
त्रयोदश जिनके थान महापुन्य खानिए।।
सुर तौ परतछ जाय जजैं जिनपद तहाँ।
हम तौ भावन भाय अरघ जजहैं इहाँ।।१४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्योत्तरदिश्यंजनगिरिसम्बन्धित्रयोदशजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाल

(दोहा)

नन्दीश्वर उत्तर दिसा, कहे जिनेश्वर थान।
तिनकी थुति भाषूं सही, करो मोही अघ हानि।।१।।

(वेसरी छन्द)

नन्दीश्वर उत्तर को जानों। है जिन भवन पाप हर थानों।
परतछ तौ जहाँ अमरा जावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।२।।

देवन को मौसर है भाई। करें बिनंती भक्ति उपाई।
ताके फल शिव मारग पावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।३।।

मुनि गणधर को मौसर नाहीं। दरसन नन्दीश्वर के माहीं।
तौ औरन की को मुख गावै। हमसे दीन भावना भावैं।।४।।

इन्द्रन की शक्ति है भारी। और देव सब पुन्य अधिकारी।
नन्दीश्वर जप पूज करावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।५।।

नन्दीश्वर उत्तरको जानों। पूजैं फिर जिनजी तो थानौं।
ते या भव में उच्च कहावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।६।।

सफल भवांतर तबही जानों। जब होवे नन्दीश्वर जानौं।
पूजें जिन अर पुन्य बढ़ावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।७।।

यहाँ तौ बिनती हम इम ठानैं। देव जिनेश्वर गुणकर गानैं।
अहो देव सब अन्तर पावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।८।।

अब जिनदेव करो विधि ऐसी। नन्दीश्वर पूजें जिन जैसी।
और घनी मुख कबलौ गावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।६।।

दीनदयाल भाव की जानौं। तातैं कहै न परै कहानौं।
मनसा पूरी कर कवि गावैं। हमसे दीन भावना भावैं।।१०।।

(दोहा)

ऐसी बिनती करन कों, मनसा रहै अपार।
नन्दीश्वर कब जाँय हम, उर की करैं पुकार।।११।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिशि त्रयोदशचैत्यालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

*इति उत्तरदिशा पूजा समाप्त*

સહજ ચિદાનંદ.

## अथ समुच्चय आरती

(दोहा)

अष्टम दीप नन्दीसुरा, उत्तम तीरथ थान।
मनुष देह पहुँचे नहीं, पूजें सुर पुन्यवान।।१।।
ताकी गुणमाला कहौं, सुनौं संत धर भाव।
जो सुनि वहाँ चलनौ चहै, बढ़ै राग चित्त चाव।।२।।

(मुणयणाणंद की चाल)

दीप दधमाल की कथा सुखदाय है।
सुनै उर धरे तब ज्ञान बहु पाय है।।

दीप जम्बू पहल लाख जोजन मही।
मेर इक तास मध और रचना कही॥३॥

तास को वेढि गिर चार दधि जानिये।
ता विषैं दीप बहु देव खग थानिये॥
आदि दिग चारु रचना घनी है सही।
व्यास दो लाख जोजन लखो जिन कही॥४॥

धातकी खण्ड पूजा गिरद भाय जी।
मेर जुग पूर्व पच्छिम धरा पाय जी॥
चार लाख जोजना व्यास विस्तार है।
और रचना घनी सुरत उनहार है॥५॥

आठ लख जोजना समुद कालोदधा।
ता परै तीसरा दीप पुहकर सधा॥
बीच ताके कहा मानषोत्तर सही।
व्यास षोडश लखौ जोजना धुनि कही॥६॥

मेर जुगही कहे अर्ध पुहकर धरा।
पूर्व पच्छिम दिशा अधिक महिमा करा॥
चार लघु मेर यह सहस चौरासिया।
त्वंग पन जानि इम और धुनि भाषिया॥७॥

ता परै तीसरा समुद आवै बड़ा।
लाख बत्तीस जोजन सुरत में पड़ा॥
दीप चौथा जुजन लाख चौंसठ सही।
समुद चौथा तनों व्यास सुनि अब रही॥८॥

लाख इक सौ अठाईस जोजन कहा।
पञ्चमा दीप विस्तार मुनि इम चहा॥
छप्पन अधिक लाख दोय सत होय जी।
पांचमें जलधि की कथा कहों तोहि जी॥९॥

पांच सौ लाख अरु अधिक बारा सही।
दीप षष्टम सहस लाख चौबिस कही॥
बीस है लाख अरु अधिक अड़ताल जी।
जाम इम समुद्र षष्टम जला पाल जी॥१०॥

लाख चालीस से अधिक छिनवै गिनौ।
सातमौ दीप विस्तार जिन इम भनौ॥
लाख इक्यासि सै अधिक लख बानवै।
सातमें समुद को व्यास इम जानवै॥११॥

एक सै त्रेसठ कोटि मन लाइए।
अधिक लख और चौरासिया गाइए॥
दीप अष्टम तनो इतो विस्तार जी।
जान इम दुगुन दुगुनौ सबै सार जी॥१२॥

दीप अष्टम विषै चार ही दिस सही।
चार अंजन गिरा स्याम मणिमय कही॥
वापिका चार दिश जानि षोडश बड़ी।
बीच तिन सबन के दधिगिरा लखमड़ी॥१३॥

वापिका सकल जल खानि चव कूटि की।
रतकरा तिन विषै जुगल जुग खूंट की॥
सकल रतिकर गिनै होय बत्तीस जी।
सबै गिर मेल होय बावना दीस जी॥१४॥

शीश सबही तनै गेह जिनराय है।
जजें भवजीव के सधैं सब काज हैं॥
गेह बावन सकल कनक रतना जड़े।
बिम्ब जिनदेव के अधिक उपमा भरे॥१५॥

मास कातिक तथा फाग मन लाय जी।
जानि अषाढ़ इन शुकलपक्ष पाय जी॥

इन दिना इन्द्र सब देव संग लायकैं।
जाँय नन्दीश्वरे दीप हरषायकैं॥१६॥

एक इक इन्द्र दोय दोय पहरौं सही।
एक दिस पूज जिस पदनको तिस मही॥
च्यार हर इमै जिन पूज्य बसु दिन करें।
शेष सुर सकल मुख शब्द जय उच्चरें॥१७॥

भक्ति तैं भरे गुन गान जिन गाय हैं।
तास फल ही सकल पाप को दाहि हैं॥
एक भव पायकैं मोक्ष जावै सही।
भक्ति जिन देव फल देय जिन धुनि कही॥१८॥

देव बिन मनुष्य तौ जाय नहीं कोय जी।
देव ही तीन रित जजै मद खोय जी॥
और भी दिनन में जात सुर सेव को।
नचैं बहु गान कर जजैं जिनदेव को॥१९॥

नन्दीश्वर जाय जिन पूज ते देव भी।
मास यहाँ पुन्य द्रव्य सो नहीं केव भी॥
इन तीन काय इस बात आछी बनी।
मोक्ष मग नय थकी मनुष की शुभ गिनी॥२०॥

धन्य हैं जीव जे जाय नन्दीश्वरा।
जजैं जिन पाय थुति गाय पातिक हरा॥
विनंती यह जिन देहि ओसर इसौ।
जाय उस दीप प्रभु पाय पूजैं तिसौ॥२१॥

और नहीं चाह जिन सेव बिन पाइए।
रहे निज दिन इसी प्रभू गुन गाइए॥
मोक्ष नहिं बने इस सेव तुम दे भली।
बिनती सुनो जिन दयानिधि सुखरली॥२२॥

(दोहा)

नन्दीश्वर जिनगेह की, माल धरै गुन जेह।
भली ''टेक'' ताकी भई, पूजे जिन कर नेह॥२३॥

कबहूँ ''टेक'' निवार अघ, पूजत है तुम पाय।
ता फल मंगल संपजै, जय जय जय जिनराय॥२४॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

*इति नन्दीश्वर पूजन विधान समाप्त*

# श्री त्रैलोक्य जिनालय पूजा

(दोहा)

द्वीप अढाई के विषैं, भये जिनन्द अनंत।
ह्वैंगे केवलज्ञानमय, नाथ अनन्तानन्त॥१॥
तिनकौं बंदन करि सदा, त्रिजग जिनालय जेह।
तिन सबकौ पूजन करौं, मन वच तन धर नेह॥२॥

गाथा (त्रैलोक्यसारकी)

तिहुवणजिणिंदगेहे, अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे।
वणकुमरविडंग्गामरखेचरवंदिए वंदे॥१०१७॥

(अडिल्ल)

तीन लोक के कृत्य, अकृत्य जिनालय जे।
इन्द्र नरेन्द्र खगेन्द्र, नमावत भाल जे॥
तिनकों वंदत जे, त्रिभुवन थिति गायकें।
नित सबकों मैं बंदों शीश नवायकें॥३॥

(दोहा)

**क्रीतम और अक्रीतमा, जिनप्रतिमा जिनगेह।**
**तिन सबकौ पूजन करौं, धारौं धर्म सनेह॥४॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धिजिनालयेभ्यो अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

## अष्टक

(सुन्दरी छन्द)

**उदक क्षीर समुद्र समान जी , कनक भाजन में भर आन जी।**
**हरष धार महा छविवंत जे, अक्रीतम जिन गाय अहं जजे॥१॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

**मलय–चन्दनगारि सुल्यायकें। अति सुगंध रही महकायकें। हरष० ॥२॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

**धवल शालि पखारि पिछानकें। रजत थार विषै भर आनकें। हरष० ॥३॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि०

**वर अनेक मनोहर फूल जे। तिनहिं लेय सुगंध सथूल[1] जे। हरष० ॥४॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

**सरस नेवज थाल सँजोयकें। परम मूरति श्रीजिन जोयकें[2]। हरष० ॥५॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

**दिपत दीपक रत्न सुहावने। जगमगाति सबै मन भावने। हरष० ॥६॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

**परम धूप दशंग सुवास ले। अलि समूह रहे झुक आश ले। हरष० ॥७॥**

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

---
१ बड़ी। २ देखकर।

उकत[1] आगम जे फल सारजी। विविध भाँतिन के कर धार जी।
हरष धार महा छविवंत जे, अक्रीतम जिन गाय अहं जजे॥८॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

सलिल आदिक लै वसु विधि सबै। विनयपूर्वक प्रभु-दिशि[2] ह्वै तबै। हरष०॥९॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०

परम पावन सुन्दर सोहने। जगत जीव तने मनमोहने॥
धन[3] प्रतक्ष जजैं लख ते जहाँ। हम परोक्ष त्रिकाल जजैं यहाँ॥१०॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं नि०

## प्रत्येक पूजा

(दोहा)

तीन लोकमें राजते, सदन अकृत्रिम जेह।
तिन सबको सामान्यकरि, व्यासादिक वरणेह॥१॥

(गाथा)

आयामदलं वासं, उभयदलं जिणधराणमुच्चत्तं।
दारुदयदलं वासं, अणिद्दाराणि तस्सद्धं॥६७८॥

(अडिल्ल)

जिनगृह अचल मनोग, भुवनत्रयके विखै।
उत्तम मध्यम, और जघन्य सबै अखै॥
तिनकी अब लम्बाई, क्रमते जानिए।
जोजन शतक पचास, पचीस प्रमानिए॥२॥

---

१. कहे हुए। २. भगवान की ओर। ३. वे धन्य हैं जे साक्षात् वंदना पूजन करते हैं।

(हरिगीतिका)

जिनतें सु अर्द्ध प्रमान चौड़े, अब ऊँचाई तिन तनी।
लम्बाई चौड़ाई मिलायें, आघकर[१] जोजन भनी।।
त्रय भांति जिनगृह द्वार गुरु, तिन उदय जोजन खास है।
सो जान सोलह आठ चव, तिन अधिकारी यह व्यास है।।३।।

उत्कृष्ट मध्यम जघन चैत्यालय, न लघु द्वारन की।
इमि आध वसु चव दोय जोजन, व्यास इन आधानकी।।
उत्कृष्ट मध्यम जघन जिनगृह, जान व्यासादिक भनो।
क्रमतें सु आधा आध जानहु, अब विशेष तिनो सुनो।।४।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिमजिनालयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

वरमज्झिमअवराणं, दलक्कमं भद्दसालणंदणगा।
णंदीसरगविमाणगजिणालया होंति तेट्ठा हु।।६७६।।

सोमणसरुजग डलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा।
कुलगिरिगा विय मज्झिम जिणालया पांडुगा अघरा।।६८०।।

(चाल–छन्द)

वर भद्रसाल सुखकारी, नन्दनवन सार निहारी।
नन्दीश्वर द्वीप गहारी, वैमानिक जान मँझारी।।५।।

इन विषैं जिनालय सारे, उत्कृष्ट सबै सुखकारे।
तहाँ पूजन सुरगन जाहीं, हम पूजत इह थल पाहीं।।६।।

ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोमनस अरन मनहारे, कुण्डलगिरि रुचकपहारे।
वक्षार कुलाचल शीश, पुनि इश्वाकार गिरीस।।७।।

१. लम्बाई–चौड़ाई के जोड़ से आधी।

गिरि मानषोत्र के माहीं, मध्यम जिनधाम कहाहीं।
तहाँ पूजन सुरगन जाहीं, हम पूजत इस थल माहीं॥८॥

ॐ ह्रीं सर्वमध्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन मांहि जिनालै, ते सर्व जघन्य कहालै।
तहाँ पूजत सुरगन जाहीं, हम पूजत इस थल पाहीं॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वजघन्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

जोयणसय आयामं दलगाढं सलोसं हु दारुदयं।
जेट्ठाणं गिहपासे आणिद्दाराणि दोद्दो दु॥९८१॥

(गीता छन्द)

चिन नींव जोजन आध–शत आयाम[१] जोजन सबनिकी।
जोजन जु सोलह द्वार तुंग सु द्वार सन्मुख दिशनिकी॥
अरु जिनगृहके दोउ पारसवनमें दो दो द्वार हैं।
छोटे बखाने फेर पीछे, द्वार नाहीं धार हैं॥१०॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट जिनालय जिनकी लम्बाई १०० योजन, नींव आध योजन, बड़े द्वारकी दिशा सन्मुख अर सोला योजन ऊँची, और दो दो द्वार छोटे, दोनों पार्श्वन विषैं जिनालय पीछे द्वार नाहीं ऐसे जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

वेयड्ढजंबुसामलिजिणभवणाणं तु कोस आयामं।
सेसाणं सगजोग्गं, आयामं होदि जिणदिट्ठं॥९८२॥

(हरिगीत छन्द)

वेताढ्य जंबु कुरुह शाल्मलि, पर सु जिन गृह लेखिए।
तिनकी लम्बाई कोस एक, प्रमान पुनि अवशेषिए॥
विंतरन भावन ज्योतिषी, इत्यादि जिनगृह–पांति हैं।
जथा जोग तिनि आयाम, श्रीजिनदेव लखि बहुभाँति हैं॥११॥

ॐ ह्रीं उत्कृष्ट आदि विशेषणरहित जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं नि०

---

१ लम्बाई।

(गाथा)

चउगोउरमणिसालति वीहिं पडि माणथंभ णवथूहा।
वणधयचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं ॥९८३॥

(कवित्त)

सर्व जिन सद्म चार द्वारनतें शोभनीक।
मणिमई तीन कोटि लसत उतंग हैं।
द्वारनकर जावेकी गली तिन्नमें एक एक।
वीथी प्रति एक एक सोहें मानथंभ हैं॥
और नव नव तूप फेरि तीन तीन कोट।
बीच बीच अन्तराल वाहि वन झूम हैं।
द्विती तृती कोट बीच धुजायें फहरात।
तृती कोट चैत्यालय बीच चैतभूमि हैं॥१२॥

ॐ ह्रीं सर्व जिनभवनके चार द्वार संयुक्त मणिमई तीन कोट, बीथी, प्रति मानथंभ, नव तूप, अशोक सप्तच्छद, चंपक, आम्र इन मई चार वनन मध्य तीन पीठकर संयुक्त मणिमई डाली, पान, फूलकर संयुक्त ऐसे चारों वननके मध्य प्राप्त जिनबिम्ब सहित चैत्यवृक्ष जिनबिम्बेभ्योर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

जिणभवणे अट्ठसया गब्भगिहा रयणथंभवं तत्थ।
देवच्छन्दो हेमो दुगअडचउवासदीहुदओ ॥९८४॥

(सुन्दरी छन्द)

तिन जिनालय में वसु एकसौ[१] गरभगेह बने सुख देतसो।
अरु तहाँ जिनमन्दिर मध्यने, रतनथंभ सुवर्णमई बने॥१३॥

जुगल जोजन चोड़िय है तिनै, आठ जोजन लम्बाई भनै।
तुरिय जोजन ऊँचपनो गिने, देवच्छद[२] छप्पर सोहने॥१४॥

ॐ ह्रीं गर्भगृहदेवच्छदछप्परमंडपसंयुक्तजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं नि०

१. एकसौ आठ, २. मंडप।

(गाथा)

सिंहासणादिसहिया, विणीलकुन्तल सुवज्जमयदंता।
विद्रुमअहरा किसलयसोहायरहत्थपायतला ॥६८५॥
दसतालमाणलक्खणभरिया, पेक्खत इव वदंता वा।
पुरुजिणतुंगा पडिमा, रयणयमा अट्ठअहियसया ॥६८६॥

(ढाल—मंगल की)

सिंहासन छत्रादि, सहित प्रतिबिम्ब ते।
नीलवरन तिन केश, शिखापर शोभते।
वज्रमई तिन दसन[१], ओंठ आरक्त हैं।
वर नवीन कोंपल समकर पद रक्त हैं॥१५॥

(हरिगीत)

ऐसे जिनेशाकार पुद्गलरूप आपहिं परनए।
दस ताल मान प्रमान ताल, प्रमान द्वादश अंगुलए।
जिनराजवत विहसेक बोलें, रिषभवत[२] तन मानिए।
ते रतनमय शत आठ प्रतिगृह गर्भ इक इक जानिए॥१६॥

ॐ ह्रीं एकसौ आठ गर्भगृह तिनमें सिंहासनछत्रादि संयुक्त रत्नमय विराजमान एक एक जिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

चमरकरागगजक्खगवत्तीसंमिहुणगेहि पुह जुत्ता।
सरसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्ठु सोहंति॥६८७॥
सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं।
रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमवि होदि॥६८८॥

(ढाल—मंगल की)

नागकुमार अरु जक्ष जुगल बत्तीस ते।
एक एक गृहगर्भ खड़े समरूप ते।

१. दांत २. ऋषभप्रभुके शरीरके बराबर ५०० धनुष।

पकतिबद्ध बरोबर सोहें जुदे जुदे।
चौसठ तिनके चमर हस्त चित्रित खुदे॥१७॥

(हरिगीत)

खुदे तिनकर वीर्यवान, जिनेश पुनि पार्श्वन तनै।
श्रीदेवि अरु सरसुती देवी यक्ष सर्वाणह कनै।
अरु यक्ष सनत्कुमार, इन चउ रूपके प्रतिबिम्ब हैं।
प्र०—श्रीधनरूप सरसुति वानि, क्यों प्रतिबिम्ब हैं ?॥१८॥

(अडिल्ल)

उ०—श्रीदेवी सरस्वति दोऊ उत्कृष्ट हैं।
तात्तें इनकी देवांगन आकृत्ति हैं॥
बहुर यक्ष ये दोऊ भक्त विशेष हैं।
तातैं तिन आकार अनादि लिखेस हैं॥१९॥

ॐ ह्रीं नागकुमार और यक्षनके बत्तीस जुगल गर्भगृह प्रति खड़े चौसठ चंवर हैं कर जिसके, प्रतिमाओंके दोनों तरफ श्रीलक्ष्मी और सरस्वतीदेवी सर्वाह्न सनत्कुमार यक्ष इन चित्रामोंकरयुक्त जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

भिंगारकलसदप्पणवीयणधयचामरादवत्तमहा।
सुवइट्ठ मंगलाणि य, अट्ठाहियसयाणि पत्तेयं॥९८९॥

(सुन्दरी छन्द)

निकट श्री प्रतिबिम्बनके जहाँ, खचित अष्ट सु मंगल द्रव्य तहाँ।
गन अठोत्तर सौ इक जातकी सरव मंगलद्रव्य सुहावती॥२०॥

ॐ ह्रीं चमर छत्र कलश झालर सांथिया ठोना पंखा दर्पण इन अष्टमंगल द्रव्योंके चित्रोंकर संयुक्त जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(आगे गर्भगृहके बाहरका स्वरूप कहते हैं :—)

(गाथा)

मणिकणयपुप्फसोहियदेवच्छंदस्य पुव्वदो मज्झे।
वसईए रूप्पकंचणघणसहस्साणि बत्तीसं॥९९०॥

(ढाल—जोगीराइसा)

मनि सुवरनमय पुष्पनि कर जुत, देवच्छदगृह सोहे।
ताके पूर्व विषै बस्ती जो, जिनमन्दिर मन मोहे॥
ताके मध्य विषै रूपामय, कंचन वर्ण घड़े हैं।
सहस बत्तीस अनादि निधन ते, पृथिवी माँहि धरे हैं॥२१॥

ॐ ह्रीं सोमकांत सुवर्ण रूपामय बत्तीस हजार घड़े संयुक्त जिनालये जिनबिम्बेभ्योऽर्घं नि०

(गाथा)

महदारस्स दुपासे, चउवीससहस्समत्थि धूवघडा।
दारबहिं पासदुगे, अट्ठसहस्साणि मणिमाला॥६६१॥
तम्मज्झ हेममाला, चउवीसं वदणमंडवे हेमा।
कलसामाला सोलस, सोलसहस्साणि धूवघडा॥६६२॥

(अडिल्ल)

महाद्वार जो बड़े द्वार के पार्श्व दो,
चौबिस सहस धूप घट पुनि मह द्वार दो।
ताहि पास दो ओर विषैं लूमे तहाँ,
आठ सहस मनिमय माला झूमे वहाँ॥२२॥

(गीतीका छन्द)

तिनि माल बिच बिच सहस चौबिस, माल सुवरनमय जहाँ।
हैं बहुर तिन महिं द्वार आगे, सुमुखमण्डप हैं तहाँ॥
तीस विषैं कलश सुवर्णमाला, सोल सोलह सहस हैं।
बहुरि सोलह सहस तीन मधि, धूप घट महकहत हैं॥२३॥

ॐ ह्रीं बड़े द्वारके पार्श्वनमें द्वारके आगे मण्डपमें धूप घटमाला संयुक्त जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

मुहुरझणझणणिणादा, मोत्तियमणिणिम्मिया सकिंकिणिया।
बहुविहघण्टाजाला, रइदा सोहंति तम्मज्झे॥६६३॥

(अडिल्ल)

तिन सन्मुख मण्डपके, मध घण्टा बड़े।
मीठे झुन झुन शब्द, करें मोतिन जड़े।
किंकिन छोटी घंटि सहित बहु नुक्ति हैं।
घटन जुत्थ अनेक, सुरचना जुक्त हैं।।२४।।

ॐ ह्रीं घण्टा आदि अनेक रचना संयुक्त अनेक जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं नि०

(अब तिन मन्दिरोंके छोटे द्वारोंका स्वरूप कहते हैं :—)

(गाथा)

वसईमज्झगदक्खिणउत्तरतणुदारगे तदर्द्धं हु।
तप्पुट्ठं मणिकंचणमालडचउवीसगसहस्सं।।६६४।।

(गीतिका छन्द)

जिन सदन दक्खिन अवर उत्तर, पार्श्वके मध्यम विषैं।
तहँ द्वार छोटे जान यहँ पुनि, बड़े द्वारिनतें लिखैं।।
मणिमाल आदिकका प्रमान सु पूर्वतें आधा यहाँ।
वसु सहस माला[1] सदन पीछे, सहस चौबिस[2] हैं तहाँ।।२५।।

ॐ ह्रीं बड़े द्वारोंसे मणिमाला आदिकका प्रमान यहाँ आधे छोटे द्वार संयुक्त जिनालय जिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(ढाल—मंगल की)

माला तो चौगिरद भीतके लूमती,
घड़े रत्नमय ऊपर धूप सु घूमती।
घंटा मंडप बीच सु लूमत जानिए,
इत्यादिक रचना जिनमन्दिर मानिए।।२६।।

मानिए कोट जु तीन वेदी, पांच भूमि सु आठ ही।
इत्यादि समोशरण विभूति, कहा पढ़े जिन पाठ ही।।

१. मणिमाला ८०००। २. सुवर्णमाला २४०००।

जो सुनन चाहि विशेष भविजन, तो त्रिलोक जु सार ही।
सुन होहु हर्षित धनपती, कहिं नाहि पावत पार ही॥२७॥

ॐ ह्रीं समवशरण अनादिनिधनस्थितअनेकरचनासंयुक्तजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(ढाल—त्रिभुवन गुरुस्वामी की)

पुनि जे चैत्यालय जी, सामायिकवाले जी।
तिनि आदि क्रिया करने के थान हैं जी॥
हैं बंदन मंडप जी, तिन शोभा अखंडप जी।
हैं अस्नान करने के अस्थान बने जहाँ जी॥

अभिषेक सुमंडप जी, नगजड़ित महंडपजी।
हैं नृत्य करने के अस्थान सुहावने जी॥
नर्त्तन[1] वर मंडपजी, लखते अघ खंडप जी।
अवलोक करने के स्थान बने जहाँ जी॥२८॥

अवलोकन मंडपजी, जिनि शोभ अखंडपजी।
गिरिक्रीड़ा करने के गृह अस्थान हैं जी॥
श्रुतिभ्यासन थानक जी, सुगुनन गृह मानिक जी।
विस्तीरण उत्तम पट चित्रामादि जी॥
लखने वर स्थानक जी, पटिसाला मानिक जी।
जिनकर संयुक्त जिनालय शोभिते जी॥२९॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्धि जिनमन्दिर सामायिकादि क्रिया करनेके स्थान संयुक्त जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

जिणसिद्धाणं पडिमा, अकिट्टिमा, किट्टिमा दु आदिसोहा।
रयणमया हेममया, रुप्पमया ताणि वंदामि॥१०१५॥

---

१. नृत्य करनेके

(अडिल्ल)

अकृत्रिम सु अनादिनिधन वपु परनए।
अरु कृत्रिम जी भविजीवन करते भए।।
रतनमय ते हेममई रूपामई।
अरहंतन अरु सिद्धन की प्रतिमा कही।।
तिन बिम्बनको मैं बंदों थुतिकर अदा।
धनि जे जिय तो परतछ लखि पूजैं सदा।।३०।।

ॐ ह्रीं जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

भवणेसु सत्तकोडि, बावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा।
भवणामरिंदमहिया, भवणसमा तामि वंदामि।।२०८।।

(सुन्दरी छन्द)

सात कोडि बहत्तर लाख ते, भवन तुल्य मनोहर भाखि ते।
चमर आदि जजैं हर सारजे, भवनवासिनके जिनआगार जे।।३१।।

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवोंके सात कोडि बहत्तरलाख जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

णमह णरलोयजिणधर, चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि।
बावण्णं चउ चउरो, णंदीसर कुण्डले रुचगे।।५६१।।

(भुजंगी छन्द)

मनुष्यलोकमें चारसै दोय घाटी,
जिनालय नमो ते महा सर्मपाटी[१]।
बहुरि लोक तिर्जग विषैं दीप आठी[२],
प्रभु गेह बावन जजौं कर्म काटी।।३२।।

---

१. आनन्द। २. आठवाँ द्वीप नन्दीश्वर।

कहे चार कुण्डल गिरो पापहारी,
बने ते नमों मैं परम भक्ति धारी।
बने गिरि रुचिक पै चार कर्महारी,
जजैं सार सुन्दर सरस अर्घ धारी॥३३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्र और मध्यलोकके (त्रिजग क्षेत्रके) चारसै अट्ठावन जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

मंदरकुलवक्खारिषु, मणुसुत्तररुप्पजम्बुसामलिसु।
सीदी तीसं तु सयं, चउ चउ सत्तरिसयं दुपणं॥५६२॥

(भुजंगी छन्द)

महामेरुनपै असी देव आलय,
कुलाचल शिखर तीस सिर तीस छाजय।
गजदन्त गिरि बीस पै बीस आलय,
ऐसा शिखर वछार गिरि पै जिनालय॥३४॥

इष्वाकार चौ चारि मानषोत्तरालय,
शतक एक सत्तर जु वैताढ्य गाजय।
देव उत्तर कुरु दस पै दस हैं जिनालय,
मनुष्यलोक में जिनगेह ये विराजय॥३५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यक्षेत्रसम्बन्धि तीनसै अठानवै जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

तिण्णिसयजोयणाणं, कदिहिदपदरस्य संखभागमिदे।
भौमाणं जिणगेहे, गणणातीदे णमंसामि॥२५०॥

(भुजंगी छन्द)

जोजन महत तीनसै का किए वर्ग,
जोजन भए सहस नव्वै सवेई।

बहुरि एक जोजन सात लख और,
अडसठ सहस अंगुल होय तेई॥
ऐसे सहस नव्वै करे जोजनोंके जिते,
होहि अंगुल त्रिरासिक करेही।
सो ही वर्गरासिक तिनोंका गुना कार,
भागाहार सतती जगत्प्रतर देई॥३६॥

ॐ ह्रीं तीनसौ योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरको दिए जो प्रमानि होवे उसके संख्यातवें भाग प्रमान व्यंतरदेव सम्बन्धि जिनमन्दिर गननातीत कहिए असंख्यात हैं, लौकिक गिनती कर न गिने जाँय, ऐसे कर पूर्वोक्त व्यंतर प्रमानको संख्यातकी सहनांनी ऐसी कही, इतने जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

वेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरस्स संखभागमिदे।
जोइसजिणिंदगेहे, गणणातीदे णमंसामि॥३०२॥

(अडिल्ल)

दोय शत छप्पन अँगुलके वर्ग का,
भाग जगत्प्रतर को दिए जो प्रमान का।
ताके संख्यातवें भाग परमान हैं,
असंख्यात जिनेन्द्र मन्दिर अभिराम हैं॥३७॥

ॐ ह्रीं दो सौ छप्पन का वर्ग पनठी[1] सुच्यांगुल का वर्ग प्रतरांगुल सो पनिठी प्रमान प्रतरांगुल का भाग जगत्प्रतरको दीजिए, इतने ज्योतिष बिम्ब हैं, सोई असंख्यात द्वीप समुद्र सम्बन्धि सर्वज्योतिषी बिम्बनका प्रमान जान, ऐसे जिनालयेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे।
सव्वे विमाणसमणगजिणिंदगेहे णमंसामि॥४७१॥

१. पैसठ हजार तीनसौ छत्तीस।

(अडिल्ल)

लाख चौरासी सहस सतानवै मानिए,
तेइस सर्व विमान जिनालय जानिए।
एक एक सुर जान जिनेश्वर थोक है,
ऊर्ध्वलोकके भवन तिन्हें पगधोक है॥३८॥

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकस्य चतुरशीतिलक्ष नवतिशतसहस्र त्रयोविंशतिविमानसंख्या इन सर्व जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

कोडी लक्ख सहस्सं, अट्ठय छप्पण्ण सत्तणउदी य।
चउसदमेगासीदी, गणणगए चेदिए वन्दे॥१०१६॥

(गीतिका छन्द)

वसु कोडि छप्पन लाख संतानवे सहस बखानिए।
चारसै इक्यासी सुलोकाकाश मांहि प्रमानिए॥
इह भवनवासी आदि जिनगृह लोकमधि संख्या भनी।
ज्योतिषी व्यन्तर भवन सम्बन्धि असंख्याते तनी॥३९॥

ॐ ह्रीं लोकाकाशसंबंधीसंयुक्तसमुदायरूपजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

णव कोडि सया पनवीसा तेवन लाख सहस सत्तावीसा।
नवसै अवर अठाला जिनपडिमा अकट्टिमा वन्दे॥

(सवैया तेइसा)

नौ सौ पचीसं करोर तिरेपन, लाख हजार सत्ताइस गाए।
और कहे नव सै अड़तालि, त्रिलोक जिनालयके दरसाए॥
ये प्रतिबिम्ब विराजत हैं, इक एक जिनालय सौ अठ गाए।
जोर करे इकठे तिनको 'जगराम' नमै नित शीश नवाए॥४०॥

ॐ ह्रीं अनन्त सम्बन्धि मंगल के अर्थ संख्याकार संयुक्त जे त्रिलोक सम्बन्धि जिनालयोंमें नौसे पचीस करोड़ त्रेपन लाख सत्ताईस हजार नौसे अड़तालीस श्री जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

(दोहा)

तीन भवनके सदन जिन, तिन प्रतिबिम्ब विशाल।
भवनन जुत प्रत्येक सब, वरनौं वर जयमाल॥१॥

(भुजंगी छंद)

जिनालय बहत्तर लाख सात कोडी,
तहाँ आठसै बिम्ब तेतीस कोडी।
छिहत्तर कहे लाख सुन्दर सुहाए,
नमों बिम्ब पातालके माथ नाए॥२॥

प्रथम जम्बूद्वीप विषैं जनदिवाले,
अठत्तर अक्रीतम महा शोभवाले।
सहस आठ शत चार चौवीस गाए,
तहाँ बिम्ब राजे तिने शीश नाए॥३॥

दुती धातकी खंडके जिनगृहाले,
अठावन अधिक एक शत विशाले।
सहस सत्र चौसठ तहाँ बिम्बदरसी,
नमों हाथ धर माथ जिन गुन समरसी॥४॥

तिरजन्च धरा क्षेत्र में चैत्य सोहें,
कहे दुगुन बत्तीस लख चित्त मोहें।
सहस षट शतक नव द्वादश बखाने,
नमों हाथ धर माथ प्रतिबिम्ब जाने॥५॥

असंख्यात व्यंतर विवुध ज्योतिषनके,
जिनालय असंख्यात अविचल सबनके।
असंख्यात जिनबिम्ब राजैं तिनोंमें,
नमों हाथ धर माथ अरजी करों मैं॥६॥

प्रथम नर्क ते ऊर्ध्वगृह लख चुरासी,
सहस सतानवे तेईस सर्व भासी।
प्रतिकोड़ि इक नव छिहत्तर लखासी,
अठत्तर सहस चारसै अरु चुरासी।।७।।

नदी सरस सीता सितोदा तडाग्रे,
सहस शैल कंचन कहे तिन सिराग्रे।
अद्‌भुत महान सहस आनन्दकारी,
तिनों को जु अष्टांग वंदना हमारी।।८।।

प्रथम भरत नर इन्द्र कैलाश कूटे,
कहाँ बिम्ब निर्मापि अघवृन्द छूटे।
बहुर भव्य जीवन करे मध्यलोके,
तिन्हें प्राप्त ही सदा नमें सुक्ख होते।।९।।

महा एक सतकक्षेत्र सत्तर जु मुक्ता,
नमों पंचकल्यानक सार जुक्ता।
कहे कृत कृत्यं जिनालय त्रिलोकं,
सबै बिम्ब राजे हृदै धार धोकं।।१०।।

अतीता अनागत कहे वर्तमानं,
जिनेन्द्रादि रत्नत्रयं भूषितानं।
जगत में कहे सार तीरथ महानी,
नमें सो 'जगतराम' अष्टांग आनी।।११।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यसम्बन्ध्यकृत्रिम जिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(उक्तं च)

यावन्ति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिपरीत्य नमाम्यहम्।।

(अडिल्ल)

जो इह पूजन सार करे अभ्यासने,
सकल तीर्थकी वंदन कीनी तासने।
रोग किलेश नशे धन धान्य तु आवहीं,
अनुक्रम सों शिवराज परमपद पावहीं॥१२॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

॥ *इति श्री त्रैलोक्यजिनालय पूजा समाप्त* ॥

## अथ कुण्डलद्वीप के बीच कुण्डलगिरि के चारों दिश चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा

### अथ स्थापना

(मदअवलिप्त कपोल छन्द)

कुण्डल नाम द्वीप ग्यारमो, ताके बीच कहो गण धार।
घेरे आधे द्वीप कनक द्युति, कुण्डलगिर कुण्डल आकार॥
चारों दिशा चार जिनमन्दिर, सुरपति जजत भक्ति उर धार।
हम तिनकी आह्वानन विधि कर, जिनपद पूजत अष्ट प्रकार॥१॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीप मध्ये कुण्डलगिरिके चारों दिशा चार जिनमन्दिरेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अथाष्टक

(चाल प्रमादिसन की)

क्षीरोदधि उनहार सु, जल भरि कंचन झारी।
जिन सन्मुख दे धार, जरा मरनादि निवारी॥
सुरपति पूजन जाहिं, शिखर कुण्डल गिरवरके।
हमें शक्ति सो नहिं, जजत पद श्री जिनवरके॥२॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीप मध्ये कुण्डलगिरि पर्वतके पूर्वदिश रुचिक नाम।१। दक्षिण दिश रुचिकप्रभ नाम।२। पश्चिमदिश हिमवन नाम।३। उत्तरदिश मन्दिर नाम।४। सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो जलं नि०

मलयागिर घस लाय सु, चन्दन केसर झारी।
जजत जिनेश्वर पाय, सो आताप निवारी। सुरपति० ॥३॥

ॐ ह्रीं०। चंदनं।

चन्द्र किरन सम स्वेत, अमल अक्षत ले ताजे।
जिनपद पुंज सु देव, अक्षय पद पावन काजे। सुरपति० ॥४॥

ॐ ह्रीं०। अक्षतं।

वरन वरनके फूल धरे, बहु परमलताई।
हरत मदन मद शूल, चरन जिनराज चढ़ाई। सुरपति० ॥५॥

ॐ ह्रीं०। पुष्पं।

नानाविध पकवान, सिताधृत मिश्रित झारी।
श्री जिनचरन महान, जजत तन क्षुधा निवारी। सुरपति० ॥६॥

ॐ ह्रीं०। नैवेद्यं।

दीपक ज्योति जगाय, दशों दिश होत उजारा।
मोह तिमिर क्षय जाय, जजत पद जिनवर केरा। सुरपति० ॥७॥

ॐ ह्रीं०। दीपं।

दस विध धूप सुगन्ध, धूम ऊरध सुखदाई।
हरत कर्मको बन्ध, दहत जिन सन्मुख जाई।
सुरपति पूजन जाहिं, शिखर कुण्डल गिरवरके।
हमें शक्ति सो नहिं, जजत पद श्री जिनवरके।।८।।

ॐ ह्रीं०। धूपं।

फलकी जात अपार, मधुर गुण कोमलताई।
मोक्ष सु पद दातार, जजत जिनवर पद भाई। सुरपति० ।।९।।

ॐ ह्रीं। फलं।

जल फल द्रव्य मिलाय, अर्घ भर कंचन थारी।
जजत जिनेश्वर पाय, लाल तिनकी बलिहारी। सुरपति० ।।१०।।

ॐ ह्रीं। अर्घं।

## अथ प्रत्येकार्घ

(कुसुमलता छन्द)

कुण्डलगिरकी पूरब दिशमें, पांच कूट भाषे जिनराय।
चार शैलके अन्त बताए, उर ले एक रही द्युति छाय।।
सिद्धकूट तसु नाम रुचिक है, तापर जिनमन्दिर सुखदाय।
सुरु सुरपति नित पूजत तिनको, हम ले अर्घ जजत जिनपाय।।१।।

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरि पर्वतके पूर्वदिश रुचिक नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं नि०

दक्षिण दिश कुण्डलगिर केरी, पाँच कूट सोहें सुखकार।
पर्वत अन्त चार कंचनमई, पहली ओर एक उर धार।।
सिद्धकूट तसु नाम रुचिकप्रभु, तापर श्रीजिनभवन निहार।
अमर अमरपति जजत अष्टविध, हम पूजत नित अर्घ संवार।।२।।

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके बीच दक्षिणदिश रुचिकप्रभ नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं।

कुण्डलगिरि पश्चिम दिशा सौहे, पाँच कूट कंचन द्युति ताम।
बाहर भाग चार भूपतिके, बीतर एक सरस सुख ठाम॥
तहाँ जिनभवन अनुपम सुन्दर, सिद्धकूट तसु हिमवन नाम।
देव सचीपति वसुविध पूजत, हम ले अर्घ जजत जिनधाम॥३॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके पश्चिमदिश हिमवन नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिशा सु चार गिर कुण्डली, पांच कूट सोहैं सु रिशाल।
गिरके अन्त चार सुर निबसैं, भीतर भाग एक सु विशाल॥
मन्दिर नाम सु सिद्धकूट पर, जिनमन्दिर सुर जजत त्रिकाल।
वसुविध अर्घ बनाय गाय गुण, जिन घर पूजत भविलाल॥४॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके उत्तरदिश मन्दिर नाम सिद्धकूट पर स्वयंसिद्ध जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## अथ जयमाला

(दोहा)

कुण्डलगिर चारों दिशा, श्री जिनभवन विशाल।
जिनपद शीश नवायकैं, अब वरनूं जयमाल॥१॥

(पद्धरी)

जै एक खरब वसु अरब जान, जै कोड़ पचासी अधिक मान।
जोजन सु छिहत्तर लाख सार, इक इक दिशको आयाम धार॥२॥

जै कुण्डल द्वीप दिपै रिशाल, तिस बीच सु कुण्डलगिर विशाल।
चहुं ओर द्वीप आधो सुघेर, कुण्डलवत गोल परो सुहेर॥३॥

जोजन पचहत्तर सहस अंग, उन्नत कंचन के वरन रंग।
जै गिर ऊपर चहुं दिश जु चार, जै सिद्धकूट जिनभवन सार॥४॥

जै रतनमई प्रतिमा जिनेश, शतआठ अधिक वंदत सुरेश।
सब समोसरन रचना निहार, वरनत सुर गुरु पावें न पार॥५॥

जै चतुरनिकाय जु देव आय, जै जिन गुन गावैं प्रीत लाय।
जै दुंदुभि शब्द बजें सु जोर, अनहद सारे बारह किरोर॥६॥

जै द्रुम द्रुम द्रुम बाजै मृदंग, निरजर निरजरनी नचैं संग।
ता थेई थेई थेई धुन रही पूर, जगतारन जिनवरके हजूर॥७॥

जिन चरन कमल पूजत सुरेन्द्र, सब देव करत जय जय जिनेन्द्र।
मन वचन काय भुवि शीश लाय, भविलाल सदा बलबल सुजाय॥८॥

(धत्ता दोहा)

कुण्डलगिर जिनभवन की, पूजा बनी महान।
जो वांचे मन लायकें, पावे अविचल थान॥९॥

ॐ ह्रीं कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरिके चतुर्दिश जिनमन्दिरेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

## अथ आशीर्वादः

(कुसुमलता छन्द)

मध्यलोक जिनभवन अकीर्तम, ताको पाठ पढ़े मन लाय।
जाके पुन्य तनी अति महिमा, वरनन को कर सकै बनाय॥
ताके पुत्र पौत्र अरु संपत, बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय।
यह भव जस परभव सुखदाई, सुर नर पद लहि शिवपुर जाय॥१०॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

*इति श्री कुण्डलद्वीपमध्ये कुण्डलगिरि की चारों दिशा चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा सम्पूर्ण।*

# अथ रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरिके चारों दिशा चार सिद्धकूट जिनमन्दिर पूजा

## अथ स्थापना

(छप्पय छन्द)

रुचिक द्वीप तेरमो, महा सुन्दर द्युति धारी।
ताके बीच सु लोग, रुचिक गिर पर्वत भारी॥
चारों दिश जिन भवन, चार सोहैं सुखदाय।
पूजत इन्द्र सुजाय, देव मिल चतुरनिकाय॥
घेरें द्वीप समुद्र सब, पहुंचन कौन उपाय।
याते आह्वानन सु कर, पूजत जिनवर पाय॥१॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरि पर्वत पर चारों दिशा चार जिनमन्दिर सिद्धकूटेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अथाष्टक

(चाल जयमाल की)

क्षीरोदधि सम उज्ज्वल महा नीर ले,
हेम भृङ्गार भर, धार जिन चरण दे।
रुचिक गिर चार दिश, जिनभवन सुर जजैं,
हम सु पूजत यहाँ, ध्यान धर जिन भजैं॥२॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीप के बीच रुचिकगिरि पर्वत के पूर्वदिश।१। दक्षिणदिश।२। पश्चिमदिश।३। उत्तरदिश।४। सिद्धकूटजिनमन्दिरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिक घनसार चन्दन, सु गुण सीयरो।
जजत जिन चरण, आताप भवि को हरो। रुचिकगिर० ॥३॥

ॐ ह्रीं०। चन्दनं।

श्वेत शशिकिरश सम, धोय तंदुल धरो,
चरण जिनराज ढिग, पुञ्ज भविजन करो।
रुचिक गिर चार दिश, जिनभवन सुर जजैं,
हम सु पूजत यहां, ध्यान धर जिन भजैं।।४।।

ॐ ह्रीं०। अक्षतं।

कमल अर केतकी, वर्ण सम जातके।
पूज जिनवर सुपद, फूल बहु भाँतिके। रुचिकगिर० ।।५।।

ॐ ह्रीं०। पुष्पं।

सह पकवान घृत खण्ड, मिश्रित लहा।
पूज जिनपद कमल, थाल भर रुच महा। रुचिकगिर० ।।६।।

ॐ ह्रीं०। नैवेद्यं।

रत्नमई दीप तसु, जोत उद्योत है।
करत जिन आरती, मोह क्षय होत है। रुचिकगिर० ।।७।।

ॐ ह्रीं०। दीपं।

धूप दस गन्ध ले, अग्नि बिच खेइए।
हरत वसु कर्म, भविजन चरन सेइए। रुचिकगिर० ।।८।।

ॐ ह्रीं०। धूपं।

फल सो उत्कृष्ट मीठे, सु रस लाइए।
तुरत शिव रमनी वर, मोक्ष फल पाइए। रुचिकगिर० ।।६।।

ॐ ह्रीं०। फलं।

जल सुफल आठ विध, दर्ब सब धोयके।
पूज जिनराज पद, लाल मद खोयकै। रुचिकगिर० ।।१०।।

ॐ ह्रीं०। अर्घं।

## प्रत्येकार्घ

(सोरठा)

पूरव दिशा निहार, रुचिक नाम गिर शीश पै।
जिनमन्दिर सुखकार, पूजों आठों दर्व ले॥११॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके पूर्वदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण दिशा सु जान, सैल रुचिकगिरि की कही।
जिनमन्दिर धर ध्यान, पूजों मन वच कायकैं॥१२॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके दक्षिणदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश मन लाय, रुचिक जु गिर पर देखिए।
जिनमन्दिर में जाय, श्री जिनवर पद पूजकैं॥१३॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके पश्चिमदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश सु विशाल, रुचिक नाम गिरवर तने।
जिनवर भवन त्रिकाल, पूजों भविजन अर्घ सों॥१४॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपके उत्तरदिश रुचिकगिरि पर्वत पर सिद्धकूट जिनमन्दिरेभ्योऽर्घं०

## अथ जयमाला

(दोहा)

रुचिक द्वीप के बीच में, पर्वत रुचिक विशाल।
जिनमन्दिर चारों दिशा, तिनकी सुन जयमाल॥१५॥

(पद्धरी)

जै जोजन सत्रह खरब गाय, जै अरब सु इकतालिस मिलाय।
जै सत्तर दोय कहे किरोर, जै षोडष सहस सु अधिक जोर॥१६॥

यह रुचिक द्वीप आयान जान, इक इकके भाषे हैं पुरान।
तिस बीच रुचिकगिर परो फेर, चारों दिश आधो दीप घेर॥१७॥

चवरासी सहस कहे उतंग, जोजन कंचन के वरन रंग।
दिश आठ कूट चालिस सु चार, तहाँ रहें देव छप्पन कुमार॥१८॥

जिन गर्भजन्मको समय पाय, जिन माता को सेवैं सु आय।
अर कूट चार गिर के सु अन्त, तहाँ देव चार सु वसो वसंत॥१९॥

जे चारों दिश में कूट चार, है सिद्धकूट तसु नाम सार।
ता पर जिनमन्दिर शोभमान, सब समोसरण रचना समान॥२०॥

तहाँ श्री जिनबिम्ब विराजमान, शतआठ अधिक प्रतिमा प्रमान।
जै रत्नमई द्युति अति विशाल, सुर इन्द्र चरन पूजत त्रिकाल॥२१॥

जै नृत्य करत संगीत सार, बाजे बाजत अनहद अपार।
जै जिनगुन गावैं अमर नार, सुर ताल मधुर ध्वनिको संवार॥२२॥

जै जै जगतारन जै जिनेश, तुम चरण कमल सेवत सुरेश।
हम करत बिनती नमत भाल, भव भव तुम सेव करैं सुलाल॥२३॥

(धत्ता—दोहा)

रुचिक द्वीप जिनभवन की, पूरन यह जयमाल।
जो नर वांचैं भाव धर, तिनके भाग विशाल॥२४॥

ॐ ह्रीं रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिर पर्वतके चारों दिशा चार जिनमन्दिर सिद्धकूटेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

॥ अथाशीर्वादः ॥

(कुसुमलता छन्द)

मध्यलोक जिन भवन अकीर्तम, ताको पाठ पढ़ै मन लाय।
जाको पुन्यतनी अति महिमा, वरणन को कर सके बनाय॥
ताके पुत्र पौत्र अरु संपत, बाढ़ै अधिक सरस सुखदाय।
यह भव जस परभव सुखदाई, सुर नर पद लहि शिवपुर जाय॥२५॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

*इति श्री रुचिकद्वीपमध्ये रुचिकगिरि पर्वतके चारों दिशा चार जिनमन्दिर सिद्धकूट विराजमान ताकी पूजा सम्पूर्णम्।*

# श्री वर्द्धमान निर्वाण पूजा

(दोहा)

प्रथम चरम जिन चरन जुग, नाथवंश वर पाय।
सिद्धारथ त्रिसला तनुज, हम पर होहु सहाय।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनप्रतिमाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(अडिल्ल छन्द)

पुष्पोत्तर तज धवल, छट जु अषाढ़ की।
उतरा फागुन माहिं, बसे उर माय की।।
अवधि अमरपति जान, रतन बरसाहयौ।
कुण्डलपुर हरि आय, सुमंगल गाइयौ।।२।।

ॐ ह्रीं अषाढ़शुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

(दोहा)

दिवस पंच दस मास वसु, बरस पचत्तर सार।
रहे चतुर्थम काल के, वीर लयो अवतार।।३।।

(सुन्दरी छन्द)

सुकल चैत्र चतुर्दसि के दिना। नक्षत उतरा फागुन सुरगना।
सजि गजेन्द्र गिरेन्द्र न्हवाइयौ। लखि जिनेन्द्र सुमंगल गाइयौ।।४।।

(दोहा)

पंचानन[१] पग चिन्ह तसु, तन उतंग कर सात।
वरन हेम[२] जिनबिम्ब नित, पूजहु भव्य प्रभात।।५।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदशीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

(अडिल्ल छन्द)

आयु बहत्तर बरस, कुंवरपद तीस जू।
सो लखि अथिर, उदास भए जगदीश जू।।

१. सिंह। २. सोना।

तब लौकान्तिक देव, सु थिर कर थल गए।
रचि सुर तुरत नवीन, प्रभु सिविका[१] लए।।६।।

पुरतें निकट न दूर, मनोहर वन गए।
चन्द्रकान्ति मणिमई, सिला लखि सुर ठए।।
सिविकातें पधराय, तहाँ सुरगन खड़े।
दुविधि परिग्रह त्याग, प्रभु समरस बढ़े।।७।।

(सुन्दरी छन्द)

प्राची[२] दिसि सन्मुख, पद्मासन मांडिकैं।
नमः सिद्ध कहि, पंचमुष्टि कच[३] काढ़िकैं।।
निज आतम सम देव, सिवग[४] सब साख दै।
त्रोदश विध चारित्र, धर्यो अभिलाख दै।।८।।

मगसिर मास दसैं सुदि, जनम नखत परौ।
ता दिन परम दिगम्बर पद प्रभुजू धरौ।।
साल विटप तर बैठि, बैर अपराहिनी।
दीक्षा सखी मिलाय, वधू शिवदायनी।।९।।

(दोहा)

जिन शिर केश पवित्र अति, रतन पिटारे धार।
क्षीरोदधि पधराय हरि[५] निजथल गए नृतकार।।१०।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशभ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

(दोहा)

तन ममत्व तजि विश्वपति, शिलापट्ट वर पाय।
आरूढ़े तप धरत ही, चौथो ज्ञान उपाय।।११।।

अजर अमर अव्यक्त जो, अजपा ताको ध्याय।
ध्यान सिद्धि के अर्थ प्रभु, अचल मेरु सम थाय।।१२।।

---

१. पालकी। २. पूर्व दिशा। ३. बाल। ४. सिद्धोंकी। ५. इन्द्र।

(अडिल्ल)

गुप्ति तीन गढ़[1] तुल्य भए तिनके महा।
संजम बख्तर तुल्य भए कहिना कहा।
कर्म—शत्रु जीतन की रुचि लागी तबै।
गुन अनेक सेना भट होत भए तबै॥१३॥

अनशनादि तप धारि द्वादश माहिं जी।
ध्यान विषै सुविशेष शुद्धता पाय जी।
अष्टावीस मूलगुन अग्रेसुर कढ़े।
कर्म प्रबल अरि तिनहि जीतने प्रभु चढ़े॥१४॥

(गीतिका छन्द)

चढ़े शुकल गजेन्द्र लेश्या, भूप अनुप्रेक्षा ढुके।
धाय धर्म—कृपान[2] गहि, अरि मोहसेना पर झुके।
उत्कृष्ट निज परिनाम कटकतनी सुरक्षा कारनै।
वर ज्ञानरूप प्रधान अग्रेसुर कियो जगतारनै॥१५॥

(अडिल्ल)

अति विशुद्ध परिणाम सेनपति छाइयौ।
रागादिक अरि प्रबल हनन उद्यम कियौ॥
ध्यान जतन कर मूल प्रगट कर तंत्र के।
करे चलाचल वीर जिनेश्वर सत्र के॥१६॥

अधःकरनके भाव जो प्रथमहिं भायकैं।
हों परनाम न अन्य क्षपक दिस जायकैं॥
सुकल ध्यान अस प्रथम ध्यान ता करम लै।
मोह प्रबल करि घात जाय बारम[3] थलै॥१७॥

---

१. किला। २. तलवार। ३. बारहवाँ क्षीणमोह गुणस्थान।

(गीतिका छन्द)

ता थलै दूजे सुकल बल त्रय[1] घातिया हनि जय लयौ।
चढ़ि तेरमें गुणस्थान श्रीजिन समोसरन विभौ ठयौ।
रचि कोट वेदी भूमिपर मध थंभ तपादिक (?) जहीं।
जोजन प्रमान जु सोभगी निरवान पद पूजत तहीं।।१८।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशभ्यां ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(ढाल मंगल की)

करत विहार जिनेश भविक उपदेशते।
सकल संघ कर जुक्त चर्म तीर्थेशते।।
नाना विधि अतिशय कर जुक्त प्रभु तहाँ।
आनि विराजे विपुलाचल पर्वत जहाँ।।१९।।

जहँ दिव्यधुनि प्रति शब्द जय जय सभामंडप भवन में।
धर्मोपदेश सो आइयो तिन निकट निर्वानक समै।।
तब सुर असुर नर इन्द्र करि अर्चित सिवग वर जानकैं।
पावापुरी उद्यान सार तहाँ पधारे आनकैं।।२०।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णअमावस्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इत्युच्चार्य कर्णिकायां परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

१. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अन्तराय।

# पीठकादि पूजा

(दोहा)

महावीर ने जा समै, गमन कियो शिवखेत।
सोई समय विचारकैं, पूजौं सुधी स्वहेत॥२०॥

ॐ ह्रीं महावीर अतिवीर सन्मति वर्द्धमानादिकानेकनामसंयुक्तभगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्, आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

## अष्टक

(चौपाई)

मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समै पूजौ भवि धीर।
दस अतिशय जनमत जिन पाय, केवलग्यानमाँहि दस गाय।
तिनि जिनवर प्रति चरनन ओर, दे जलधार जुगल कर जोर।
मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समैं पूजौ भवि धीर॥१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याणकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन के सुरकृत चौदह सार, ये अतिसै चौंतीस चितार।
तिन जिनवरप्रति पूजनधारि, भ्रमर लुब्ध वर चंदन गारि। मं० ॥२॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहारज जुत देव, जिनकी इन्द्र करैं सत सेव।
तिन जिनवरप्रति को अवलोक, ले वर शालि[1] अखंडित पोख। मं० ॥३॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. चावल

जिनके नंत चतुष्टय सार, ये गुन छ्यालिस हैं जग तार।
तिन जिनवरप्रति पूजन सार, ले वर सुमन विविध परकार।
मंगल निर्वानक महावीर, प्रात समैं पूजौ भवि धीर॥४॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा तृषादि आठदस दोष, हरत सिवग वर भवदधि सोष।
तिनि जिनवर प्रतिबिम्ब निहार, पूजनकों भरि नेवज थार। मं० ॥५॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक भेद जिन गाय, जीव अजीव तत्त्व दरसाय।
तिन प्रतिबिम्ब निरख निज हेत, दीपक लै निर्मल भवि चेत। मं० ॥६॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या भ्रमकर भ्रमै अनादि, जगत जीव जगमें बहु वादि।
तिनको शिवगति सार बताय, तिनप्रति धूप दशांग चढ़ाय। मं० ॥७॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवृष[1] उपदेसो हितकार, चलो जात अबतांई सार।
परमत खण्डन मंडन लोक, तिनप्रति ले फल चरनन ढोक। मं० ॥८॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके समोसरन में साध, चौदा सहस एक दस बाध।
ऐसे जगत प्रभू पद पाय, लै जलादि पूजों जिनराय। मं० ॥९॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. धर्म

(राग बिलावल)

प्रकृति सात महावीर प्रभु, जिन प्रथम विदारी।
तीन आठ जे भानिके, नव छत्तीस सिधारी॥
दसमें लोभ द्वादसे सोलह तहाँ जु टारी।
त्रेसठ प्रकृति खिपाइयो तिन जिन बलिहारी॥१॥

(दोहा)

सैंतालीस प्रकृति हनी, कर्म घातिया कीर।
नाम तीनदस आयु त्रय, नाशि भए महावीर॥२॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

(दोहा)

पंच नाम[1] धर ते सुगुरु, पावापुर वन आय।
शेष करम रिपु जीतने, शिव मग चलन उपाय॥१॥

(छन्द मात्रिक)

आये जहँ त्रिजगपति, ध्यान दीनो महा।
त्रितिय पद शुकल मांडो, सु हानी तहाँ॥
तब प्रभू दिव्यधुनि, शब्द रहिते भए।
अंतके दिवस बाकी, चतुर्दश रहे॥२॥

प्रभु गए उल्लंघि, तेर गुणस्थानतैं।
चढ़ि अजोगे शुकल तुरिय[2] पद ध्यानतैं॥
जोग सु निरोध करि चरन जुग समय जे।
हनि बहत्तर चरम समय त्रयोदस जजे॥३॥

---

१. वीर, महावीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्धमान।   २. चौथे।

चौदमें अन्त सु अघातिया जय लई।
चेतनाशक्ति दैदीप्य परगट भई॥
भाँति इह अष्ट अरि कर्म दल हनि गए।
ऊर्ध्व जिन गमन कर शिवपुरी थिर भए॥४॥

पक्षवर भ्रमर, कार्तिक चतुर्दशि दिना।
स्वातिवर नखत परभात समया गिना॥
लोकके शिखर जिनदेव आरूढ़ियौ।
सुख अनन्तौ निरन्तर जहाँ पूरियौ॥५॥

मोह अरि बीसवसु प्रकृति जुत क्षय कियौ।
प्रथम क्षायकसम्यक्त गुन प्रगटियौ॥
पंच भट सहित ज्ञानावरन चूरियौ।
तब अनन्तो दुतिय ग्यान गुन पूरियौ॥६॥

दरशनावरण नव प्रकृति जुत दलमलौ।
तब अनन्तो सुदर्शन त्रितिय गुन मिलौ॥
अन्तराय जु करम पंच भट जुत हनौ।
तब तुरिय वीर्य गुन जिन अनन्तौ बनौ॥७॥

(पद्धरी छन्द)

इक तीत्रक[1] भय जुत नाम मार, पंचम सूक्षम गुन प्रगट सार।
चव कटक सहित कर आयु नाश, छठमा अवगाहन गुन प्रकाश॥८॥

हनि गोत करम को जोर ताय, सातम जु अगुरु लघु गुन उपाय।
जिन जुगल वेदनी घाति पाय, गुन अष्टम अव्याबाध थाय॥९॥

इन आदि अनन्ते गुन समाज, पायौ प्रभु मुक्तिपुरी स्वराज।
तब ही सुरेश बल अवधि पाय, निज सेन साज सब देव आय॥१०॥

तादिन वह पुरी प्रकाशरूप, दीपन समूह करके अनूप।
धरती अकाश सब दिशनि माँहि, दीपकमाला प्रजुलित लखाहिं॥११॥

१. ९३ प्रकृति।

तब परमौदारिक प्रभु शरीर, मंगल पंचम लखि सुर गहीर।
सुभ गन्ध पहुप आदिक मनोग, वसु द्रव्यनिकर पूजा नियोग॥१२॥

फिर चंदन अगरादिक लियाय, तब वर उतंग सुर सर (?) रचाय।
जिन तन मंगलमय तहँ रचाय तब अग्निकुमारन शीश नाय॥१३॥

तिन मुकुटनि करि ज्वाला उठाय, भस्मीकृत सर (?) सब हो तहाँय।
सब सुर जय जय कर तासु ओर, उर आनंद परम सु भक्ति सोर॥१४॥

तब प्रथम इन्द्र आदिक सुराय, कर भस्म वंदना शीश नाय।
कहते यह पुरुषोत्तम महान, वर धर्म तीर्थनायक सुजान॥१५॥

सो देखो अस्त भयो दिनेश, अब मिथ्यातम भ्रम कर प्रवेश।
ये प्रानी वृषतें विमुख होय, करके निज इच्छा मार्ग सोय॥१६॥

जगमें सु प्रवर्तेंगे विसाल, इमि चिंन्तित सुरनर भक्ति माल।
अवनी पवित्र लखि अमरराय, पुनि कर पूजा निज थान जाय॥१७॥

ता दिनतें अब या भरत खेत, दीपकमाला[1] प्रगटी उपेत।
प्रतिवर्ष भव्य पूजा कराय, निर्वाण समय उत्सव सु पाय॥१८॥

पाछे सुनि नर नारिन समाज, कर मोदक ले परिवार साज।
अतिआनंद मंगल निरत सोय कीनो तिन अति ही कह सु कोय॥१९॥

ते सन्मति मति दे अरज येह, तुम करुणासागर विमल मेह।
भटके बहु काल अनन्त बादि, तुम बिन कृपालु जगमें अनादि॥२०॥

(अडिल्ल)

या भव—वनके माँहि, बहुत दुःख पाइयौ।
जानो ग्यान प्रसाद, तुमहिं तट आइयौ॥
तातें कहने माँहि, कछू आवे नहीं।
वाँछितार्थ पद तुम कर, पाऊं प्रभु सही॥२१॥

ॐ ह्रीं निर्वाणकल्याकप्राप्त श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

१. दीपमालिका, दिवाली।

(गीतिका छन्द)

या भाँति निर्वानक सु पूजन, समयकी जो विधि कही।
सो नय प्रमानके न्याय करि, भव्य तुम जानो सही॥
यह समय लखि जिन पूज उत्सव, करत भक्ति जु वश सही।
दुर्गति हरन सुख देत भवि, करिए परम रुचि करमही॥२२॥

(दोहा)

तीन बरस वसु मास दिन, पंद्रह रहे सु सार।
महावीर शिवपुर बसे, चौथे काल मझार॥२३॥

(त्रिभंगी छन्द)

श्रीवीर जिनेसुर नमत सुरेश्वर, वसु विधिकर जुग पद चरचं।
बहु तूर बजावैं जिनगुन गावैं, ध्यावैं पावैं मुक्ति पदं॥२४॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

(जाप्यं १०८ अष्टोत्तरशतं दीयते = ॐ ह्रीं निर्वाणमंगलमण्डितमहावीरजिनेन्द्राय नमः ।)

# वर्तमान चतुर्विंशति जिन-निर्वाणभूमि पूजा

(दोहा)

मंगलकारी सर्व जिन, दाता परम चितारि।
फलद रचाकर चित्त हम, पूजत कर शिर धारि॥१॥

(अडिल्ल)

दीप अढ़ाई माहिं, मेरुपन सोभिते।
पंच विदेह सु भूमि, तहाँ मन क्षोभते॥
तिन मधि तीर्थंकर, मंगल सुखदायजी।
होत सदा जहँ, इन्द्र जजें सिर नायजी॥२॥

(गीतिका)

सिर नाय सुर गन खग नरेसुर, करै महोत्सव नित नए।
परवार जुत भर पुण्य कोष, प्रतच्छ लखि श्रीजिन जए॥
विहरंत केवल गनधरादिक, करत वर उपदेश ते।
तहँ सुनहिं अति रुचि धारि, भविजन त्याग गृह तप करहिं ते॥३॥

(अडिल्ल)

काल चतुर्थम सार, सदा वरतै जहाँ।
यति श्रावक द्वय धर्म, चलै सास्वत वहाँ॥
तीर्थाधिप चक्री, हल हरि प्रतिहरि घनै।
उपजें पुरुष अनूप, जहाँ शिवमग बनै॥४॥

(दोहा)

जहाँ न मिथ्यामारगी, एक धरम अरहंत।
इन्द्रादिक आवें जहाँ करें भक्ति भगवंत॥५॥

भरतैरावत दस विषैं, कालचक्र द्वय[1] जोग।
तामधि जम्बूद्वीप यह, दच्छिन भरत मनोग॥६॥

१. उत्सर्पणी अवसर्पणी।

(अडिल्ल)

हम यह पंचम काल, पाय यह क्षेत्र सो।
विद्यमान तीर्थंकर, मंगल नाहि सो॥
तातें परम उछाह, सु मन वचसों रचौं।
सिद्धभूमि थल पाय, हरष पूजा सुचौं॥७॥

(पूजन के समय पहरने के आभूषण)

(गीतिका छन्द)

मणिमुकुट कुंडल हार कंठी, दाम[1] मुकतादिक तनी।
कर माँहि पहुँची कड़े सुंदरी, छुद्रघंटिका अति बनी॥
यज्ञोपवीत सो पाँय घुंघरू, आदि आभूषण घनैं।
करि नव तिलक पट पहिर उज्ज्वल, चतुर नर पूजा ठनैं॥८॥

इत्युच्चार्य जिनचरणाग्रेषु परिपुष्पाजलिं क्षिपेत्।

## पूजन प्रारम्भ

(अडिल्ल)

वृषभनाथ जिन आदि वीर परयंत जी।
चतुरबीस इस क्षेत्र, भए भगवंत जी॥
कल्याणक तित सर्व, पूज्य हरि कर भए।
अब सिद्धालय माँहि, यहाँ जिन पूजए॥

ॐ ह्रीं वर्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्राणि ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितानि भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक

(अडिल्ल)

कनक कलश दधि छीर, उदक निरमलहि लै।
इन्द्र जजें हम सकति नाहिं वह जल मिलै॥

१. माला।

तृषा निवारन हेत, जजौं हितकरिं अदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥१॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि केशर कुंकुम, जल सोहिलौ।
परम सुरभि[1] लहि भँवर, करहिं तापर किलौ[2]॥
भव आताप निवारन कारन आनदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥२॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि मोती सम सालि, अखण्डित बीनकैं।
परम सुगन्धी उज्ज्वल, उत्सव चीनकैं॥
अक्षय पद के हेत, जजौं जिन चरनदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥३॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमन स्वर्णमय सुरतरुके, सम ल्यायकैं।
विविध प्रकार बनाय, सुगन्ध मिलायकैं॥
मन्मथदाहि निवारि, जजौं जिन पुष्पदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥४॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बावर पुरी पिराक, तुरत घृतमें कढ़े।
बहुत सुगन्ध लखत, उरमें आनन्द बढ़े।
क्षुधानिवारन, कंचन–थार सम्हारदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥५॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय कंचन जड़ित, दीप अति सोहनै।
बहुत सुगन्ध, नहिं धूम, लखत मन मोहनै।

१. सुगन्ध। २. किल्लोल–आनंद।

तिमिरविनाशक दीपक, लै पूजों सदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥६॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन अगर कपूर, आदि दस कूटकैं।
सुरभिसार अलि[1] मत्त जुरे कर टूटकैं॥
करम दहनके हेत, धूप वर खेइदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥७॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खारक दाख लवंग, लायची आनिए।
श्रीफल वह बादाम, जायफल जानिए॥
ये फल दूषन रहित, मुकति–फल हेतदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥८॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि सुगन्ध सुरत्न, पहुप चरु धोय के।
दीप धूप फल वसु विधि, अर्घ सँजोय के॥
यह विधि अर्घ संजोय, स्वपर हित ज्ञानदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥९॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त वितत घन सुषिर, साजि वाजिन सबै।
मंगलगीत उचारि, नारि नर मिल तबै॥
सुचि कर सब सिंगार, जजौं विधसें तदा।
कैलाशादिक थान, मुक्ति मारग सदा॥१०॥

ॐ ह्रीं कैलाशादिकनिर्वाणक्षेत्रेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. भौंरा।

(गाथा)

अट्ठावयम्मि उसहो, चंपाए वासुपुज्जजिणणाहो।
उज्जंते णेमिजिणो, पावाए णिव्वुदो महावीरो॥

(अडिल्ल)

अष्टापद आदीश, ईश जगतारजी।
वासुपूज्य चम्पापुर परम उदार जी॥
नेमिनाथ गिरनार, वीर पावापुरी।
मुक्ति गमन इन थान, नमन तिन नित करी॥११॥

ॐ ह्रीं यथाक्रमं सिद्धपदप्राप्तऋषभवासुपूज्यनेमिनाथमहावीरजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

वीसं तु जिणवरिंदा, अमरासुरवंदिदा धुदकिलेसा।
सम्मेदे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(अडिल्ल)

अजितनाथ जिन आदि, जिनेश्वर बीस जी।
अमर असुरगन जिनपद, नावत शीश जी।
गिरि सम्मेदशिखरतें, लोकशिखर गए।
तिनि जिनवर उर ध्याय, नाय सिर जय जये॥१२॥

ॐ ह्रीं सम्मेदाचलनिर्वाणपदप्राप्ततीर्थंकरेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

## जयमाला

(दोहा)

शिवथल जन्मन मास तिथि, नाम सबनि सुखकार।
वरनन सुरभि सु लुब्ध चित, भयो भ्रमर आकार॥१॥

(पद्धरि छन्द)

जयऋषभदेव कैलाश शीश, वदि माघि चतुर्दशि मुक्ति ईस।
चंपापुर द्वादशमें जिनेश, भादों सुदि पंचमि तिथि सुदेश॥२॥

गिरनार नेमि जिन मुक्तिथान, आषाढ़ सुदी आठें महान।
पावापुरतें प्रभु वीरनाथ, कातिक वदि चौदस प्रनमि माथ॥३॥

पुनि शिखर सम्मेद उतंग शीश, तहँ अति पवित्र वर कूट बीस।
तिनके अब ग्रंथप्रमान नाम, भाषों जिन मुक्तिकरन सुठाम॥४॥

जय सिद्धकूट मन सिद्धि ठाम जिन अजित लयो शिवनारि धाम।
जय चैत्र शुकल पंचमि महेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥५॥

जय धवलदत्त गिरि शोभनीक, जिन संभव शिवतिय वरी ठीक।
जय चैत्र सुदी छठ दिन नरेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥६॥

जय आनन्दकूट महा मनोग, लहि अभिनन्दन शिवनारि जोग।
जय छठ वैशाख शुकल सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥७॥

अब अचल नाम जयकूट सार, जिन सुमति भये भव-उदधि पार।
जय चैत सुदी ग्यारस महेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश॥८॥

जय मोहनकूट समेद शीश, पदमाप्रभु मुक्त भए जगीश।
जय फागुन सुदि सातें नरेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥९॥

जय वर प्रभास नामा सु कूट, तहँतें सुपार्श्व प्रभु करम टूट।
जय फागुन सुदि सातें सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१०॥

जय ललितकूट प्रभु परम ठाम, चंद्राप्रभु लहि तहाँ मुक्तिधाम।
भादों सुदि वर सातें सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥११॥

जय सुप्रभकूट पूजें महेश, जय पुष्पदंत हम हर कलेश।
जय भादों सुदि नवमी सुदेश, सम्मेदशिखर आये सुरेश॥१२॥

विद्युतवर कूट पवित्र थान, हनि शीतलप्रभु तहाँ कर्म मान।
अश्विन सुदि तिथि एका सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१३॥

जय संकुलनामा कूट तास, श्रेयांस कियौ जग शीश वास।
श्रावन सुदि बारस कहि तिथेस, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१४॥

जय वीर सु संकुल नाम तास, लहि विमल विमल पद ताहि पास।
जय सुदि अषाढ़ आठें महेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१५॥

जय नाम स्वयंभू कूट वेश, शिवनारि अनन्त वरी जिनेश।
सुदि द्वादस चैत महा सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१६॥

जय सीरीदत्त वर कूट जास, गति पंचम श्रीजिन धर्म पास।
अलि चैत अमावस तहँ नरेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१७॥

जय शांतप्रभासी कूट जेह, जिन शांति जगत शिवपुर वसेह।
जय जेठ भ्रमर भू तिथि सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१८॥

जय कूट ग्यानधर सरस ठौर, प्रभु कुंथु भये त्रय भुवन मौर।
जय वदि वैशाख प्रथम दिनेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥१९॥

जय नाटककूट समेदशीस, जय अरहनाथ हुव मुकति ईश।
जय चैत अमावस तिथि सुदेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥२०॥

जय संवलकूट पवित्र थान, हनि मल्लि मल्ल कर्मन प्रमान।
जय फागुन सुदि पंचमि प्रवेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥२१॥

जय निर्जरकूट पवित्र गाय, मुनिसुव्रत मुक्ति–वधू रमाय।
फागुन वदि बारस सो दिनेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥२२॥

जय कूट मित्रधर परम ठाम, नमिनाथ पधारे मुकति धाम।
जय सुदि वैशाख चतुर्दसेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥२३॥

जय कूट सुवर्न सुभद्र नाम, प्रभु पारस तजि सब जगत काम।
जाय सावन सुदि सातें खगेश, सम्मेदशिखर आए सुरेश॥२४॥

शिवगमन समय इनको बखान, अनुक्रम लखि अंकहि नाम जान।
जिन प्रथम दुतिय चौथे जिनेश, पंचम सप्तम वसुमें प्रवेश॥२५॥

दसमें ग्यारम ये जगतदेव, पूर्वाह्न समय शिवमार्ग लेव।
पुनि बारम तेरम चौदमीस, षोडस सत्रम उनईस बीस॥२६॥

बावीसम तेवीसम जिनेस, ये रात समय शिव कर प्रवेश।
त्रितिए नवमे छठमे जिनुक्त, ये दिनके पिछले पहर मुक्त॥२७॥

जय पंद्रम जिन जु अठारमेय, इकईसम वीर जिनेश सेय।
इनकी अरुनोदय वेल सार, जिन मुक्तिवधू सँग मिलनकार॥२८॥

जय वृषभ नेमि अरु वासुपूज्य, पदमासन शिव लहि जगत सूर्ज।
अवशेष ऊर्ध आसन प्रवीन, निर्वानपुरी जिन गमन कीन॥२९॥

(सोरठा)

मोह प्रबल गढ़ तोर, सकल करम रिपु मारियौ।
लोक शिखर की ओर, गमन कियो अविचल भये॥३०॥

ॐ ह्रीं सिद्धपदप्राप्तवर्तमानजिनेन्द्रेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रवार जो कोय, बन्दे नर सुरपद लहे[१]।
'जगतराम' हित जोय, सिद्धक्षेत्र पूजे सदा॥३१॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

(जाप्यं १०८ दीयते) ॐ ह्रीं वर्तमानकालसम्बन्धिचतुर्विंशतिजिनेन्द्राय नमः।

१. जिस तिथि और जिस समय कूट से जिन तीर्थंकर प्रभुने मुक्ति पाई है उसी तिथि को उसी समय उसी कूट पर उन्हीं तीर्थंकर प्रभु की पूजा वन्दनाका यह उत्कृष्ट माहात्म्य बतलाया है।

| पूर्वाह्न समय ८ तीर्थंकर मोक्ष पधारे | रात्रिके समय ९ तीर्थंकर मोक्ष पधारे | दिन के पिछले पहर ३ तीर्थंकर मोक्ष पधारे | सूर्योदय के समय ४ तीर्थंकर मोक्ष पधारे |
|---|---|---|---|
| १—ऋषभनाथ | १—वासुपूज्य | १—संभवनाथ | १—धर्मनाथ |
| २—अजितनाथ | २—विमलनाथ | २—पुष्पदन्त | २—अरहनाथ |
| ३—अभिनन्दननाथ | ३—अनन्तनाथ | ३—पद्मप्रभु | ३—नमिनाथ |
| ४—सुमतिनाथ | ४—शान्तिनाथ | | ४—महावीर |
| ५—सुपार्श्वनाथ | ५—कुन्थुनाथ | | |
| ६—चन्द्रप्रभ | ६—मल्लिनाथ | | |
| ७—शीतलनाथ | ७—मुनिसुव्रत | | |
| ८—श्रेयांसनाथ | ८—नेमिनाथ | | |
| | ९—पार्श्वनाथ | | |

# प्रत्येक निर्वाण पूजा

(दोहा)

तीर्थंकर भगवान के, वन्दौं पंच कल्यान।
अतिशय ठाम मनोग सब, वन्दौं सिर धरि पान[1] ।।१।।

(ढार—'ते साधु मेरे ऊर बसो')

साधु जहाँ निज ध्यान धरि, पावें सु केवलज्ञान।
वन्दौ सु ठौर प्रशस्त जो, तीरथ प्रधान जहान। ते साधु०।

१. मस्तकसे हाथ जोड़कर।

जा थान सो केवलपुरी, निरवान पहुँचे जान।
पूजों सु थान पुनीत जो, जा सम सु थान न आन[1]। ते साधु०।

ॐ ह्रीं वर्त्तमानकालसम्बन्धिजिनेन्द्राद्यसंख्यातमुनयः अत्र अवतर अवतर, संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

## अष्टक

(ढार—कार्त्तिक की)

प्रानी उज्ज्वल जल मुनि चित्त सौ, भुव[2] सपरस बिन कर धार हो।
प्रानी हाटक[3] घट भर ल्याइए, जिन मुनिगन पूजनकार हो।।
प्रानी सिद्ध—भूमि थल पायकें, अरु अतिशय मंगल ठाम हो।
भवि परम उछाह सु धारकें, जिन मुनिपद पूजनकार हो।
प्रानी सिद्धभूमि थल पायके।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।१।

प्रानी चंदन सर सम सीतलो, वर केशर कुमकुम गार हो।
प्रानी भव आताप निवारिकें, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।२।

प्रानी कुंदकली सम शालि ले, भर बीन अखंडित थार हो।
प्रानी आस अखैपद कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।३।

प्रानी परम सुगंधी फूल ले, पुनि परख प्रछाल सो आन हो।
प्रानी कामदहनके कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।४।

प्रानी मोदक खाजे आदि जे, पकवान विविध मनहार हो।
प्रानी कंचन थार संजोयके, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।५।

१. अन्य। २. बिना धरतीको छुआ हुआ। ३. सोना।

प्रानी दीपक जोति सुहावनी, जिमि रतन अमोलक सार हो।
प्रानी कर धरि परम उछाह सों, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।६।

प्रानी गंध सहित वर धूप ले, पावक मँह खेवनसार हो।
प्रानी अशुभ करम अरि जारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।७।

प्रानी देख लवंग सु लायची, पिस्तादिक आम अनार हो।
प्रानी अजर अमरपद कारने, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।८।

प्रानी जल फलादि वसु द्रव्य ले, कर कनक रकेबी धार हो।
प्रानी निरवांक्षिक जिन जोयकें, जिन मुनिगन पूजनकार हो। प्रानी०

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।९।

(सोरठा)

उत्तम भाव उपाय, श्रीजिन तीरथ वंदना।
कीजै मन वच काय, नय प्रमानके न्याय कर।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकनिर्वाणातिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।१०।

## प्रत्येक अर्घ

(गाथा)

वरदत्तो य वरंगो, सायरदत्तो य तारवरणयरे।
आहुट्ठयकोडीओ, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(गीतिका छन्द)

वरदत्त और वरंग साहब, और सायरदत्त जी।
इन आदि साड़े तीन कोडी, मुनी हर दुख सत्त जी।

तारवर नगर समीपतें वसु, कर्म दहि शिवपद लयौ।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धार हम पूजन ठयौ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवरदत्त–अनंगकुमारसायरदत्तादिपंचाशल्लक्षकोटित्रयमुनीनां निर्वाणास्पदश्रीतारंगासिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

(गाथा)

णेमिसामि पज्जण्णो, सम्बुकुमारो तहेव अणिरुद्धो।
बाहत्तरिकोडीओ, उज्जंते सत्तसया सिद्धा॥

(गीतिका)

श्रीनेमिनाथ प्रदुम्नजी अरु, सम्बुकुवर दयालजी।
अनुरुद्ध मुनि इत्यादि जे, षट–कायके रखपालजी॥
सातसै बहत्तर कोडि मुनि, गिरनारतें शिवपद लयौ।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धारि हम पूजन ठयौ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ–प्रद्युम्न–शंबूकुमार–अनुरुद्धादिमुनीनां सप्तशतकोत्तर-द्वासप्तकोटिसंख्यानां श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

(गाथा)

रामसुवा वेण्णि जणा, लाडणरिंदाण पंच कोडीओ।
पावागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(चौपाई)

जुगल रामसुत कर्मनि घात, लाड देस नृप आदि विख्यात।
पांच कोडि पावागिर सीस, मुक्ति गए वन्दौं तिन ईस॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीरामचन्द्रस्य लाड़नरेन्द्रपुत्रद्वयादिमुनीनां पंचकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पद श्रीपावागढ़सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

पंडुसुआ तिण्णिजणा, दविडणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
सेत्तुंजयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(छन्द–मात्रा २०)

पांडु सुत तीन नृप देश द्राविड़ सो तनै।
आदि वसु कोडि मुनि तारन भनै॥

सीस सेतुं जयगिरितें परमपद लयौ।
तिनहि हम मन वचनकर सु पूजन ठयौ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीयुधिष्ठिर–भीम–अर्जुनादिमुनीनां वसुकोटिप्रमितानां निर्वाणास्पद श्रीशत्रुंजयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

(गाथा)

संते जे बलभद्दा, जदुबणरिंदाण अट्ठकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(छन्द–मात्रा २०)

सात बलभद्र अरु नृपति जदुवंशिए।
आदि वसु कोडि मुनि करम विध्वंसए॥
सीस जगपंथ गिरितें परम पद लयौ।
तिनहि हम मन वचन काय कर सिर नयौ॥५॥

ॐ ह्रीं बलभद्रादिवसुकोटिप्रमितमुनीनां श्री गजपंथसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० ॥५॥

(गाथा)

राम हणू सुग्गीओ, गवयगवाक्खो य णीलमहाणीलो।
णवणवदीकोडीओ, तुंगीगिरिणिव्वुदे वंदे॥

(ढार भरथरी की)

राम हनू सुग्रीवजी, अरु गवय गवख्य नल अवर महानील जी।
इन आदिक दक्ष, ते गुरु पूजौं भावसों जी, निन्यानवे कोडीऊ॥
तुंगीगिरि शिवपद लेइऊ, तिनको कर जोडी, ते गुरु पूजौं भावसों जी॥६॥

ॐ ह्रीं राम–हनुमन्तकुमार–सुग्रीव–सुडील–गव–गवाक्ष नील–महानील–कुमारादि नवनवतिकोटिप्रमितमुनीनां श्रीमांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्व० ॥६॥

(गाथा)

णंगाणंगकुमारा, कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया।
सुवणागिरिवरसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(चौपाई)

नंगानंग कुवर जुग भास, पाँच कोडि अरु लाख पचास।
सिवनागिरि चढ़ि लहि भवतीर, तिनहिं नमन हम करत सुवीर॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीनंगानंगकुमारादिसार्द्धपंचकोटिमुनीनां श्रीसोनागिरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं नि० ॥७॥

(गाथा)

दुहमुहरायस्य सुवा, कोडीपंचद्धमुणिवरा सहिया।
रेवाउहयतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(चौपाई)

दसमुख राय तने सुत और, साड़े पांच कोडि मुनि जोर।
रेवानदी उभय तट पाय, मुक्ति गए बन्दौं सिर नाय॥८॥

ॐ ह्रीं श्री रावणपुत्रा दिसार्द्धपंचकोटिप्रमितानांमुनीनां निर्वाणास्पद श्रीरेवारोधेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

(गाथा)

रेवाणइए तीरे, पच्छिमभायम्मि सिद्धवरकूडे।
दो चक्की दह कप्पे, आहुट्ठयकोडिणिव्वुदे वंदे॥

(ढार 'ते साधु मेरे उर बसो')

रेवानदी तट भाग पश्चिम, सिद्धवर तहँ कूट।
दो चक्रवर्ति अनंग[१] दस, तहँते करम अरि छूट॥
इन आदि साड़े तीन कोडि, मुनीश शिवपद पाय।
जल आदि अर्घ बनाय तिन, उर धार मंगल गाय॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीचक्रवर्तिद्वयकामदेवदशकादिसार्द्धत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यो रेवानदीपश्चिमदिग्भागस्थसिद्धवरकूटसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

(गाथा)

वडवाणीवरणयरे, दक्खिणभायम्मि चूलगिरिसिहरे।
इंदजीद कुंभयणो, णिव्वाणगया णमो तसिं॥

१. कामदेव।

(चौपाई)

बडवानी बड़नयर सुहाई, दक्षिण भाग चूलगिरि गाई।
इन्द्रजीत घटकरन[१] तहाँतें, मुकति गए हम नमत यहांतें।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रजीतकुम्भकर्णयोनिर्वाणास्पदेभ्यो बड़नगरबड़वानीग्रामयोदक्षिण-दिग्भास्य चूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

(गाथा)

पावागिरिवरसिहरे, सुवण्णभद्दाइमुणिवरा चउरो।
चलणाणईतडग्गे, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(गीतिका छन्द)

वरनगर निकट उतंग परवत, नाम पावागिरि परो।
ताके समीप सु नदी चेलना, नाम तट ताको धरो।।
वर ध्यान मुनिवर चार सुवरन,—भद्र आदि महान जो।
लहि मुक्तिथान अनंत सुख, तिनकों त्रिकाल प्रनाम जो।।११।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णभद्रादिचतुर्णां मुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यः पावागढ़शिखरेभ्योऽथ-वाचेलनानदीतटेभ्यः सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

(गाथा)

फलहोडीवरगामे, पच्छिमभायम्मि दोणगिरिसिहरे।
गुरुदत्ताइमुणिंदा, णिव्वाणगया णमो तेसिं।।

(ढाल परमादी की)

फलहोड़ी वर ग्राम, पश्चिम दिशिके माहीं।
दोना गिरिवर नाम, पर्वतके सिर ताहीं।।
गुरुदत्तादि मुनीश, पंचमगति तहँ पाई।
तिनि मुनीकों कर जोर, पूजत अर्घ बनाई।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीगुरुदत्तादिमुनीनां निर्वाणास्पद श्रीफलहोड़ीबड़ग्रामपश्चिम-दिग्गभागस्थदोणगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

---

१. कुंभकर्ण।

(गाथा)

णायकुमारमुणिंदो, वालि महावालि चेव अज्झेया।
अट्ठावयगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(ढाल परमादी की)

नागकुमार मुनीन्द व्याल महाव्यालजी।
छेद अभेद रिषिंद[१], तिन गुन–माल सु धार जी॥
गिरि कैलाश महान, जु शिखरतें परनी।
शिवरमनी सुखकार वंदत तिन नित करनी॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीबाल-महाबल-नागकुमारादिमुनीनां श्रीकैलाशसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१३॥

(गाथा)

अच्चलपुरवरणयरे, ईसाणे भाए मेढगिरिसिहरे।
आहुट्ठयकोडीओ[२] णिगव्वाणगया णमो तेसिं॥

(छन्द पद्धरी)

अचलापुरकी दिशि है ईसान, गिरि मेरुशिखर धर परम ध्यान।
आहूठकोडि[३] मुनि मोक्ष पाय, तिनकों त्रिकाल हम शीश नाय॥१४॥

ॐ ह्रीं सार्द्धत्रयकोटिमुनीनां निर्वाणास्पदेभ्यो अचलापुरग्रामस्य ईशानदिग्भागस्थ श्रीमुक्तागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥

(गाथा)

वंसत्थलवरणियरे, पच्छिमभायम्मि कुंथुगिरिसिहरे।
कुलदेसभूषणमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(ढार जोगीराइसा की)

वनसस्थलपुर निकट मनोहर, पच्छिम भाग दिशामें।
नाम कुंथगिरि शिखर तहाँ वर, करम कुलाचल भाने॥

---

१. ऋषियों में प्रधान।  २–३. साढे तीन करोड़।

कूलभूषन दिशभूषन स्वामी, परम दिगम्बर धारी।
जोग निरोध परमपद पायो, तिनहिं प्रनाम हमारी॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री कुलभूषण–देशभूषणमुनीनां निर्वाणास्पदवंशस्थलगिरिपश्चिम-दिग्भागस्थकुंथलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१५॥

(गाथा)

जसहररायस्स सुआ, पंचसयाइं कलिंगदेसम्मि।
कोडिसिलाकोडिमुणी, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(सुन्दरी छन्द)

नृप जशोधरके सुत पाँचसै, सरस देश कलिंग विषैं लसै।
रुचिर कोटिशिला मुनि कोटिजे, मुक्ति गए तिन्हें कर जोड़जे॥१६॥

ॐ ह्रीं यशोधरपुत्रस्य कलिङ्गदेशीय पञ्चशतकभूपत्यादिकोटिप्रमितमुनीनां च निर्वाणास्पदकोटिशिलासिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१६॥

(गाथा)

पासस्स समवसरणे, सहिया वरदत्त मुणिवरा पंच।
रिस्सिंदेगिरिसिहरे, णिव्वाणगया णमो तेसिं॥

(अडिल्ल)

समोसरण वर सहित, पार्श्वजिनदेव जी।
रेसंदीगिरि आए, पर्वत तेवजी॥
श्रीवरदत्त आदि मुनिराज तहाँ गये।
निर्वानक ते साध, पूज त्रय जग यहे॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीवरदत्तादिपञ्चऋषीश्वराणां निर्वाणास्पद श्री रसनादेगिरि (नयनागिरि) सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१७॥

(चौपाई)

निःवृति जीवन जेह प्रमान, चतुरवीस जिन आदि बखान।
दौसे साड़े चौदा कोड़ि, द्वादश शतक इक्यासी जोड़ि॥१८॥

और असंख्य परम ऋषिराज, लोकशिखर लहि तजि जग काज।
इस ही भरतक्षेत्रतें वीर, तिनहिं चितारि जजत हम धीर॥१९॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरादिद्वादशशतैकाशीत्युत्तरद्विशतसार्धचतुर्दशकोटिमुख्य-मुनीनामन्येषां चासंख्यातामुनिवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१८॥

(सुन्दरी छन्द)

सरस गाथनके अनुसार जी, परम महा लघु वरननकार की।
अवर जिन शासन अनुसार जे, मुनि समूह जजौं उर धार जे॥२०॥

(दोहा)

पाटलिपुरके निकटतें, सेठ सुदर्शन सार।
पायो अविचल ठाम जहँ, सुख अनंत अविकार॥२१॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनश्रेष्ठिनः निर्वाणास्पदपाटलिपुत्रस्थारामसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१९॥

(अडिल्ल)

जलगत थलगत सरित, उदधिगत जानिए।
परवतगत सिद्धनिके, थोक प्रमानिए॥
कुल गिरिवर गत नाभ, कुधर गत जीतए।
कंचनगिरि गत जे, शिवलोक विषै ठए॥२२॥

कुन्डद्रहनि गत, वन उपवन गत सार ये।
गिरि गर्भनतें गत भव, एक सिधारए॥
सब नरथलतें[1], शिवपद पायो सार जू।
सिद्धसमूह चितार जजों, उर धारजू॥२३॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वक्षेत्रसम्बन्ध्यनेकमुनीवराणां सिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२०॥

१ मनुष्य लोकके।

# अतिशयक्षेत्र पूजा

(गाथा)

पासं तह अहिणंदण, णायद्दहि मंगलाउरे वंदे।
अस्सारम्मे पट्टणि, मुणिसुव्वओ तहेव वंदामि॥

(गीतिका छन्द)

श्रीपार्श्वनाथ जिनेश कौ जिमि, त्योंहि अभिनन्दनहिं को।
आयो समवसृत मगलापुर, शोभ सो कवि कहिय को॥
तातें उभै जिन मंगलापुर, बंदि मन वच तन तहाँ।
आशारमे पट्टन विषै, समशरन मुनिसुव्रत जहाँ॥१॥

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथाभिनन्दनयोः समवशरणास्पदमंगलापुरक्षेत्राय मुनिसुव्रतस्य समवसरणास्पदाशारम्यपट्टनक्षेत्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

(गाथा)

बाहूबलि तह बन्दमि, पोयणपुरहत्थिणापुरं वंदे।
संती कुन्थुव अरिहो, वाणारसिए सुपासपासं च॥

(ढाल—सीमंधरजी की वंदना की)

पोदनपुर बाहूबली बन्दामी हो, शांति कुन्थु अरनाथ।
हस्तिनागपुर तीन जिन बंदामी हो, अष्टांगै नय माथ॥
पुनि नगर बनारस विषैं हो, जिन पारस और सुपार्श्वजी।
बदहु त्रिविधि त्रिकाल भव हो, हरहु पीर कृपालजी॥
भगवान ईश्वर सुगत विष्णू, श्रीजिन विपुल अपार जी।
जिन नाम इन्द्र धरनेन्द्र चक्री, भक्ती करहिं महान जी॥२॥

ॐ ह्रीं बाहुबलीचरणाश्रितपोदनपुराय, शांतिकुन्थुअरहचरणस्पर्शितहस्तिनागपुराय, सुपार्श्वपार्श्वपदाश्रितवाराणसीक्षेत्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

(गाथा)

महुराए अहिछित्ते, वीरं पासं तहेव वंदामि।
जंबुमुणिंदो वंदे, णिव्वुइपत्तोवि जंबुवणगहणे॥

(पद्धरी छन्द)

मथुरा अहिक्षेत्र महाविशाल, महावीर पार्श्व बन्दों त्रिकाल।
जामुनके घन[1] तहँ वन सु ठान, शिव पाय जम्बु मुनीवर प्रमान।।३।।

ॐ ह्रीं पार्श्वनाथमहावीरचरणस्पर्शितमथुराहिक्षेत्राभ्यां जम्बूनाम्नोऽन्तिमकेवलिनो निर्वाणास्पदक्षेत्राय मथुरानिकटे यमुनावनाय च अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

(गाथा)

पंचकल्लाणठाणइं, जाणवि सँजादमच्चलोयम्मि।
मणवयणकायसुद्धी, सव्वे सिरसा णमंस्सामि।।

(चौपाई)

इस वर मनुष्य लोकके माहि, पंच कल्यान ठाम जे पाहिं।
सर्व तीर्थ मन वच तन ध्याय, ते थल पूजौं अर्घ बनाय।।४।।

ॐ ह्रीं अर्धद्वितीयद्वीपेषु सप्तत्युरशतार्यक्षेत्रेषु यानि यानि पंचकल्याणक संयुक्त स्थानानि तेभ्यः सर्वभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

(गाथा)

अग्गलदेवं वंदमि, वरणयरे णियडकुन्डली वंदे।
पासं सिवपुरि वंदामि, होलगिरि संखदेवम्मि।।

(भुजंगी छन्द)

वरनगर तीऊन कुन्डन विषै,
अग्गलदेव श्री आदि देवान के नाथ हैं।
तिनहिं पग बंदि अरु पार्श्वजी बंदि पुनि,
शिवपुर विषैं वंदि जोर हाथ हैं।।
और होल्लयगिरि नाम पर्वत जहाँ,
संखदेवम्मि कहिए जगन्नाथ हैं।

१. सघन, बहुत से।

शंख वर चिन्ह संजुक्ति श्रीनेमिप्रभु,
तिनहि पग बंदिकर जोर जुग हाथ हैं।।

ॐ ह्रीं आदिनाथपदांकितवरनगरक्षेत्राय, पार्श्वनाथपदाश्रितशिवपुरक्षेत्राय, शंखचिन्हसंयुक्त नेमिनाथचरणस्पर्शितहोलागिरयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

(गाथा)

गोमटदेवं वंदमि, पंचसयं धणुहदेहउच्चतं।
देवा कुणंति बुट्ठी, केसरिकुसुमाण तस्स उबरिम्मि।।

(चौपाई)

गोमटदेव शरीर उँचाई, धनुष पांचसै, सुर बरसाई[1]।
ऊपर केशर कुसुम महान, वन्दों तिनहिं जोर जुग पान।।६।।

ॐ ह्रीं पंचविंशत्युत्तरपंचशतधनुःकायाविराजितगोमटदेवपदाश्रितगोम्मटक्षेत्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

(गाथा)

णिव्वाणठाण जाणिवि, अइसयठाणाणि अइसए सहिया।
संजादमिच्चलोए, सव्वे सिरसा णमंसामि।।

(सोरठा)

जे निर्वान सु ठाम, अतिशय ठाम मनोग जे।
पुनि अतिशय जुत ठाम, मध्य लोक सब तीर्थ नमि।।७।।

ॐ ह्रीं अस्मिन् मर्त्यलोके यानि निर्वाणक्षेत्राणि अतिशयक्षेत्राणि च संजातानितेभ्यः सर्वेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

❁

१. देवताओं ने केशर की वर्षा की।

# पाँच प्रकार के केवलियों की अर्चना

(हरिगीत)

सर्वज्ञ विश्व पदार्थ ज्ञायक, समोशरन जो अवनि तैं।
चउकाल अथवा इन्द्र गनधर, सभानायक प्रसन तैं॥
उचरंत दिव्यध्वनि अनक्षर, आदि अतिशय जहँ घने।
सातिशय[1] केवलि श्रीजिनेश्वर, तिनहिं हम पूजन ठने॥८॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसुखवीर्याद्यनन्तगुणमण्डितेभ्यः सातिशयकेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

(ढाल—जोगीरासा की)

थिति उतकृष्टी कोटि पूरवमें, आठ बरस घट भाई।
बंध प्रकृति जे सर्व नाशि एक, सातावेदनि पाई॥
सत्त प्रकृति पच्चासी की भनि, उदय बयालिस धारी।
लेश्या शुक्ल ध्यान पद त्रितिए, परमानंद पदकारी॥६॥

आठ लाख पुनि सहस अठानवे, पाँचसै दोय बखाने।
हैं उत्कृष्ट सजोगकेवली, तेरहवें गुन—ठाने॥

जहँ नव क्षायक लब्धि अधिक हो, दोष अठारह भाने।
सुरकृत गंधकुटी निर अतिशय;—केवलि जिन सो ठाने॥१०॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनाद्यनन्तगुणमण्डितनिरतिशयकेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति० ॥९॥

(गीतिका छन्द)

सुरनर पशू करकें तथा, स्वयमेव ही प्रापति भयो।
अति घोर वीर महा उपद्रव, जीत केवलि—पद ठयो॥
इक समय में इक बार ही लखि, सकल लोक अलोकने।
उपसर्गकेवलि चरम तन धर, तिनहि हम पूजन ठने॥११॥

ॐ ह्रीं उपसर्गप्राप्तये केवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

---

१. अतिशय सहित।

(गीतिका)

उपसर्ग दुद्धर पाय अन्तमुहूर्तमें कर्म घातिया।
कर अंत केवलज्ञान ले पुनि, शेष कर्म विनाशिया॥
लहि मुक्ति ज्ञानै अंतकृत—केवलि परमगुरु गुन भजैं।
जे एक तीर्थंकर समय जो होय दस दर्शन जजैं॥१२॥

ॐ ह्रीं अन्तकृत्केवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

(गीतिका छन्द)

जे ज्ञान पंचम धारि, पै उपदेश प्रभु नाहीं करें।
ते मूककेवलि जानि तिन, पूजन सकल भव अघ हरें॥
यह कथन 'सामायिक सु पाटी' देख टीकाके विषैं।
पुनि और जैन विशेष श्रुत कर, ठीक बुधि इहठा लिखैं॥१३॥

ॐ ह्रीं मूककेवलिजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

## जयमाला

(दोहा)

पंच परम जिन—गिरा[१] रत्नत्रय वृष येहि।
आचारादिक मुनि सबै, इन ही को प्रणमेहि॥१॥

ये पद सर्व प्रकार ही, पूजित लोक मँझार।
इनका विनय विचार कर, पुनि जयमाल उचार॥२॥

(पद्धरी छन्द)

प्रनमामि परम गुरु नगनवंत, जे मूलोत्तर गुन धरन संत।
बावीस परीषह सहत शूर, गिरि शिर तरुतल सर तीर पूर॥३॥

लखि जगत अथिर निजनिंद मूल, सुख दुख तृन धन अरि मित्र तूल[२]।
जिन आतम लीन विरक्त देह, जे मुक्ति-वधू उर धर सनेह॥४॥

१. जिनवाणी। २. तुल्य-समान।

जे दो विधि संजम धरन धीर, जे द्वादश तप तप तपत वीर।
जे त्रोदश विधि चारित्र धारि, ते साधु नमों उर गुन चितारि॥५॥

जे मास दोय चव षट प्रजंत[1], कचलौच करें निज कर महन्त।
जिनके व्रत मंत्रनतै सु न्हान, जे धर्म शुक्ल ध्यावत सु ध्यान॥६॥

जे शास्त्र कमंडलु मोरपिच्छ, महा कोमल तार खुलीर तुच्छ[2]।
थुरमोली[3] शरद लगे न जास, संजम कारन राखैं जु पास॥७॥

जे षट रस त्यागत लै अहार, उपशांत क्षुधा वृष काज सार।
षट आवश्यक संजम सुपक्ष, वैयावृत पालन प्रान रक्ष॥८॥

सिर नामि प्रजंतन द्वार जेह, नहिं करत प्रवेश गृहस्थ गेह।
जे अन्तराय मल दोष टार, इक बार असन पख मासकार॥९॥

जे कारन पंच न असन लेत, बलवृद्धि न काज न स्वाद हेत।
तनवर्द्धन काज न देह क्रांति, नहि वर्द्धन आउ सदा जु शान्ति॥१०॥

लखि अति उपसर्ग दया अभाव, अति रोग विषै नहिं असन चाव।
ब्रह्मचर्य भाव संन्यास माँहि, इन कारन लघु भोजन कराहिं॥११॥

जे वीरासन खड्गासनीय, धनुषासन वज्रासन मुनीय।
गोदोहन पदमासन सु वीर, नाना विधि आसन धरन धीर॥१२॥

जिनके पन विधि स्वाध्याय चित्त, स्वाध्याय वाचना माँहि नित।
जे चार सुधाता पायवेश, स्वाध्याय करें सब ही मुनेश॥१३॥

कर पग शुचिकर जलतें प्रक्षाल, धर पदमासन कर नमस्कार।
जे शास्त्र उच्चार करें हमेस, मरजादा पूर्व सबै मुनेस॥१४॥

जे अवधि तुरिय[4] धर चरम[5] ग्यान इन धारक मुनि कहिए महान।
जै राजऋषीश्वर ये चित्तार, अक्षीनविक्रियाऋद्धि धार॥१५॥

जे बुद्धि–औषधी ऋद्धिवंत, ते परम ऋषीश्वर परम संत।
जे देव ऋषीश्वर गगनगामि, जे परम ऋषी केवलि प्रमान॥१६॥

---

१. पर्यत तक। २. तंतु जुदे जुदे और हलके। ३. कम मूल्य की।
४. चौथा मनःपर्य्ययज्ञान। ५. केवलज्ञान।

दीपक चिरकाल तने जु सोय, मन-बल पुनि ज्ञान विशेष होय।
संघनन वर[1] वैराग भाव, एकाबिहारि मुनि गुन लखाव॥१७॥

जे द्वादशांग श्रुतज्ञान पाय, ता बल जुग श्रेणि[2] चढ़े सु धाय।
जे चार ग्यानधर पन सुजेहिं, गुरु निकट न दीक्षा सीख देहिं॥१८॥

प्राचित नामा तप माहि जेहिं गुरु कहिं ते माफिक दंड लेहिं।
जे नाना विधि के धारि नेम, ध्यावत अध्यातम ध्यान जेम॥१९॥

जे कारन संघ कदाच साध, द्वादश योजन ताईं न बाध।
जावे जो वरषाकाल माहिं, तो दोष लगे तिनको जु नाहिं॥२०॥

जे दोष विशेष लग ज्ञान हानि प्रायश्चित कर शुद्धि न ताही जानि।
तो संघबाह्य मुनि काढ़ि देहिं, ज्यों नागबेलि दल गलत तेहिं॥२१॥

जे तीन वरन[3] धन तन निरोग, वासी सुदेस निकषाय जोग।
इन्द्री सुपूर्ण पुनि पूर्ण देह, दीक्षा धर वर नर चिन्ह येह॥२२॥

जिनके जिन—वचनन सों उछाहि, सुनिए पुनि धारन गृहन ताहि।
सुविचारत तत्त्वस्वरूप भाव, जे दीक्षा धर नर गुन लखाव॥२३॥

कहुँ अवधिज्ञान बिन तुरिय ज्ञान, कहुँ मनपरजय विन अवधि जान।
मनपरजय अवधि विना ऋषीस, लहि केवलज्ञान समस्त दीस॥२४॥

जे चढ़ि अजोग गुन थल विशाल, लघु पंचाक्षर उच्चरन काल।
लागे जो ता उत काल वास तहाँ तिष्टि सकल करि कर्म नास॥२५॥

जे पंडित पंडित—मरन[4] पाय, इक समय विषैं शिवलोक जाय।
ते गुरु गुन उरधर 'जगतराय' प्रणमैं त्रिकाल नित शीष नाय॥२६॥

(कवित्त)

रत्नत्रय वृष क्षमा धीर्य धर, घने शास्त्र पढ़ि पायो पार।
कुलवर तन मनोग बहु दिनके, दीक्षित मोक्षभिलाषी सार॥

---

१. जिनका संहनन उत्तम होवे। २. उपशम और क्षपक श्रेणी।
३. ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य। ४. समाधिमरण।

ज्ञान विराग भावना चउ जुत, इत्यादिक गुन लखि गनधार।
तिनको आचारजपद दे सब, संघनमें अरु अज्ञाकार॥२७॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणमंडितऋषीश्वरेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(गाथा)

जो जण पढइ तियालं, णिव्वुइकंडंपि भावसुद्धीए।
भुंजदि णरसुरसुक्खं, पच्छा सो लहइ णिव्वाणं॥

(सुन्दरी छन्द)

पढ़हिं जे तिरकाल सुचाव सों, मुक्तिकांड मनोहर भाव सों।
भुगत सुरनरके सुख तापिछै लहें मोक्षपुरी सुख तें अछै[1]॥२८॥

॥ इत्याशीर्वादः ॥

(गीतिका छन्द)

श्रुत देव गुरु जिनबिम्ब जिनग्रह, द्रव्य तीरथ जे भने।
जिनग्रेह भूथल पंचमंगल, क्षेत्र तीरथ ये गने॥
कल्यानकाल अरु सिद्धचक्र, व्रतादि तीरथकाल ये।
जे रतनत्रय हैं भाव-तीरथ, ताहि नावत भाल[2] ये॥२९॥

(सोरठा)

द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव तीर्थ ये चार हैं।
शिथिलाचारहि टाल, धर्मरूप इन थल रहो॥३०॥
इन थल पुण्य जु बंध इमि, जिमि सुवृष्टिको नाज।
अघ इन थल बंधन कठिन, वज्रलेप न इलाज॥३१॥

(सखी छन्द)

निर्वान गिरा नहिं जानी, यह शारद ना पहचानी।
ता विन शब्दारथ नाहीं, निशि दीप विना गृह माहीं॥३२॥

॥ *इति निर्वाणभूमि समुच्चय पूजा समाप्त* ॥

१. अक्षय। २. मस्तक।

# स्तुति

(दोहा)

प्रणमि सुगुरु अरहंतपद, प्रणमि सिद्धवर देव।
आचारज उवझाय नमि, प्रणमि साधु पर सेव॥१॥

(सुनयनानंद छन्द)

इन्द्र धरणेन्द्र नरइन्द्र जग ईशके,
होय अनुचर धरै छत्रत्रय सीसके।
पंचकल्यान लहि घातिया जय लए,
गणधरादिक जजैं परम हर्षित भए॥२॥

ज्ञान दर्शन जुगल ये अनन्ते महा,
ध्यान वर शुकल सो अनन्ते सुख लहा।
बीज सो अनन्त लहते परमदेव जी,
द्यो प्रभु श्रेष्ठ मंगल हमें सेवजी॥३॥

जनम जर मरन ये प्रबल त्रय नग्र ते,
ध्यानरूपी अगिनबान कर दग्ध ते।
सास्वता सिद्धपद पाय गन सिद्ध ते,
द्यो हमें पंचमों ज्ञान परिसिद्ध जे॥४॥

ज्ञान दर्शन तथा बीर्ज चारित्र ये,
पंच आचारके धार आचार्य जे।
येहि पंचाग्निके साधवाले तपी,
संघ मुनि ता विषै परम नायक जपी॥५॥

सम्यक्त रत्नादि गंभीर गुन धार है,
अंग द्वादश श्रुतिज्ञान–दधि पार।
सूर होते शिवगरूप लक्ष्मी यदा,
द्यो हमें सरस्वती अन्त रहिते सदा॥६॥

घोर अति रौद्र दुख थान भयानक दिखैं,
जगतरूपीव जड–अरण[1] तिहिके विषैं।
वदन विकराल नख कठिन तीक्षन दिखैं,
पापरूपी इसा सिंह जिहिके विषैं॥७॥

मुक्तिरूपी सुगम पंथते भ्रष्ट है,
मोह मिथ्या कुतप सेय अति कष्ट है।
इसे भवि जीव शिवमार्ग परकाशते,
द्यो हमें श्रेष्ठ पाठक पठन पाठते॥८॥

उग्र तप चरनकर अंग सोषित भया,
धर्म अरु शुकलजुग ध्यानमाहीं ठया।
भेद षटद्रव्य स्वरूप त्रयकाल जे,
ज्ञान ध्यावत सु निज आतमलाल जे॥९॥

जीव षटकाय रखपाल समभाव ते,
करम वन दहन लहि परमपद ध्यावते।
वीस वसु मूलगुन धार ऋषिदेवजी,
द्यो गुरू श्रेष्ठि मंगल हमें सेवजी॥१०॥

(धत्ता)

ये ही परम गुरू परमेष्ठी, ये ही सकल हितू सुखकारं।
ये ही उत्तम पुरुष जगतमें, ये ही मानवाँछित दातारं॥
ये ही मंगलमय मंगल कर, ये ही पंचमगति करतारं।
इनके पदको भव भव शरनं, मागो परम जगतमें सारं॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(अडिल्ल)

इहि प्रकार यह थुति है ताके काजकों,
पंच परम गुरु वंदौ नित प्रति साजकों।

---

१. जंगल।

कठिन जगत बनवेल सु छेद लहाय जी,
कर्म काठ दहि मुक्ति परमपद पाय जी।।१२।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अरुहा द्धाइरिया, उवझाया साहु पंचपरमेट्ठी।
एयाण णमुक्कारो, भवे भवे मम सुहं दिंतु।।

(दोहा)

दोष रहित अरहन्त गुण, संवतसरके अंक[1]।
पौष भ्रमरको त्रोदशी[2], पूरन पढौ निशंक।।१३।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

(१०८ जाप देना चाहिए)

(दोहा)

जो 'निर्वाणक विधि' सुने, तीरथ फल हो तास।
कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी, भयो उदोत प्रकाश।।१४।।

मन वच क्रम कर पूजहीं, अरु उपदेशें धर्म।
ते नर तीरथको लहें, दास करे तिहि कर्म।।१५।।

।। इति निर्वाणविधान ।।

१—संवत् १८४६, २—पौष वदी १३

कविवर भैया भगवतीदासजी रचित

# निर्वाणकांड भाषा

(दोहा)

वीतराग वन्दौ सदा, भावसहित शिर नाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय॥१॥

(चौपाई १६ मात्रा)

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुर नामि।
नेमिनाथस्वामि गिरनार, वन्दौं भाव-भगति उर धार॥२॥

चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरी स्वामी महावीर।
शिखरसमेद जिनेसुर वीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥३॥

वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द्र, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठ कोडि[1], वन्दौं भावसहित कर जोड़ि॥४॥

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
शम्बु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुध आदि नमूँ तसु पाय॥५॥

रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि वन्दौं निरधार॥६॥

पाण्डव तीन द्रविड़-राजान, आठ कोडि मुनि मुकति पयान।
श्रीशत्रुंजयगिरि के शीश, भावसहित वन्दौं निश-दीस॥७॥

जे बलिभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहि भए।
श्रीगजपन्थशिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहूँ काल॥८॥

राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुङ्गीगिरि वन्दौं धरि ध्यान॥९॥

१. एक करोड़।

नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्द्धप्रमाण।
मुक्ति गए सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईश॥१०॥

रावण के सुत आदि कुमार, मुक्ति गए रेवा-तट सार।
कोड़ि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास॥११॥

रेवानदी सिद्धवरकूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वन्दौं भवपार॥१२॥

बड़वानी बड़नगर सुचंग, दक्षिण दिश गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव-सागर-तर्ण॥१३॥

सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरिवर शिखरमँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गए वन्दौं नित तास॥१४॥

फलहोडी बडग्राम अनूप, पश्चिमदिशा द्रोणगिरिरूप।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गए बन्दौं नित तहाँ॥१५॥

बालि महाबालि मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्तिमँझार, ते वन्दौं नित सुरत सँभार॥१६॥

अचलापुर की दिशा ईशान, तहाँ मेंढगिरि नाम प्रधान।
साढे तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय॥१७॥

वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम॥१८॥

दसरथराजा के सुत कहे, देश कलिंग पांचसौ लहे।
कोटि शिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोरि जुगपान॥१९॥

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनन्द, रेसन्दीगिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज॥२०॥

मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामीजी निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल॥२१॥

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजे तहाँ।
मन वच कायसहित सिर नाय, वन्दन करहिं भविक गुणगाय॥२२॥

संवत सतरहसौ इकताल, अश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दन करहि त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल॥२३॥

॥ इति निर्वाणकांड भाषा॥

સહજ ચિદાનંદ.